दो अमर कहानियां



लू शुन

दो अमर कहानियां

- एक पागल की डायरी
- आ Q की सच्ची कहानी

लू शुन

परिकल्पना
3/274,विश्वासखण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ-226010

लू शुन और उनकी इन कहानियों के बारे में

महान विचारक, राजनीतिक टिप्पणीकार और आधुनिक चीनी साहित्य के जनक *लू शुन* को चीन की सांस्कृतिक क्रान्ति का प्रधान सेनापति कहा जाता है।

लू शुन ने चीन के ठहरे हुए, सड़ांध भरे, अंधकारमय समाज की हर बुराई का निर्भीक पर्दाफाश किया, सामन्ती और साम्राज्यवादी उत्पीड़न के हर रूप और परिणाम को उजागर किया और अपनी जनता को उठ खड़ा होने की, लड़ने की और विजय के स्वप्न देखने की शिक्षा दी।

'पागल की डायरी' आधुनिक चीनी साहित्य के इतिहास में पहली छोटी कहानी मानी जाती है। **'नया नौजवान'** पत्रिका के मई, 1918 के अंक में जब यह कहानी प्रकाशित हुई तो इसे पुराने चीन के खिलाफ लू शुन द्वारा छेड़े जाने वाले *"युद्ध की घोषणा"* की संज्ञा दी गई। **'आ Q की सच्ची कहानी'** उनकी दूसरी विश्व-प्रसिद्ध कहानी है जो पुराने अंधकारपूर्ण समाज के उस नग्न-निर्मम यथार्थ का पर्दाफाश करते हुए उस पर तीक्ष्ण प्रहार करती है, जो बहुतेरे लोगों को आदमी भी नहीं बने रहने देता।

लू शुन का जीवन और कृतित्व हमें हर तरह के अवसरवाद और कायर दोमुंहेपन से लड़ने की और उसकी हर कीमत चुकाने के लिए तैयार रहने की शिक्षा देता है। मुक्ति-संघर्ष के एक मोर्चे के रूप में साहित्य को देखना "महान साहित्य" के सृजन में बाधा बनता है, लू शुन का कृतित्व इस धारणा का साकार निषेध है।

लखनऊ — **कात्यायनी**

15 जनवरी, 2000

अनुक्रम

पागल की डायरी

दो भाई थे। उनके नाम नहीं बताऊंगा। मेरे स्कूल के दिनों के साथी थे। दोनों से ही अच्छा मेल-जोल था। परन्तु कई वर्ष तक मेल-मुलाकात न हो सकी और संपर्क टूट गया। कुछ महीने पहले सुना कि उनमें से एक बहुत बीमार है। मैं अपने गांव लौट रहा था, सोचा रास्ते में उन लोगों के यहां भी होता चलूं। उनके घर गया तो एक ही भाई से मुलाकात हुई। उसने बताया कि छोटा भाई बीमार था।

मित्र ने कहा, "तुम्हारे दिल में कितना स्नेह है। हम लोगों का ख्याल कर इतनी दूर से मिलने के लिए आए हो। अब छोटे भाई की तबीयत ठीक है। उसे सरकारी नौकरी मिल गई है, वहीं गया है।" बड़े भाई ने हंसते-हंसते दो मोटी-मोटी जिल्दों में लिखी डायरी मुझे दिखाई और बोला कि अगर कोई इस डायरी को पढ़ ले तो भाई की बीमारी का रहस्य समझ जाएगा और अपने पुराने दोस्त को दिखा देने में हर्ज भी क्या है। मैं डायरी ले आया और उसे पढ़ डाला। समझ गया कि बेचारा नौजवान अजीब आतंक और मानसिक यन्त्रणा से पीड़ित था। लिखावट बहुत उलझी-उलझी और असम्बद्ध थी। कुछ बेसिरपैर के आरोप भी थे। पृष्ठों पर तारीखें नहीं थीं। जगह-जगह स्याही के रंग और लिखावट के अंतर से अनुमान हो सकता था कि ये जब-तब आगे-पीछे लिखी गई चीजें होंगी। कुछ बातें सम्बद्ध भी जान पड़ती थीं और समझ में आ जाती थीं। चिकित्सा-विज्ञान में खोज की दृष्टि से उपयोगी हो सकने वाले कुछ पृष्ठों को मैंने नकल कर लिया।

डायरी की एक भी बेतुकी बात को मैंने बदला नहीं, बस नाम बदल दिए हैं, हालांकि दूर देहात के उन लोगों को जानता भी कौन है। शीर्षक स्वयं लेखक का ही दिया हुआ है। यह दिमाग ठिकाने आ जाने पर ही दिया होगा। मैंने उसे नहीं बदला।

१

आज रात चांद खूब उजला है।

तीस वर्ष हो गए, चांद को नहीं देख पाया। इसलिए आज इस चांदनी में मन में उत्साह उमड़ता जा रहा है। आज अनुभव कर रहा हूं कि बीते तीस वर्ष अंधकार में ही बिता दिए ; परन्तु अब बहुत चौकस रहना होगा। अवश्य कोई बात है। वरना चाओ परिवार का कुत्ता भला दो बार मेरी ओर क्यों घूरता ?

हां, समझता हूं, मेरी आशंका अकारण नहीं है।

२

आज अंधेरी रात है। चांद का कहीं पता नहीं। लक्षण शुभ नहीं हैं। आज सुबह बाहर गया तो बहुत सावधान था। चाओ साहब ने मेरी ओर ऐसे देखा मानो मुझे देखकर डर गए हों, मानो मेरा खून करना चाहते हों। सात-आठ दूसरे लोग भी थे। एक दूसरे से फुसफुसाकर मेरी बात कर रहे थे और मेरी नजर से बचने की कोशिश कर रहे थे। जितने लोग मिले सबका वही हाल था। उनमें जो सबसे डरावना था, मुझे देखते ही दांत निकालकर हंसने लगा। मैं सिर से पांव तक कांप उठा। समझ गया, इन लोगों ने सब तैयारी कर ली है।

मैं डरा नहीं, अपनी राह चलता गया। कुछ बच्चे आगे-आगे जा रहे थे। वे भी मेरी ही बात कर रहे थे। उनकी नजरें चाओ साहब की ही तरह थीं और चेहरे डर से जर्द पड़ गए थे। सोच रहा था,

मैंने इन लड़कों का क्या बिगाड़ा है। ये क्यों मुझसे खफा हैं ? रहा नहीं गया तो मैं पुकार बैठा, "क्यों, क्या बात है ?" मगर तव वे सव भाग गए।

कुछ समझ नहीं पाता कि चाम्रो साहब से मेरा क्या झगड़ा है। राह चलते लोगों का मैंने कव क्या विगाड़ा है ? वस इतना याद है कि बीस वर्ष पहले कू च्यू* साहव की वर्षों पुरानी वही पर मेरा पांव पड़ गया था और कू साहब वहुत नाराज हो गए थे। पर कू का चाम्रो से क्या मतलव ? एक दूसरे को पहचानते भी नहीं। हो सकता है, चाम्रो ने इसके वारे में किसी से सुन लिया हो और मुझसे उसका वदला लेने की ठान ली हो। वह राह चलते लोगों को मेरे विरुद्ध भड़काते रहते हैं ; पर इन वच्चों को इस सवसे क्या मतलव ? ये लोग तो तव पैदा भी नहीं हुए थे। ये लोग मुझे ऐसे घूर-घूर कर क्यों देखते हैं ? मानो डरे हुए हों, मेरा खून कर देने की घात में हों। वहुत घवराहट होती है। क्या करूं ? अजव परेशानी है।

मैं समझता हूं। इन लोगों ने यह सव जरूर अपने मां-वाप से सीख लिया होगा !

३

रात में नींद नहीं आती। विना अच्छी तरह सोचे-विचारे कोई भी वात समझ में नहीं आ सकती।

इन लोगों को देखो — कई लोगों को मजिस्ट्रेट कठघरे में वन्द करवा चुका है ; बहुत से लोग आसपास के अमीर-उमरावों से मार खा चुके हैं ; वहुतों की बीवियों को सरकारी अमले के लोग छीन ले गए हैं ; कइयों के मां-वाप साहूकारों से परेशान होकर गले में फांसी लगाकर आत्महत्या कर चुके हैं। पर इन सव वातों को याद करके भी

---

* कू च्यू का अर्थ है "प्राचीन काल"। लू शुन का इशारा यहां चीन में सामन्ती उत्पीड़न के दीर्घकालीन इतिहास की तरफ है।

इन लोगों की ग्रांखों में कभी इतना खून नहीं उतरा होगा, इन्हें कभी इतना गुस्सा नहीं ग्राया होगा जितना कि कल देखने में ग्राया।

उस ग्रौरत को क्या कहूं? कल गली में ग्रपने लड़के को पीट-पीट कर चीख रही थी, "बदमाश कहीं का! तेरी चमड़ी उधेड़ दूंगी! तेरी बोटी-बोटी काट डालूंगी! तूने मेरा कलेजा जला दिया!" वह बार-बार मेरी तरफ देखने लगती थी। मैं कांप उठा। बड़ी घबराहट हुई। क्रूर चेहरे, लम्बे-लम्बे दांतों वाले लोग हंसने लगे। बुजुर्ग छन झट ग्रागे बढ़ ग्राया ग्रौर मुझे पकड़कर घर ले ग्राया।

छन मुझे घर लिवा लाया। सब लोग ऐसे बन गए मानो पहचानते ही न हों। मैंने उनकी ग्रांखें पहचानीं। उनकी नजरों में भी वही गली के लोगों वाली बात थी। मैं ग्रध्ययन-कक्ष में ग्रा गया तो उन्होंने झट दरवाजा बन्द कर दिया ग्रौर सांकल लगा दी, जैसे मुर्गी या बत्तख को दरबे में बन्द कर दिया गया हो। मैं ग्रौर भी परेशान हो गया।

कुछ दिन पहले की बात है। शिशु-भेड़िया गांव से हमारा एक ग्रसामी फसल के चौपट होने की खबर देने ग्राया था। उसने मेरे बड़े भाई को बताया कि गांव के सब लोगों ने मिलकर देहात के एक बदनाम दिलेर गुण्डे को घेर लिया ग्रौर मार-मार कर उसका काम तमाम कर दिया। कुछ लोगों ने उसका सीना फाड़कर दिल ग्रौर कलेजा निकाल लिया, उन्हें तेल में तला ग्रौर बांटकर खा गए कि उनका भी हौसला बढ़ जाए। मुझसे रहा नहीं गया ग्रौर मैं बोल पड़ा। भैया ग्रौर ग्रसामी दोनों मुझे घूरने लगे। बिलकुल ऐसे ही घूर रहे थे जैसे ग्राज सड़क पर लोगों की नजरें।

यह सब सोचकर एड़ी से चोटी तक सारा बदन सिहर उठता है।

ये लोग ग्रादमखोर हैं, ये मुझे भी खा सकते हैं।

याद ग्राया, वह ग्रौरत कह रही थी, "तेरी बोटी-बोटी काट डालूंगी!" क्रूर चेहरों पर लम्बे दांत निकाले लोग हंस रहे थे, ग्रौर उस ग्रसामी ने जो कहानी सुनाई, . . . ये सब गुप्त संकेत हैं। इन लोगों की बातों में कितना विष भरा है। इनकी हंसी खंजर की धार

की तरह काटती है। इनके ये लम्बे-लम्बे सफेद दांत आदमियों के हाड़-मांस चबा-चबा कर चमक गए हैं। ये सब आदमखोर हैं।

मैं जानता हूं, यद्यपि मैं कोई बुरा आदमी नहीं, पर जब से कू साहब की वही पर मेरा पांव पड़ा है, लोग मेरे पीछे पड़ गए हैं। इन लोगों के मन में ऐसी गांठ पड़ गई है कि मैं कुछ कर ही नहीं सकता। ये लोग किसी से एक बार बिगड़ जाते हैं तो उसे बदमाश समझ लेते हैं। खूब याद है, बड़े भाई मुझे निबंध लिखना सिखाया करते थे। कोई आदमी कितना ही भला रहा हो, यदि मैं उसके दोष दिखा देता तो उन्हें बहुत पसन्द आता था। साथ ही यदि मैं किसी के दोषों पर पर्दा डाल देता तो कह बैठते, "बहुत खूब! यह तुम्हारी नई सूझ है।" इन लोगों के मन की थाह कैसे पा सकता हूं — खासकर जब ये लोग किसी को खा जाने की बात सोच रहे हों।

बहुत गहराई से विचार किए बिना कुछ समझ पाना कठिन है। याद पड़ता है कि आदिम लोग प्रायः नर-मांस खाते थे, पर बिलकुल ठीक याद नहीं पड़ रहा। इस विषय में इतिहास की पुस्तकों में भी खोज करने का यत्न किया, कहीं क्रमबद्ध इतिहास नहीं मिला। "सद्‌गुण और सदाचार" यही शब्द सभी पृष्ठों पर मिलते हैं। नींद किसी तरह नहीं आ रही थी, इसलिए बहुत ध्यान से आधी रात तक पढ़ता रहा। जहां-तहां वास्तविक अभिप्राय समझ में आने लगा। सारी किताब में सब जगह एक ही बात थी, "मनुष्य को खा जाओ"।

पुस्तक में लिखी ये सारी बातें, उस असामी की सारी बातें, मेरी ओर कैसे घूर रही हैं, गूढ़ मुस्कराहट से!

मैं भी तो मनुष्य हूं और ये लोग मुझे खा जाना चाहते हैं!

४

सुबह कुछ देर से चुपचाप बैठा था। छन खाना लेकर कमरे में आया : एक कटोरे में सब्जी थी, दूसरे में भाप से पकाई हुई मछली।

मछली की आंखें पथराई हुई सफेद थीं, मुंह खुला हुआ था, जैसे कोई भूखा आदमखोर मुंह खोले हुए हो। मैं खाने लगा। ग्रास निगलता जा रहा था। नहीं मालूम मछली खा रहा था या नर-मांस। सब उगल डाला।

मैंने छन से कहा, "छन दादा, भैया से कहो इस कोठरी में मेरा दम घुटा जा रहा है, जरा आंगन में टहलूंगा।" छन चुपचाप चला गया। तुरन्त ही लौटकर आया और उसने दरवाजा खोल दिया।

मैं कोठरी में ही बैठा रहा, उठा नहीं। सोच रहा था, ये लोग अब क्या करेंगे? यह तो जानता था कि मुझे हाथ से निकल नहीं जाने देंगे। इतना तो निश्चित था। भैया आहिस्ता-आहिस्ता कदम रखते एक बुजुर्ग को साथ लिए आ पहुंचे। बुड्ढे की खून की प्यासी आंखों में कटार की सी चमक थी। वह मुझसे आंख नहीं मिलाना चाहता था कि कहीं मैं ताड़ न लूं, इसलिए गर्दन झुकाए था। चश्मे के भीतर से कनखियों से मेरी ओर देख लेता था।

"आज तो तुम्हारी तबीयत बहुत अच्छी लग रही है," भैया बोले।

मैंने हामी भरी।

"तुम्हें दिखाने के लिए ही हो साहब को बुलवाया है" भैया ने कहा।

"बहुत अच्छा," मैंने कहा, पर समझ गया कि यह बुड्ढा असल में एक जल्लाद है, जो हकीम बनकर आया है! मेरी नब्ज देखने के बहाने वह मुझे टटोलकर मांस का अनुमान लगा रहा था। इस सेवा के लिए उसे भी मेरे मांस का हिस्सा पाने की आशा थी। इस पर भी मैं डरा नहीं। मैं आदमखोर नहीं हूं, पर उन लोगों से अधिक साहस मुझमें है। मैंने अपनी दोनों कलाइयां आगे बढ़ा दीं, यह सोचकर कि देखूं क्या करता है। बुड्ढा चौकी पर बैठ गया, आंखें मूंदे मेरी नब्ज देखता रहा। कुछ देर सोच में मौन रहा फिर अपनी धूर्त आंखें खोलकर बोला, "अपने विचारों को भटकने मत दो, फिक्र बिलकुल मत करो। कुछ दिनों तक पूरा आराम करो। चैन से रहो, तुम्हारी सेहत बिलकुल ठीक हो जाएगी।"

ग्रपने विचारों को भटकने मत दो! विलकुल फिक्र मत करो! कुछ दिन पूरा ग्राराम करो! चैन से रहो! हां, जब मैं खूब मोटा हो जाऊंगा तो इन्हें खूब मांस मिलेगा। पर मुझे इससे क्या मिलेगा? यह क्या सेहत का ठीक होना है? यह इन सब ग्रादमखोरों का नर-मांस के लिए लालच ग्रौर साथ ही भलमनसाहत का दिखावा है। कायरता के कारण ये लोग तुरत कार्यवाही करने का साहस नहीं कर पाते – यह देखकर हंसी के मारे पेट में बल पड़ने लगते हैं। मेरी हंसी रुक न सकी ग्रौर मैं ठहाका लगाकर हंस पड़ा। खूब मजा ग्राया। मैं जानता था इस हंसी में निर्भीकता ग्रौर सत्यनिष्ठा छिपी है। भैया ग्रौर बूढ़े हकीम के चेहरे पीले पड़ गए। वे लोग मेरी निर्भीकता ग्रौर सत्यनिष्ठा देखकर डर गए।

मैं निडर हूं, साहसी हूं, इसीलिए तो वे लोग मुझे खा जाने के लिए ग्रौर ग्रधिक ग्रातुर हैं, ताकि मेरा दमदार कलेजा खाकर उनका हौसला ग्रौर बढ़ सके। बूढ़ा हकीम उठकर चल दिया। जाते-जाते भैया के कान में कहता गया, "इसे ग्रभी खाना है!" भैया ने सिर झुकाकर हामी भर ली। ग्रब समझ में ग्राया! विकट रहस्य खुल गया। मन को धक्का तो लगा, पर यह तो होना ही था। मुझे मालूम ही था: मेरा ग्रपना ही भाई मुझे खा डालने के षड्यंत्र में शामिल है!

यह ग्रादमखोर मेरा ग्रपना ही बड़ा भाई है!

मैं एक ग्रादमखोर का छोटा भाई हूं!

मुझे दूसरे लोग खा जाएंगे, लेकिन फिर भी मैं एक ग्रादमखोर का छोटा भाई हूं!

५

कुछ दिनों से दूसरी ही बात मन में ग्रा रही है – हो सकता है हकीम के वेष में वह बूढ़ा जल्लाद न हो, हकीम ही हो; ग्रगर ऐसा

भी है तो भी वह ग्रादमखोर तो है ही। वैद्यों के पुरखे ली शी-चन* की जड़ी-बूटियों की पोथी में साफ लिखा है कि नर-मांस को उबालकर खाया जा सकता है; सो वह वैद्य ग्रादमखोर नहीं तो क्या है?

बड़े भाई का क्या कहना, वे तो ग्रादमखोर हैं ही। जब मुझे पढ़ाते थे तो ग्रपने मुंह से कहते थे, "लोग ग्रपने बेटों को एक दूसरे से वदलकर उन्हें खा जाते हैं" ग्रौर एक बार एक वदमाश के लिए उन्होंने कहा था कि उसे मार डालने से ही क्या होगा, "उसका गोश्त खा डालें ग्रौर उसकी खाल को विछावन बना लें!"** तब मेरी उम्र कच्ची थी। सुनकर दिल देर तक धड़कता रहा। जव शिशु-भेड़िया गांव के ग्रसामी ने एक बदमाश का कलेजा निकालकर खा जाने की वात कही थी तब भी भैया को कुछ बुरा नहीं लगा था। सुनकर चुपचाप सिर हिलाते रहे थे, जैसे ठीक ही हुग्रा हो। मुझसे छिपा क्या है, वे तो पहले की ही तरह खूंखार हैं। चूंकि "बेटों को एक दूसरे से वदलकर उन्हें खा जाना" सम्भव है, तो फिर हर चीज को वदला जा सकता है, हर किसी को खाया जा सकता है। उन दिनों भैया जब ऐसी वातें समझाते थे तो मैं सुन लेता था, सोचता नहीं था। पर ग्रव खूब समझ में ग्राता है कि ऐसी वातें कहते समय उनके मुंह में नर-मांस का स्वाद भर ग्राता होगा ग्रौर उनका मन मनुष्य को खाने के लिए व्याकुल हो उठता होगा।

६

घना ग्रंधेरा है। जान नहीं पड़ता रात है या दिन। चाग्रो परिवार का कुत्ता फिर भौंक रहा है।

---

* एक प्रसिद्ध चीनी ग्रौषधि-वैज्ञानिक (१५१८-१५९३) जिन्होंने "पनछाग्रोकाङ्मू" नामक ग्रौषधि-ग्रन्थ की रचना की थी।

** एक प्राचीन चीनी ग्रन्थ "च्वोच्वान" से उद्धृत।

बबरशेर की तरह खूंखार, खरहे की तरह कातर, लोमड़ी की तरह धूर्त।...

७

मैं उन लोगों को खूब जानता हूं। किसी को एकदम मार डालने को ये तैयार नहीं हैं। ऐसा कर सकने का साहस इन लोगों में नहीं है। परिणाम के भय से इनकी जान निकलती है, इसलिए ये लोग षड्यंत्र रचकर जाल बिछा रहे हैं, मुझे आत्महत्या कर लेने के लिए विवश कर रहे हैं। कुछ दिनों से गली के पुरुषों और स्त्रियों का बरताव देख रहा हूं और बड़े भाई का रंग-ढंग भी देख रहा हूं। मैं सब समझता हूं। ये लोग तो चाहते हैं कि कोई धर की धन्नी से फंदा लगाकर इनके लिए मर जाए। कत्ल के लिए कोई इन पर उंगली न उठा सके और ये लोग जी भरकर खाएं। ये लोग इसी बात की कल्पना करके खुशी से फूले नहीं समा रहे। चाहे कोई आदमी चिन्ता और संकट से सूख-सूख कर आत्महत्या कर ले और उसके शरीर में रक्त-मांस कुछ भी न रहे, ये लोग उसे भी खाने के लिए लालायित रहते हैं।

ये लोग केवल मुरदार गोश्त खाते हैं! याद आता है, एक घिनौने जानवर के बारे में पढ़ा है। उसकी आंखें बड़ी डरावनी होती हैं। हां, उसे लकड़बग्घा कहते हैं। लकड़बग्घा अक्सर मुरदार गोश्त खाता है। मोटी से मोटी हड्डी दांतों में चबाकर निगल जाता है। ख्याल आते ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं। लकड़बग्घे की जाति भेड़िये से मिलती है और भेड़िया कुत्ते की जाति का होता है। उस दिन चाओ परिवार का कुत्ता बार-बार मेरी ओर देख रहा था। मालूम होता था वह कुत्ता भी षड्यंत्र में शामिल है। बूढ़ा हकीम नजरें झुकाए था, पर मैं तो ताड़ गया!

सबसे अधिक दुख तो मुझे अपने बड़े भाई के लिए है। वह भी तो आदमी है, उसे डर क्यों नहीं लगता। मुझे खा डालने के लिए वह

भी दूसरों के साथ क्यों मिल गया है! शायद जो होता चला आया है उसे करते जाने में लोग अपराध और दोष नहीं समझते। या मेरा भाई जानता है कि यह अपराध है, पाप है, पर उसने पाप करने के लिए अपना दिल पत्थर-सा बना लिया है?

सबसे पहले मैं इसी आदमखोर का भण्डाफोड़ करूंगा। सबसे पहले इसी को पाप से रोकूंगा।

८

वास्तव में तो यह तर्क बहुत पहले ही मान लिया जाना चाहिए था।...

अचानक कोई भीतर आ गया। यही बीस-एक वर्ष का नौजवान होगा। चेहरा उसका ठीक-ठीक नहीं देख सका। उस पर मुस्कराहट खेल रही थी। लेकिन जब उसने गर्दन झुकाकर मेरा अभिवादन किया तो उसकी मुस्कान बनावटी-सी लगी। मैंने पूछ ही लिया, "बताओ, नर-मांस खाना उचित है?"

वह मुस्कराता रहा और बोला, "क्या कहीं अकाल पड़ा है, नर-मांस कोई क्यों खाएगा?"

मैं भांप गया, यह भी उन्हीं के दल का था। मैंने साहस किया और फिर कहा :

"मेरी बात का उत्तर दो!"

"आखिर इस प्रश्न का मतलब क्या है? ... क्या मजाक कर रहे हो? ... कितना सुहावना मौसम है!"

"हां मौसम अच्छा है, चांदनी खूब उजली है। पर तुम मेरी बात का जवाब दो, क्या यह उचित है?"

वह कुछ परेशान हो गया और बोला : "नहीं।..."

"नहीं? तो फिर लोग ऐसा क्यों करते हैं?"

"तुम्हारा मतलब क्या है?"

"मेरा मतलब? शिशु-भेड़िया गांव में लोग नर-मांस खा रहे हैं।

तुम पोथियां-ग्रंथ उठाकर देख लो। सब जगह यही लिखा है, ताजा लाल-लाल अक्षरों में।"

वह गुमसुम रह गया। उसका चेहरा पीला पड़ गया। मेरी ओर घूरकर बोला, "होगा, सदा से ही होता आया है।..."

"सदा से होता आया है, क्या इसीलिए उचित है?"

"मैं इस बहस में नहीं पड़ना चाहता। तुम्हें भी इन फिजूल के झगड़ों में नहीं पड़ना चाहिए। ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए।"

मैं झट से उछल पड़ा, आंखें फाड़कर इधर-उधर देखने लगा। वह आदमी गायब हो गया था। मैं पसीना-पसीना हो रहा था। नौजवान की उम्र मेरे भाई से बहुत कम थी, मगर वह भी उन लोगों के साथ था। अपने मां-बाप से सब सीख लिया है उसने, भगवान जाने, अपने बेटे को भी सिखा चुका होगा! तभी तो ये जरा-जरा से छोकरे मुझे यों घूर-घूर कर देखते हैं।

६

दूसरों को खा लेने का लालच, परन्तु स्वयं आहार बन जाने का भय। सबको दूसरों पर संदेह है, सब दूसरों से आशंकित हैं।...

यदि इस परस्पर भय से लोगों को मुक्ति मिल सके तो वे निश्शंक होकर काम कर सकते हैं, घूम-फिर सकते हैं, खा-पी सकते हैं, चैन की नींद सो सकते हैं। बस, मन से वह एक विचार निकाल देने की जरूरत है। परन्तु लोग यह कर नहीं पाते और बाप-बेटे, पति-पत्नी, भाई-भाई, मित्र, गुरु-शिष्य, एक दूसरे के जानी दुश्मन और यहां तक कि अपरिचित भी एक दूसरे को खा जाने के षड्यंत्र में शामिल हैं, दूसरों को भी इसमें घसीट रहे हैं और इस चक्कर से निकल जाने को कोई तैयार नहीं।

१०

ग्राज सुवह वड़े भैया से मिलने गया। वे ड्योढ़ी के सामने खड़े ग्राकाश की ग्रोर ताक रहे थे। मैं उनके पीछे दरवाजे ग्रौर उनके बीच खड़ा हो गया। वहुत ही विनय से बोला :

"भैया, कुछ कहना चाहता हूं।"

"हां, कहो क्या है?" उन्होंने तुरन्त मेरी ग्रोर घूमकर सिर हिलाते हुए इजाजत दी।

"वात कुछ खास नहीं है, पर कह नहीं पा रहा हूं। भैया, ग्रादिम ग्रवस्था में तो शायद सभी लोग थोड़ा-वहुत नर-मांस खा लेते होंगे। जव लोगों का जीवन वदला, उनके विचार बदले, तो उन्होंने नर-मांस त्याग दिया। वे लोग ग्रपना जीवन सुधारना चाहते थे। इसलिए वे सभ्य वन गए, उनमें मानवता ग्रा गई। परन्तु कुछ लोग ग्रव भी खाए जा रहे हैं—मगरमच्छों की तरह। कहते हैं जीवों का विकास होता है, एक जीव से दूसरा जीव वन जाता है। कुछ जीव विकास करके मछली वन गए हैं, पक्षी वन गए हैं, बंदर वन गए हैं। ऐसे ही ग्रादमी भी वन गया है। परन्तु कुछ जीवों में विकास की इच्छा नहीं होती। उनका विकास नहीं होता, वे सुधरते ही नहीं, रेंगने वाले जानवर ही वने रहते हैं। नर-मांस खाने वाले ग्रसभ्य लोग नर-मास न खाने वाले मनुष्यों की तुलना में कितना नीचे ग्रौर लज्जित ग्रनुभव करते होंगे। बंदर की तुलना में रेंगने वाले जानवर नीचे हैं, परन्तु नर-मांस न खाने वाले सभ्य लोगों की तुलना में नर-मांस खाने वाले लोग उनसे भी नीचे हैं।

"पुराने समय में ई या ने ग्रपने बेटे को उबालकर च्ये ग्रौर चग्रो के सामने परोस दिया था। यह एक पुरानी कहानी है।* इससे पहले

---

* प्राचीन ग्रभिलेखों के ग्रनुसार ई या ने ग्रपने बेटे का गोश्त छी राज्य के राजा ह्वान को, जिसने ईसापूर्व ६८५ से ६४३ तक शासन किया, परोस दिया था। च्ये ग्रौर चग्रो इससे पहले के जमाने के निरंकुश शासक थे। यहां पागल ग्रादमी ने गलती से उनका उल्लेख कर दिया है।

भी जिस दिन से फान कू ने ग्राकाश ग्रौर पृथ्वी बनाए हैं, ई या के बेटे के जमाने से श्वी शी-लिन के जमाने तक* मनुष्य एक दूसरे को खाते रहे हैं। श्वी शी-लिन के जमाने से शिशु-भेड़िया गांव में पकड़े गए ग्रादमी के जमाने तक यही होता रहा है। पिछले साल शहर में एक ग्रपराधी की गर्दन काट दी गई थी। खून बहता देखकर तपेदिक के एक मरीज ने उसके खून में रोटी डुबोकर खा ली थी।

"ये लोग मुझे खा जाना चाहते हैं। इन सब लोगों को ग्रकेले रोक पाना तुम्हारे वस का नहीं; पर तुम उनमें क्यों मिल गए हो? ये लोग ग्रादमखोर ठहरे, जो न कर डालें! ये मुझे खा डालेंगे, उसके बाद तुम्हारी भी बारी ग्राएगी। फिर ये लोग ग्रापस में भी एक-दूसरे को नहीं छोड़ेंगे। भैया, ग्रगर तुम लोग ग्राज ही यह रास्ता छोड़ दो तो सबको चैन मिल जाएगा। माना, बहुत-वहुत पुराने समय से ऐसा ही होता चला ग्राया है, ग्रादमी ग्रादमी को खाता ग्राया है। पर ग्रब, खासकर इस समय तो हम लोग ग्रापस में एक-दूसरे पर दया कर सकते हैं ग्रौर कह सकते हैं कि ऐसा नहीं होगा! भैया मुझे विश्वास है कि तुम ऐसा कहोगे। ग्रभी उस दिन वह ग्रसामी लगान घटा देने के लिए कह रहा था। तव भी तुमने कह दिया था, ऐसा नहीं हो सकता।"

भैया पहले तो बेपरवाही दिखाने को मुस्कराते रहे, फिर उनकी ग्रांखों में खून उतर ग्राया ग्रौर जब मैंने उनका भंडाफोड़ कर दिया तो उनका चेहरा पीला पड़ गया। ड्योढ़ी के वाहर कई लोग जमा थे। चाग्रो साहव भी ग्रपना कुत्ता लिए खड़े थे। सव लोग गर्दनें वढ़ा-वढ़ा कर बड़ी उत्सुकता से भीतर झांक रहे थे। मैं उनके चेहरे नहीं देख पा रहा था। लगता था कई लोग कपड़े से चेहरा छिपाए हैं। कुछ के चेहरे जर्द ग्रौर डरावने लग रहे थे, कुछ ग्रपनी हंसी दवाए थे। मैं जानता था वे सव ग्रादमखोर हैं, ग्रापस में मिले हुए हैं। पर उनमें

---

* छिङ राजवंश (१६४४-१६११) के ग्रन्तिम काल के एक क्रान्तिकारी श्वी शी-लिन को १६०७ में एक छिङ ग्रफसर की हत्या के ग्रारोप में मौत की सजा दी गई थी। उनके दिल ग्रौर जिगर का गोश्त खाया गया था।

ग्रापस में भी एका ग्रौर मेल कहां था। कुछ का ख्याल था कि ग्रादमखोरी सदा से होती ग्राई है ग्रौर यह कोई बुरी वात नहीं। कुछ मानते थे कि यह ग्रत्याचार है, पर ग्रपना लालच दवा नहीं पाते थे। चाहते थे कि उनका भेद न खुले। इसलिए मेरी वात सुनी तो उन्हें गुस्सा ग्रा गया। पर ग्रपने गुस्से को काबू कर वे होंठ दवाए मुस्कराते रहे।

भैया एकदम ताव में ग्रा गए ग्रौर जोर से चिल्ला उठे :

"चलो यहां से, भाग जाग्रो सव लोग! किसी का दिमाग खराव हो गया है ग्रौर तुम उसका तमाशा देखने ग्राए हो!"

मैं उन लोगों की चाल भांपने लगा था। ये लोग ग्रपनी राह से टलने वाले नहीं, इन लोगों ने पूरा षड्यंत्र रच लिया है। सवने मिलकर मुझे पागल समझ लिया है। ये लोग मुझे खत्म कर देंगे तो कोई कुछ कहेगा भी नहीं। सव यही समझेंगे कि पगला था, उसे निवटा दिया। ठीक किया। जव शिशु-भेड़िया गांव के ग्रसामी ने एक वदमाश को मारकर खा जाने की वात कही थी, तव भी किसी ने कुछ नहीं कहा था। तव भी इन लोगों ने यही चाल चली थी। यह इन लोगों की एक पुरानी चाल है।

छन भी भीतर चला ग्राया। वह भी वहुत गरम हो रहा था, पर वे लोग मेरा मुंह वन्द नहीं कर सके। मैं बोले विना नहीं माना :

"यह ठीक नहीं है, ऐसा मत करो। तुम्हें ग्रपना मन वदलना होगा," मैंने कहा, "समझ लो, यह ग्रन्याय नहीं चल सकेगा। भविष्य में दुनिया में ग्रादमखोरी नहीं चल सकेगी।

"ग्रगर ग्रादमखोरी नहीं छोड़ोगे तो तुम सव खत्म हो जाग्रोगे, एक-दूसरे को खा जाग्रोगे। तुम्हारे घरों में चाहे जितनी संतानें पैदा हों, सभ्य लोग तुम्हें समाप्त कर देंगे। जैसे शिकारी जंगल में भेड़ियों को समाप्त कर देते हैं, जैसे लोग सांपों को खत्म कर देते हैं।"

छन दादा ने सव लोगों को भगा दिया। भैया चले गए थे। छन ने मुझे कमरे में जाने को कहा। कमरे में घुप ग्रंधेरा था। सिर के ऊपर छत की धन्नियां ग्रौर कड़ियां थिरकती जान पड़ रही थीं। उनका

आकार बढ़ता जा रहा था। कुछ पल ऐसे ही खड़खड़ाहट होती रही। फिर छत मुझ पर आ गिरी।

छत के बोझ के नीचे हिल सकना सम्भव नहीं था। वे लोग तो चाहते ही थे कि मैं मर जाऊं। मैं जानता था कि यह बोझ महज खयाली ही है। इसलिए हिम्मत बांधी, कंधा लगाया और बाहर निकल आया। मैं पसीना-पसीना हो रहा था, परन्तु फिर भी बोले बिना न रह सका :

"तुम्हें तुरत बदलना होगा! अपना मन बदलना होगा! याद रखो, भविष्य में दुनिया में आदमखोरी नहीं चल सकेगी।..."

११

कोठरी का दरवाजा बन्द रहता है। कभी धूप नहीं दिखाई देती। रोजाना दो बार खाना मिल जाता है।

मैंने खाना खाने को चापस्टिकें उठाईं तो भैया का ख्याल आ गया, अपनी छोटी बहन की मृत्यु की घटना याद आ गई। वह भैया की ही करतूत थी। तब मेरी बहन केवल पांच ही वर्ष की थी। कितनी प्यारी और निरीह थी वह! याद आती है तो चेहरा आंखों के सामने घूम जाता है। मां रो-रो कर बेहाल हो रही थीं। भैया मां को सांत्वना देकर समझा रहे थे, कारण शायद यह था कि स्वयं ही बेचारी को खा गए थे इसलिए मां को इस तरह रोते देखकर उन्हें शर्म आ रही थी। अगर उनमें शर्म होती...

भैया मेरी बहन को खा गए थे! नहीं मालूम मां यह भेद जान सकी थीं या नहीं।

मेरा तो ख्याल है कि मां सब जानती थीं, पर जब मां रो रही थीं तो उन्होंने साफ-साफ कुछ भी नहीं कहा था। शायद यह सोचकर चुप रही थीं कि कहने की बात नहीं थी। एक घटना और याद है। तब मेरी उम्र चार या पांच वर्ष रही होगी। मैं आंगन में छांह में बैठा हुआ था। भैया ने कहा था – एक सपूत का कर्तव्य है कि अपने माता-पिता के

बीमार होने पर उनकी श्रौषधि के लिए यदि जरूरत हो तो अपने शरीर का मांस भी काटकर और उवालकर प्रस्तुत कर दे। मां उनकी बात सुनकर समर्थन में चुप रह गई थीं, उन्होंने कोई विरोध नहीं किया था। अगर नर-मांस का एक टुकड़ा खाया जा सकता है तो पूरे आदमी को भी खाया जा सकता है। और जब मां के शोक और रुदन की याद आती है तो कलेजा टुकड़े-टुकड़े होने लगता है। कितने निराले ढंग हैं इन लोगों के!

१२

उसे याद करते ही, सोचते ही, रोंगटे खड़े हो जाते हैं। सिर चकरा जाता है।

आखिर यह बात समझ में आई कि उम्रभर से ऐसे लोगों के बीच रह रहा हूं जो चार हजार वर्ष से नर-मांस का आहार करते आ रहे हैं। बड़े भैया ने अभी घर संभाला ही था कि कुछ दिन बाद छोटी बहन की मृत्यु हो गई। इन्होंने उसके मांस का उपयोग किया ही होगा, पुलाव में या दूसरी तरह। बेखबरी में हम लोग भी खा गए होंगे।

संभव है, अनजाने में मैंने अपनी बहन के मांस के कई टुकड़े खा लिए हों, और अब मेरी बारी आई है।...

मैं भले ही बेखबर रहा हूं, मेरे पुरखे चार हजार वर्ष से आदमखोर रहे हैं। मेरे जैसा आदमी किसी सभ्य, वास्तविक मानव को अपना मुंह कैसे दिखा सकता है?

१३

सम्भव है नई पीढ़ी के छोटे बच्चों ने अभी नर-मांस न खाया हो। इन बच्चों को तो बचा लें!...

अप्रैल १९१८

आ Q की सच्ची कहानी

अध्याय एक

भूमिका

अनेक वर्षों से आ Q की सच्ची कहानी लिखने की सोच रहा था। किन्तु उसे लिख डालने की इच्छा होते हुए भी मन में दुविधा-सी बनी हुई थी। इससे मालूम हो जाता है कि मैं उन लोगों में नहीं जो लेखन-कार्य के द्वारा गौरव अर्जित करते हैं ; कारण, एक अमर व्यक्ति के कारनामों का चित्रण करने के लिए सदैव एक अमर लेखनी की आवश्यकता होती है ; व्यक्ति लेखनी के कारण भावी पीढ़ी में ख्याति प्राप्त करता है और लेखनी व्यक्ति के कारण – अन्त में यह पता नहीं चल पाता कि कौन किसके कारण ख्याति प्राप्त करता है। आखिरकार आ Q की कहानी लिखने का विचार एक भूत की तरह मेरे मस्तिष्क पर हावी हो गया।

मगर ज्यों ही लेखनी उठाई, अमरत्व से कोसों दूर इस रचना के सृजन में आने वाली कठिनाइयों का एहसास होने लगा। पहला सवाल यह खड़ा हुआ : आखिर इसे नाम क्या दिया जाय। कनफ्यूशियस ने कहा है, "अगर नाम सही नहीं, तो शब्द भी सही नहीं जान पड़ेंगे" ; इस कहावत पर अत्यन्त ईमानदारी से अमल किया जाना चाहिए।

जीवनकथाएं कई प्रकार की होती हैं : अधिकृत जीवनकथा, आत्मकथा, अनधिकृत जीवनकथा, दन्तकथा, पूरक जीवनकथा, परिवार-कथा, रेखाचित्र . . . किन्तु दुर्भाग्यवश इनमें एक भी नाम ऐसा नहीं जिससे मेरा काम चल जाय। "अधिकृत जीवनकथा"? जाहिर है कि इस विवरण को किसी अधिकृत इतिहास में अनेक विख्यात व्यक्तियों के विवरण के साथ सम्मिलित नहीं किया जाएगा। "आत्मकथा"? किन्तु मैं आ Q तो हूं नहीं, इसलिए यह भी ठीक नहीं। यदि इसे "अनधिकृत जीवनकथा" का नाम दिया जाय तो आखिर उसकी "अधिकृत जीवनकथा" कहां है? "दन्तकथा" कहना भी सम्भव नहीं, क्योंकि आ Q किसी दन्तकथा का चरित्र तो है नहीं। "पूरक जीवनकथा"? लेकिन किसी भी प्रेसीडेन्ट ने राष्ट्रीय ऐतिहासिक प्रतिष्ठान को अभी तक आ Q की "प्रतिमानित जीवनकथा" लिखने का आदेश नहीं दिया। यह सच है कि यद्यपि इंगलैण्ड के अधिकृत इतिहास में "जुआरियों के जीवन" का कोई उल्लेख नहीं है, फिर भी सुप्रसिद्ध लेखक कानन डायल ने "रोडनी स्टोन"* नामक उपन्यास की रचना की; किन्तु जहां एक सुप्रसिद्ध लेखक को यह सब करने की अनुमति है, वहां मुझ जैसे व्यक्ति को इसकी इजाजत कहां! तो क्या इसे "परिवार-कथा" कहा जाय? लेकिन मुझे तो यह भी नहीं मालूम कि मैं आ Q के खानदान का सदस्य हूं अथवा नहीं; फिर उसके बेटे-बेटियों या पोते-पोतियों ने तो मुझे यह काम सौंपा नहीं। अगर इसे "रेखाचित्र" कहा जाय तो शायद इस पर भी एतराज किया जाएगा, क्योंकि आ Q का "पूरा विवरण" तो कहीं उपलब्ध ही नहीं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि यह एक "जीवनी" है, किन्तु चूंकि मेरी लेखन-शैली जरा अपरिष्कृत है और इसमें खोंमचेवालों व फेरीवालों की भाषा का प्रयोग किया गया है, इसलिए मैं इसे इतना ऊंचा लगने वाला नाम नहीं दे सकता। अतएव

---

* इस उपन्यास के चीनी रूपान्तर का नाम था "जुआरियों की पूरक जीवनकथाएं"।

उपन्यासकारों की, जिनकी गिनती तीन मतों ग्रौर नौ संप्रदायों* में नहीं होती, प्रचलित शब्दावली – विषयान्तर काफी हो चुका ग्रौर सच्ची कहानी पर लौट ग्राना चाहिए – से "सच्ची कहानी," इन दो शब्दों को ग्रपने शीर्षक के लिए चुन लेता हूं ; ग्रौर ग्रगर इससे प्राचीन काल की "लिपिकला की सच्ची कहानी"** की याद ताजा हो जाए तो इसमें कोई क्या कर सकता है।

दूसरी कठिनाई मेरे सामने यह थी कि ऐसी जीवनकथा कुछ इस प्रकार ग्रारम्भ होनी चाहिए : "ग्रमुक नाम का व्यक्ति, जिसका कुलनाम ग्रमुक था, ग्रमुक स्थान में रहता था"। लेकिन सच वात तो यह है कि ग्रा Q का कुलनाम मुझे मालूम ही नहीं था। एक वार पता लगा था कि उसका कुलनाम शायद चाग्रो है, लेकिन ग्रगले ही दिन इसके वारे में फिर एक बार बड़ा घपला हो गया था। वात यह थी कि चाग्रो साहव के बेटे ने काउन्टी की सरकारी परीक्षा पास कर ली थी ग्रौर उसकी सफलता की घोषणा ढोल-नगाड़ों के साथ पूरे गांव में की जा रही थी। ग्रा Q, जो ग्रभी-ग्रभी दो प्याली पीली शराब पीकर ग्राया था, इतराता हुग्रा कहता फिर रहा था कि यह उसके ग्रपने लिए भी बड़े गौरव की वात है क्योंकि वह भी चाग्रो साहव के ही कुल का ग्रादमी है ग्रौर ग्रगर ठीक-ठीक हिसाब लगाया जाय तो उसकी वरिष्ठता सफल उम्मीदवार से तीन पीढ़ी ऊपर बैठती है। उस समय ग्रासपास खड़े कुछ लोग तो ग्रा Q से दहशत तक खाने लगे थे। लेकिन दूसरे ही दिन बेलिफ उसे चाग्रो साहब के घर बुला ले गया था। जव बूढ़े महाशय चाग्रो ने उसकी तरफ देखा था तो उनका चेहरा गुस्से से तमतमा उठा था ग्रौर वे गरजकर बोल पड़े थे :

---

* तीन मत इस प्रकार थे – कनफ्यूशियसवादी मत, बौद्धमत ग्रौर ताग्रोमत। नौ सम्प्रदायों में कनफ्यूशियमवादी, ताग्रोबादी, विधानवादी, मोवादी इत्यादि सम्प्रदाय सम्मिलित थे। उपन्यासकारों को, जो इनमें से किसी एक मत या सम्प्रदाय से सम्बद्ध नहीं होते थे, प्रतिष्ठित नहीं माना जाता था।

** छिङ राजवंश (१६४४-१६११) के जमाने के फ़ङ ऊ द्वारा रचित एक पुस्तक।

"ग्रो ग्रा Q के बच्चे ! तू कहता फिर रहा है कि तू भी हमारे ही कुल का है ?"

ग्रा Q ने कोई उत्तर नहीं दिया था।

जैसे-जैसे चाग्रो साहब उसकी तरफ देखते जा रहे थे, उनका पारा लगातार चढ़ता जा रहा था। दो-चार कदम ग्रागे बढ़कर उसे धमकाते हुए उन्होंने कहा, "तुझे ऐसी बेहूदा बात कहने की हिम्मत कैसे हुई ? भला मैं तेरे जैसे लोगों का रिश्तेदार कैसे हो सकता हूं ? क्या तेरा कुलनाम चाग्रो है ?"

ग्रा Q ने कोई उत्तर नहीं दिया था ग्रौर वहां से भागने ही वाला था कि चाग्रो साहब ने ग्रागे बढ़कर उसके मुंह पर एक तमाचा जड़ दिया था।

"तेरा कुलनाम चाग्रो कैसे हो सकता है ? क्या तू समझता है कि तेरी जैसी हैसियत का ग्रादमी भी चाग्रो खानदान का हो सकता है ?"

ग्रा Q ने चाग्रो कहलाने के ग्रपने ग्रधिकार की पैरवी करने की कतई कोशिश नहीं की थी ग्रौर ग्रपना बायां गाल सहलाते हुए बेलिफ़ के साथ बाहर चला गया था। बाहर निकलते ही बेलिफ ने उस पर गालियों की बौछार शुरू कर दी थी, ग्रौर दो सौ तांबे के सिक्कों से उसकी हथेली चिकनी करने के बाद ही ग्रा Q उससे ग्रपना पिण्ड छुड़ा पाया था। जिस किसी ने भी यह घटना सुनी थी उसने यही कहा था कि ग्रा Q को उसकी बेवकूफी की वजह से ही मार पड़ी। ग्रगर उसका कुलनाम चाग्रो ही था – जिसकी सम्भावना कम थी – तो भी गांव में चाग्रो साहब के रहते उसका इस तरह डींग मारते फिरना उचित नहीं था। इस घटना के बाद ग्रा Q की वंश-परम्परा की कहीं कोई चर्चा नहीं हुई। इसलिए मुझे ग्रब भी ठीक-ठीक मालूम नहीं कि उसका कुलनाम सचमुच क्या था।

तीसरी कठिनाई, जिसका सामना मुझे इस रचना के दौरान करना पड़ा, यह थी कि ग्रा Q का व्यक्तिगत नाम कैसे लिखा जाय। जब तक वह जिन्दा रहा सभी लोग उसे ग्रा Quei के नाम से पुकारते

रहे। लेकिन जब वह नहीं रहा तो किसी ने आ Quei की चर्चा तक न की। कारण स्पष्ट है : वह उन व्यक्तियों में नहीं था जिनका नाम "बांस की तख्तियों और रेशम के कपड़े पर सुरक्षित"* रखा जाता है। अगर नाम सुरक्षित रखने की ही बात है, तो निश्चय ही यह रचना इस दिशा में प्रथम प्रयास कहलाएगी। इसलिए मेरे सामने शुरू में ही यह कठिनाई आ खड़ी हुई। मैंने इस सवाल पर बड़ी बारीकी से विचार किया। आ Quei – क्या यहां "Quei" का अर्थ पारिजात तो नहीं लगाया जाएगा, अथवा "Quei" का अर्थ कुलीन वर्ग तो नहीं समझा जाएगा? अगर उसका दूसरा नाम चन्द्र-मण्डप होता, या उसका जन्म-दिन चन्द्रोत्सव वाले महीने में मनाया जाता, तो निश्चय ही "Quei" का अर्थ पारिजात लगाया जा सकता था।** लेकिन चूंकि उसका कोई दूसरा नाम नहीं था – अगर था भी तो कोई जानता नहीं था – और चूंकि उसने अपने जन्म-दिन के मौके पर निमंत्रण-पत्र भेजकर अपने सम्मान में प्रशंसात्मक कविताएं कभी प्राप्त नहीं की थीं, इसलिए उसका नाम आ Quei (पारिजात) लिखना स्वेच्छाचारिता कहलाएगा। साथ ही अगर उसका आफ़ू (खुशहाली) नाम का कोई बड़ा या छोटा भाई होता, तो उसे अवश्य ही आ Quei (कुलीन वर्ग) नाम दिया जा सकता था। लेकिन वह तो अपने किस्म का एक ही आदमी था। इसलिए उसे आ Quei (कुलीन वर्ग) नाम देने का कोई औचित्य नहीं। बाकी तमाम असामान्य रेखाक्षर, जिनकी ध्वनि Quei से मिलती है, इससे भी कम औचित्य रखते हैं। मैंने एक बार यह सवाल चाओ साहब के लड़के से पूछा था, जो काउन्टी की सरकारी परीक्षा पास कर चुका था। लेकिन उसके जैसा विद्वान आदमी भी चक्कर में पड़ गया था। उसका कहना था कि इस नाम का

---

* यह कथन ईसापूर्व तीसरी शताब्दी का है। बांस की तख्तियों और रेशम के कपड़े को चीन के लोग प्राचीन काल में लेखन-सामग्री के रूप में इस्तेमाल करते थे।

** पारिजात के फूल चन्द्रोत्सव वाले महीने में खिलते हैं। चीनी लोककथाओं के अनुसार चन्द्रमा पर दिखाई देने वाला धब्बा वास्तव में पारिजात का वृक्ष है।

पता इसलिए नहीं लग पा रहा क्योंकि छन तू-श्यू* ने "नया नौजवान" नामक पत्रिका निकालनी शुरू कर दी है, जिसमें पश्चिमी वर्णमाला के इस्तेमाल की पैरवी की गई है ; इससे राष्ट्रीय संस्कृति बिलकुल तहस-नहस हो रही है। अन्त में, मैंने अपने इलाके के किसी व्यक्ति से अनुरोध किया कि वह स्वयं जाकर आ Q के मामले से सम्बन्धित कानूनी दस्तावेजों की जांच-पड़ताल करे। लेकिन आठ महीने बाद उसने मुझे चिट्ठी लिखी कि उन दस्तावेजों में आ Quei नाम के किसी आदमी का जिक्र नहीं है। हालांकि मैं पक्के तौर पर यह नहीं बता सकता था कि मेरे मित्र की बात सच भी थी या नहीं अथवा उसने इस सम्बन्ध में कोई कोशिश भी की थी या नहीं, फिर भी जब मैं इस तरह उसके नाम का पता नहीं लगा पाया तो मेरे सामने और कोई चारा नहीं रह गया। चूंकि मुझे डर है कि नई ध्वनि-प्रणाली अभी आम लोगों में प्रचलित नहीं है, इसलिए पश्चिमी वर्णमाला का इस्तेमाल करने में, अंग्रेजी हिज्जों के मुताबिक आ Quei नाम लिखने में और उसका संक्षिप्त रूप आ Q लिखने में मुझे कोई हर्ज नहीं जान पड़ता। बेशक, यह "नया नौजवान" पत्रिका का लगभग अन्धानुकरण कहलाएगा और इसके लिए मैं बेहद शर्मिन्दा हूं ; लेकिन चूंकि चाओ साहब के लड़के जैसा धुरंधर विद्वान भी मेरी समस्या हल नहीं कर पाया, ऐसी हालत में भला मैं और कर ही क्या सकता था ?

मेरी चौथी कठिनाई आ Q के जन्म-स्थान के बारे में थी। अगर उसका कुलनाम चाओ होता, तो इलाके के मुताबिक वर्गीकरण करने के पुराने रिवाज के अनुसार, जो आज भी प्रचलित है, "सौ कुलनाम"** की टीका देखी जा सकती थी और मालूम हो सकता था कि वह "कानसू प्रान्त के थ्येनश्वेइ नामक स्थान का बाशिन्दा" है। लेकिन बदकिस्मती

---

* छन तू-श्यू (१८८०-१९४२) उस समय पेकिङ विश्वविद्यालय का एक प्रोफेसर और "नया नौजवान" नामक मासिक पत्रिका का सम्पादक था। बाद में उसने चीनी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ गद्दारी की।

** एक पुरानी प्रवेशिका जिसमें सारे कुलनाम पद्य में लिखे होते थे।

से उसका कुलनाम ही विवादास्पद था, इसलिए जन्म-स्थान भी अनिश्चित हो गया। हालांकि उसकी ज्यादातर जिन्दगी वेइच्वाङ में ही बीती, वह अक्सर दूसरे स्थानों में भी रह चुका था। इसलिए उसे वेइच्वाङ का वाशिन्दा कहना भी ठीक नहीं मालूम होता। यह वास्तव में इतिहास को तोड़ना-मरोड़ना कहलाएगा।

सिर्फ एक बात, जिससे मुझे तसल्ली हुई, यह है कि "आ" अक्षर बिलकुल सही है। यह निश्चित रूप से किसी झूठी तुलना का परिणाम नहीं है और विद्वत्तापूर्ण आलोचना की कसौटी पर खरा उतरता है। जहां तक दूसरी समस्याओं का ताल्लुक है, उन्हें हल करना मेरे जैसे विद्वत्ताहीन व्यक्ति के बूते का नहीं और मैं उम्मीद करता हूं कि डा० हू श, जो "इतिहास और पुरातत्व में गहरी रुचि"* रखते हैं, के शिष्य भविष्य में इस पर नई रोशनी डाल सकेंगे। लेकिन मैं सोचता हूं तब तक मेरी "आ Q की सच्ची कहानी" विस्मृति के गर्त में विलीन हो चुकी होगी।

उपर्युक्त पंक्तियों को इस रचना की भूमिका माना जा सकता है।

अध्याय दो

आ Q की विजयों का संक्षिप्त विवरण

आ Q के कुलनाम, व्यक्तिगत नाम और जन्म-स्थान से सम्बन्धित अनिश्चितता के अलावा उसके "अतीत" के बारे में भी कुछ अनिश्चितता बनी हुई है। कारण यह कि वेइच्वाङ के लोगों ने उसके "अतीत" पर जरा भी ध्यान दिए बिना उसकी सेवाओं का इस्तेमाल किया अथवा उसकी खिल्ली उड़ाई। आ Q खुद भी इस विषय में मौन रहता,

* यह वाक्यांश नामी प्रतिक्रियावादी सियासतबाज व लेखक हू श अक्सर आत्मप्रशंसा में कहा करता था।

सिर्फ ऐसे मौके को छोड़कर जबकि उसका किसी से झगड़ा हो जाता और उसकी तरफ देखता हुआ वह बोल पड़ता, "किसी समय हमारी हालत तुमसे कहीं अच्छी थी ! तुम अपने आपको समझते क्या हो ?"

आ Q का अपना कोई परिवार नही था। वह वेइच्वाङ गांव में संरक्षक-देवता के मन्दिर में रहता था। उसके पास कोई नियमित रोजगार भी नहीं था। जो भी छोटा-मोटा काम मिल जाता, कर लेता : गेहूं काटना होता तो गेहूं काट देता, चावल पीसना होता तो चावल पीस देता, नाव चलाना होता तो नाव चला देता। अगर ज्यादा दिनों का काम होता तो अपने अस्थायी मालिक के घर में ही रह जाता। लेकिन ज्यों ही काम खत्म होता, वहां से चल देता। सो जब भी लोगों के पास काम होता, वे आ Q को याद करते। लेकिन वे लोग सिर्फ उसकी सेवाओं को याद करते थे, न कि उसके "अतीत" को ; और जब काम समाप्त हो जाता तो वे आ Q को भी भूल जाते, उसके "अतीत" की बात तो दूर रही। एक बार एक बुजुर्ग आदमी ने कहा था, "कितना अच्छा काम करता है आ Q !" उस समय सामने खड़े आ Q का बदन कमर तक एकदम निर्वस्त्र था, शरीर बेजान व दुबला-पतला था, चेहरे पर उदासीनता थी। दूसरे लोग यह नहीं समझ पाए थे कि ये शब्द उसने सचमुच आ Q की प्रशंसा में कहे थे अथवा उसकी खिल्ली उड़ाने के लिए। जो हो, आ Q यह सुनकर बेहद खुश हुआ था।

आ Q दरअसल अपने बारे में बहुत ऊंची राय रखता था। वेइच्वाङ के सभी बाशिन्दों को वह अपने से नीचा समझता था। यहां तक कि उन दो युवा "विद्वानों" को भी किसी लायक नहीं समझता था, हालांकि ज्यादातर युवा "विद्वानों" के सरकारी परीक्षा पास करने की सम्भावना थी। चाओ साहब और छ्येन साहब की गांव वाले बहुत इज्जत करते थे, क्योंकि वे दोनों धनी होने के साथ-साथ युवा विद्वानों के पिता भी थे। सिर्फ आ Q ही ऐसा था जो उनकी खास इज्जत नहीं करता था और सोचता था, "मेरे बेटे शायद इनसे भी ज्यादा महान बनें !"

इसके अलावा, जब आ Q को कई बार शहर जाने का मौका मिला तो स्वभावतः उसका दिमाग पहले से ज्यादा चढ़ गया, हालांकि इसके बाद वह शहर के लोगों को भी बिलकुल तुच्छ समझने लगा। मिसाल के लिए, तीन फुट लम्बे और तीन इंच चौड़े तख्ते से बने बेंच को वेइच्वाङ गांव के लोग "लम्बा बेंच" कहते थे। आ Q भी उसे "लम्बा बेंच" ही कहता था। लेकिन शहर के लोग उसे "सीधा बेंच" कहते थे। आ Q सोचता, "यह कितना गलत है! कितना हास्यास्पद है!" इसके अलावा वेइच्वाङ गांव के लोग जब बड़े सिर वाली मछली को तेल में तलते तो सभी लोग हरे प्याज की पत्तियों के आधे इंच लम्बे टुकड़े काटकर उसके साथ छौंकते थे, जबकि शहर के लोग उन्हें बारीक काटकर उसके साथ छौंकते थे। आ Q सोचता, "यह भी कितना गलत है! कितना हास्यास्पद है!" लेकिन वेइच्वाङ गांव के लोग सचमुच बिलकुल अपढ़-गंवार थे और उन्होंने यह कभी नहीं देखा था कि शहर में मछली कैसे तली जाती है!

आ Q, जो "किसी समय काफी खुशहाल था" और दुनियादारी में कुशल एक "अच्छा श्रमिक" था, एक बिलकुल मुकम्मिल इंसान होता अगर बदकिस्मती से उसके शरीर पर कुछ विकृतियां न होतीं। सबसे ज्यादा दुखदाई उसकी खोपड़ी पर वे चमकीले निशान थे जो अतीत काल में किसी समय दाद रोग से पीड़ित होने के कारण बन गए थे। हालांकि ये निशान उसके अपने ही सिर पर थे, लेकिन आ Q इन्हें जरा भी सम्मानजनक नहीं समझता था। यही वजह थी कि वह "दाद" या इससे मिलते-जुलते किसी भी अन्य शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था। बाद में इससे एक कदम और आगे बढ़कर उसने "चमकदार" और "रोशनी" शब्दों का इस्तेमाल भी बन्द कर दिया और इसके बाद "चिराग" और "मोमबत्ती" शब्दों का प्रयोग भी छोड़ दिया। जब भी कोई जानबूझकर या अनजाने में इन वर्जित शब्दों का इस्तेमाल करता, तो आ Q गुस्से से तमतमा उठता, उसके दाद के निशान लाल हो उठते। वह गुस्ताखी करने वाले की तरफ

देखता और अगर वह कोई ऐसा आदमी होता जो जवाब देने में उससे कमजोर साबित होता तो उसे खूब जली-कटी सुनाता, और अगर कोई ऐसा आदमी होता जो लड़ने में उससे कमजोर होता तो झट उस पर हाथ छोड़ देता। फिर भी यह अजीब बात थी कि इन मुठभेड़ों में अक्सर आ Q को ही मात खानी पड़ती। अन्त में वह नए दांवपेंच अपना लेता और अपने प्रतिद्वन्द्वी को गुस्से से लाल आंखों से घूरकर ही मन को तसल्ली दे लेता।

बात यह हुई कि जबसे आ Q ने लोगों को गुस्से से लाल आंखों से घूरना शुरू किया, वेइच्वाङ के निठल्ले लोगों को उसका मजाक उड़ाने या उससे छेड़खानी करने में और ज्यादा मजा आने लगा। वे ज्यों ही उसे देखते, उकसाने के लिए कह देते :

"देखो तो! रोशनी हो रही है।"

आ Q हमेशा की ही तरह उत्तेजित हो उठता और गुस्से से लाल आंखों से उन्हें घूरने लगता।

"अच्छा तो यहां पैराफीन का चिराग रखा है", वे लोग उससे जरा भी डरे बिना अपनी बात जारी रखते।

आ Q कुछ न कर पाता। माकूल जवाब ढूंढ़ पाने के लिए दिमाग पर जोर डालकर कहता : "तुम इस लायक भी नहीं हो कि...।" ऐसे मौके पर उसे ऐसा लगता मानो उसकी खोपड़ी पर अंकित निशान उसके उदात्त व गौरवपूर्ण चरित्र के द्योतक हों, दाद के मामूली निशान न हों। फिर भी, जैसा कि पहले कहा जा चुका है, आ Q दुनियादारी में कुशल था : वह फौरन समझ जाता कि उसके मुंह से "वर्जित शब्द" निकलने जा रहे हैं, इसलिए बात वहीं खत्म कर देता।

अगर निठल्ले लोगों को इतने से भी तसल्ली न होती और वे उसे उकसाना जारी रखते तो हाथापाई की नौबत आ जाती। और जब आ Q बिलकुल परास्त हो जाता और निठल्ले लोग उसकी भूरी चुटिया खींचकर उसका सिर चार-पांच बार दीवाल से टकरा लेते, सिर्फ तभी वे अपनी विजय पर सन्तुष्ट होकर वहां से जाते। आ Q

एक क्षण के लिए वहीं रुक जाता और मन ही मन सोचने लगता, "मालूम होता है मुझे मेरे बेटे ने पीटा है। आजकल कैसा जमाना आ गया है! ..." इसके बाद वह भी अपनी विजय पर सन्तुष्ट होकर वहां से चला जाता।

आ Q अपने मन में जो कुछ भी सोचता बाद में दूसरे लोगों को जरूर बताता। इस तरह वे सभी लोग, जो उसकी खिल्ली उड़ाते थे, मनोवैज्ञानिक विजय प्राप्त करने के उसके तरीके को अच्छी तरह जान गए थे। इसलिए बाद में जो कोई भी उसकी भूरे रंग की चुटिया को खींचता या मरोड़ता था, उससे वह पहले ही कह देता : "आ Q, बेटा बाप की पिटाई नहीं कर रहा, बल्कि इंसान जानवर की पिटाई कर रहा है। जरा कहो तो : इंसान जानवर की पिटाई कर रहा है।"

आ Q अपनी चुटिया की जड़ मजबूती से पकड़ लेता और सिर टेढ़ा करके कहता : "यह क्यों नहीं कहते कि इंसान कीड़े की पिटाई कर रहा है? मैं एक कीड़ा हूं – अब मुझे छोड़ोगे या नहीं?"

हालांकि उसका अस्तित्व एक कीड़े के बराबर था, फिर भी निठल्ले लोग जब तक अपनी आदत के मुताबिक आसपास की किसी चीज से पांच-छै बार उसका सिर न टकरा लेते तब तक अपनी विजय पर सन्तुष्ट होकर वहां से न जाते और तब तक उन्हें इस बात का यकीन न हो पाता कि आ Q इस बार हार गया है। लेकिन दस सेकिण्ड बीतने से पहले ही आ Q भी अपनी विजय पर सन्तुष्ट होकर वहां से चल देता, यह सोचता हुआ कि वह "सर्वप्रथम आत्म-अकिंचनताकारी व्यक्ति" है, और अगर "आत्म-अकिंचनताकारी व्यक्ति" शब्द निकाल दिए जाएं तो सिर्फ "सर्वप्रथम" रह जाता है। क्या सर्वाधिक अंक लेकर सरकारी परीक्षा पास करने वाला उम्मीदवार भी "सर्वप्रथम" नहीं है? "आखिर तुम लोग अपने को समझते क्या हो?"

अपने दुश्मनों से लोहा लेने के लिए ऐसी चतुर चालें चलने के बाद आ Q खुशी-खुशी मदिरालय में जा पहुंचता और दो-चार पेग चढ़ाकर दूसरों से फिर हंसी-मजाक करता, फिर झगड़ा करता, फिर

विजयी होकर संरक्षक-देवता के मन्दिर में खुशी-खुशी लौट जाता ग्रौर तकिए पर सिर रखते ही गहरी नींद सो जाता। जब कभी उसकी जेब में पैसा होता तो जुग्रा खेलने पहुंच जाता। जुग्रारियों की टोली जमीन पर बैठी होती। उनके बीच ग्रा Q भी जा बैठता। उसके चेहरे से पसीना चू रहा होता ग्रौर वह सबसे ज्यादा जोर से चिल्ला उठता, "हरे नाग पर चार सौ!"

"बस, ग्रब खुल रही है बाजी!" पसीने से तर चेहरे वाला पणधर सन्दूकची खोल देता ग्रौर जोर से बोल पड़ता : " 'स्वर्ग का दरवाजा'! ... 'कोण' को कुछ नहीं मिला! ... 'लोकप्रियता मार्ग' का दांव खाली गया! ग्रा Q के पैसे मेरे हवाले कर दो!"

" 'मार्ग' – एक सौ – एक सौ पचास"।

इन शब्दों के साथ धीरे-धीरे ग्रा Q का सारा पैसा पसीने से तर ग्रन्य जुग्रारियों की जेब में पहुंच जाता। ग्रन्त में वह मजबूर होकर उनके बीच से बाहर निकल जाता ग्रौर पीछे बैठकर दूसरों की हार-जीत की चिन्ता करता हुग्रा खेल देखता रहता। ग्रौर जब खेल खत्म हो जाता तो बड़े बेमन से संरक्षक-देवता के मन्दिर में लौट जाता। ग्रगले दिन जब काम पर जाता तो उसकी ग्रांखें रतजगे के कारण सूजी हुई होतीं।

लेकिन एक बार जब ग्रा Q जीतने पर भी बदकिस्मती से ग्रन्त में हार गया, तो "सौभाग्य के वेष में दुर्भाग्य भी ग्रा सकता है" वाली कहावत सच साबित हो गई।

उस दिन वेइच्वाङ में देवताग्रों का उत्सव मनाया जा रहा था। शाम का वक्त था। रिवाज के मुताबिक एक नाटक खेला जा रहा था; ग्रौर रिवाज के ही मुताबिक, रंगमंच के निकट जुग्रा खेलने के लिए बहुत सी मेजें लगी हुई थीं। नाटक के ढोल-नगाड़ों की ग्रावाज ग्रा Q को ऐसी लग रही थी मानो तीन मील दूर से ग्रा रही हो। उसके कान सिर्फ पणधर की ग्रावाज की तरफ लगे हुए थे। बाजी बार-बार ग्रा Q के हाथ रही। उसके तांबे के सिक्के चांदी के सिक्कों में ग्रौर

चांदी के सिक्के डालरों में बदलते गए ; डालरों की ढेरी बढ़ती गई। वह खुशी से उछल पड़ा और जोर से चिल्लाया : "स्वर्ग के दरवाजे पर दो डालर!"

आ Q को यह कभी मालूम न हो सका कि किसने झगड़ा शुरू किया और क्यों झगड़ा शुरू हुआ। गाली-गलौज, लात-घूंसों की मार और भगदड़ के कोलाहल से उसका सिर चकरा गया और जब वह होश में आया तब तक सभी जुए की मेजें और जुआरियों की टोलियां नदारद हो चुकी थीं। उसके शरीर का अंग-अंग दुख रहा था ; मालूम होता था कि उसे भी लात-घूंसे लगे हैं। आसपास जमा बहुत से लोग आश्चर्य से उसकी ओर देख रहे थे। यह अनुभव करता हुआ कि उसकी कोई चीज खो गई है, वह संरक्षक-देवता के मंदिर में लौट गया और जब पूरी तरह होश में आया तब कहीं उसे महसूस हुआ कि उसकी डालरों की ढेरी गायब हो चुकी है। उत्सव में जुए की मेजें लगाने वाले ज्यादातर लोग दरअसल वेइच्वाङ के निवासी नहीं थे, इसलिए अपराधियों का पता कैसे लगाया जा सकता था?

चांदी के सिक्कों की कितनी उजली, कितनी चमकदार ढेरी थी वह! यह सारी की सारी रकम उसकी हो चुकी थी... लेकिन अब वह गायब हो गई है। यह सोचकर भी कि इसे उसके अपने ही बेटे ने चुरा लिया है, उसके मन को तसल्ली नहीं हो पाई। अपने आपको एक कीड़ा समझकर भी उसे चैन नहीं मिला। यह पहला मौका था जब उसे सचमुच पराजय की कटुता का स्वाद चखने को मिला।

किन्तु दूसरे ही क्षण उसने अपनी पराजय को विजय में बदल डाला। दायां हाथ ऊपर उठाकर उसने कसकर अपने मुंह पर दो थप्पड़ जड़ दिए, इतनी जोर से कि चेहरा दर्द से झनझना उठा। थप्पड़ खाने के बाद उसका दिल कुछ हल्का हो गया, क्योंकि उसे लगा मानो थप्पड़ मारने वाला तो वह खुद हो और थप्पड़ खाने वाला कोई और हो, और जल्दी ही उसे ऐसा लगा मानो उसने किसी अन्य व्यक्ति की पिटाई की हो — हालांकि उसका चेहरा अब भी दर्द से झनझना रहा

था। अपनी विजय पर सन्तुष्ट होकर वह लेट गया।

शीघ्र ही उसकी आंख लग गई।

अध्याय तीन

आ Q की अन्य विजयों का विवरण

हालांकि आ Q सदैव विजय प्राप्त करता जाता था, फिर भी उसे मशहूरी सिर्फ तभी हासिल हुई जब चाओ साहब ने उसके मुंह पर थप्पड़ मारने की इनायत फरमाई।

बेलिफ के हाथ में दो सौ तांबे के सिक्के रखने के बाद वह क्रोध से जमीन पर लेट गया। बाद में वह अपने आपसे कहने लगा : "आजकल दुनिया न मालूम कैसी हो गई है, बेटे अपने बाप को पीटने लगे हैं। . . ." तब वह चाओ साहब की प्रतिष्ठा के बारे में सोचने लगा, जिन्हें अब वह अपना बेटा समझने लगा था। धीरे-धीरे उसका जोश बुलन्द होता गया। वह उठा और "नौजवान विधवा अपने पति की कब्र पर" नामक गीत की पंक्तियां गुनगुनाता हुआ मदिरालय में जा पहुंचा। उस समय जरूर उसे यह महसूस हुआ कि चाओ साहब का दर्जा ज्यादातर लोगों से जरा ऊपर है।

यह कहते हैरानी होती है कि इस घटना के बाद सभी लोग आ Q की असाधारण रूप से इज्जत करने लगे। वह शायद यह समझता रहा कि लोग ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे उसे चाओ साहब का पिता समझते हैं। लेकिन वास्तविकता यह नहीं थी। वेइच्वाङ में दरअसल यह रिवाज था कि अगर सातवां बेटा आठवें बेटे को पीट दे अथवा अमुक ली अमुक चाङ को पीट दे तो कोई खास बात नहीं समझी जाती थी ; लेकिन जब पिटाई की घटना का सम्बन्ध चाओ साहब जैसे किसी महत्वपूर्ण व्यक्ति से होता तो गांववासी इसे चर्चा का विषय समझते थे। और जहां एक बार उन्होंने इसे चर्चा का

विषय समझ लिया तो पिटाई करने वाले के एक प्रसिद्ध व्यक्ति होने के कारण जिसकी पिटाई की जाती थी उसे भी पिटाई करने वाले की प्रसिद्धि का कुछ न कुछ प्रतिबिम्ब अवश्य प्राप्त हो जाता था। पक्के तौर पर कसूर हमेशा आ Q का ही माना जाता था, क्योंकि लोग यह समझते थे कि चाओ साहब हरगिज गलती नहीं कर सकते। लेकिन अगर आ Q ही कसूरवार था तो सभी लोग असाधारण रूप से उसकी इज्जत करते क्यों जान पड़ते थे? इसका कारण बताना कठिन है। इसका कारण शायद आ Q का यह कहना था कि वह भी चाओ परिवार का ही सदस्य है। हालांकि उसकी पिटाई की जा चुकी थी, फिर भी लोग शायद यह समझते थे कि उसकी बात में कुछ सच्चाई है, इसलिए उसके प्रति आदरपूर्ण व्यवहार करना ज्यादा सुरक्षित होगा। अथवा यह भी कहा जा सकता था कि यह मामला कनफ्यूशियस के किसी मन्दिर में बलि के रूप में चढ़ाए गए गोमांस की तरह है; हालांकि गोमांस भी शूकर अथवा भेड़-बकरी के मांस की ही तरह पशु का मांस होता है, फिर भी बाद में कनफ्यूशियसवादी सम्प्रदाय के अनुयायियों ने उसे छूने का साहस नहीं किया, क्योंकि कनफ्यूशियस स्वयं इसका सेवन कर चुके थे।

इसके बाद आ Q अनेक वर्षों तक सुख-चैन से रहा।

एक दिन वसन्त के मौसम में जब वह खुशी से झूमता हुआ जा रहा था तो उसने देखा कमर तक नंगे बदन मुछन्दर वाङ दीवाल के सहारे बैठा जूं निकाल रहा है। यह दृश्य देखकर आ Q को भी खुजली महसूस होने लगी। चूंकि मुछन्दर वाङ का शरीर दाद से पीड़ित था और उसके चेहरे पर लम्बी-लम्बी मूंछें थीं, इसलिए सभी लोग उसे "दाद वाला मुछन्दर वाङ" के नाम से पुकारते थे। आ Q "दाद वाला" शब्द का इस्तेमाल नहीं करता था, फिर भी वह मुछन्दर वाङ को बिलकुल नाचीज समझता था। आ Q सोचता था, दाद से पीड़ित होना कोई खास बात नहीं है, मगर दोनों गालों पर मूंछ के बालों के इतने ज्यादा गुच्छे होना सचमुच कितना भद्दा लगता है, सचमुच कितना

तुच्छ लगता है ! सो ग्रा Q उसकी बगल में जा बैठा। मगर कोई ग्रौर निठल्ला ग्रादमी होता तो ग्रा Q उसके पास इतनी लापरवाही से हरगिज न बैठता। मगर मुछन्दर वाङ के पास बैठने में उसे भला किस बात का डर था ? सच तो यह था कि ग्रा Q का वाङ के पास बैठना वाङ के लिए बड़े गौरव की बात थी।

ग्रा Q ने ग्रपनी ग्रस्तर वाली फटी-पुरानी जाकिट उतार ली ग्रौर उसे पलट डाला ; लेकिन काफी देर खोजने के बाद भी सिर्फ तीन-चार जूं ही निकाल पाया, कारण या तो यह था कि उसने ग्रपनी जाकिट हाल ही में धोई थी ग्रथवा यह कि वह खुद जूं पकड़ने में एकदम ग्रनाड़ी था। उसने देखा मुछन्दर वाङ ग्रब तक लगातार एक के बाद एक कई जूं पकड़ चुका है ग्रौर दांतों के बीच रखकर चट्ट की ग्रावाज के साथ उन्हें मार चुका है।

ग्रा Q को पहले निराशा हुई ग्रौर फिर गुस्सा ग्राने लगा : यह निकम्मा मुछन्दर वाङ इतनी ज्यादा जूं पकड़ चुका है जबकि मैं सिर्फ कुछ ही पकड़ पाया हूं – कितनी शर्म की बात है ! उसने एक-दो बड़ी जूं पकड़ने की कोशिश की, लेकिन कोई हाथ न ग्राई। बड़ी मुश्किल से वह एक दरमियाने ग्राकार की जूं पकड़ पाया, जिसे उसने बड़े रोष के साथ मुंह में डालकर दांत से कुचल दिया। लेकिन उसके पिचकने की ग्रावाज बड़ी धीमी थी, मुछन्दर वाङ की चट्ट की ग्रावाज के मुकाबले बिलकुल धीमी।

ग्रा Q के सिर के सारे निशान सुर्ख हो गए। उसने ग्रपनी जाकिट जमीन पर पटक दी ग्रौर उसकी तरफ थूककर बोला, "साला झबरीला कीड़ा !"

"ग्रबे खजुहे कुत्ते, गाली किसे बक रहा है ?" मुछन्दर वाङ ने तिरस्कारपूर्ण निगाह ऊपर उठाते हुए कहा।

पिछले कुछ वर्षों में ग्रा Q को जो ग्रपेक्षाकृत सम्मान प्राप्त हुग्रा था उसके कारण हालांकि उसका घमण्ड कुछ बढ़ गया था, लेकिन जब कभी मारपीट में माहिर लोफरों से पाला पड़ता तो वह बिलकुल भीगी

बिल्ली बन जाता। लेकिन ग्राज उसका मन झगड़ा करने को बेहद मचल रहा था। यह कैसे हो सकता था कि झबरीले गालों वाला यह कीड़ा उसकी तौहीन कर दे ?

"जिस किसी का नाम इससे मेल खाता हो," ग्रा Q ने उत्तर दिया। वह दोनों हाथ कमर पर रख तनकर खड़ा हो गया।

"ग्रबे क्या तेरी हड्डियां खुजला रही हैं ?" यह कहता हुग्रा मुछन्दर वाङ भी ग्रपना कोट पहन तनकर खड़ा हो गया।

यह सोचकर कि वाङ का इरादा भाग खड़े होने का है, ग्रा Q ने उस पर प्रहार करने के लिए ग्रपनी मुट्ठी तान ली। लेकिन मुट्ठी का प्रहार होने से पहले ही मुछन्दर वाङ ने उसे दबोच लिया ग्रौर इतने जोर का झटका दिया कि वह लड़खड़ा कर गिर पड़ा। इसके बाद मुछन्दर वाङ ने ग्रा Q की चुटिया पकड़कर उसे दीवाल की तरफ घसीटा, ताकि उसका सिर हमेशा की ही तरह दीवाल से टकराया जा सके।

"एक शरीफ ग्रादमी जबान इस्तेमाल करता है, हाथ नहीं !" ग्रा Q ने सिर टेढ़ा करके विरोध किया।

जाहिर है मुछन्दर वाङ कोई शरीफ ग्रादमी नहीं था, कारण ग्रा Q की बात पर जरा भी गौर किए वगैर उसने एक के बाद एक पांच बार उसका सिर दीवाल से दे मारा ग्रौर उसे इतने जोर का धक्का दिया कि वह लड़खड़ाता हुग्रा दो गज दूर जा गिरा। सिर्फ तभी मुछन्दर वाङ के दिल को तसल्ली हुई ग्रौर वह वहां से चला गया।

जहां तक ग्रा Q को याद है, यह उसकी जिन्दगी में पहला मौका था जबकि उसे इस तरह ग्रपमान का घूंट पीना पड़ा था। मुछन्दर वाङ के झबरीले गालों की वह हमेशा ही खिल्ली उड़ाया करता था, लेकिन वाङ ने उसका कभी उपहास तक नहीं किया था, मार-पीट करना तो दरकिनार। मगर ग्राज ग्राशा के विपरीत मुछन्दर वाङ ने उसकी पिटाई कर दी थी। शायद लोग बाजार में जो कुछ कह रहे थे वह सच था : "शाहंशाह ने सरकारी इम्तहान लेना बन्द कर दिया

है। जिन विद्वानों ने ये इम्तहान पास किए हैं उनकी अब जरूरत नहीं है।" सम्भवतः इसके परिणामस्वरूप चाओ परिवार की प्रतिष्ठा कम हो गई होगी। लोगों द्वारा आ Q के प्रति तिरस्कारपूर्ण रुख अपनाए जाने का कारण क्या यही तो नहीं था?

आ Q अस्थिर खड़ा था।

दूर से आ Q का एक और दुश्मन आ रहा था : यह छ्येन साहब का सबसे बड़ा लड़का था, जिससे आ Q भी घृणा करता था। शहर के एक विदेशी स्कूल में पढ़ने के बाद शायद वह जापान चला गया था। छै महीने बाद जब वह स्वदेश लौटा था तो तनकर चलने लगा था और अपनी चुटिया कटवा चुका था। उसकी मां दसियों बार रो चुकी थी और पत्नी तीन बार कुएं में छलांग लगाने की कोशिश कर चुकी थी। बाद में उसकी मां ने सबको बताया : "जब वह शराब के नशे में था तो किसी शोहदे ने उसकी चुटिया काट दी। अब तक वह न जाने कब अफसर बन गया होता, लेकिन अब उसे तब तक इन्तजार करना होगा जब तक चुटिया फिर नहीं उग जाती।" आ Q को उसकी बात पर यकीन नहीं हुआ था और वह बड़ी जिद के साथ उसे "नकली विदेशी दरिन्दा" और "विदेशी तनखाह पाने वाला देशद्रोही" कहता फिर रहा था। ज्यों ही आ Q उसे देखता, धीमी आवाज में गाली बकने लगता।

आ Q को उसकी जो चीज सबसे बुरी लगती थी वह थी नकली चुटिया। जिसकी चुटिया भी नकली हो ऐसे आदमी को भला इंसान कैसे कहा जा सकता था ; साथ ही चूंकि उसकी पत्नी ने चौथी बार कुएं में छलांग मारने की कोशिश नहीं की थी, इसलिए उसे भला एक अच्छी औरत कैसे कहा जा सकता था !

और अब वही "नकली विदेशी दरिन्दा" उसकी तरफ आ रहा था।

"गंजा . . . गधा . . ." पहले आ Q उसे सिर्फ धीमी आवाज में ही गाली दिया करता था, ताकि वह सुन न सके। लेकिन आज चूंकि उसका मिजाज ठीक नहीं था और वह अपने दिल की भड़ास निकालना



श्रौर श्रब वही "नकली विदेशी दरिन्दा" उसकी तरफ श्रा रहा था।

चाहता था, इसलिए ये शब्द उसके मुंह से अनायास ही जरा जोर से निकल गए।

" बदकिस्मती से वह "गंजा" एक चमकदार भूरी छड़ी लिए था, जिसे आ Q "मातमपुर्सी करने वाले की छड़ी" कहता था। लम्बे कदम बढ़ाता हुआ वह आ Q पर टूट पड़ा, जो पहले से ही यह अनुमान लगाकर कि उसे मार अवश्य पड़ने वाली है अपनी पीठ तानकर पिटाई की प्रतीक्षा कर रहा था। निश्चय ही बड़े जोर से चटाक की आवाज हुई और ऐसा लगा मानो छड़ी से सिर पर चोट की गई हो।

"मैंने तो उसके लिए कहा था।" पास ही खड़े एक बच्चे की ओर इशारा करते हुए आ Q ने सफाई पेश की।

चटाक! चटाक!! चटाक!!!

जहां तक आ Q को याद है, यह उसकी जिन्दगी में दूसरा मौका था जबकि उसे अपमान का घूंट पीना पड़ा था। खुशकिस्मती से जब पिटाई खत्म हो गई तो उसे लगा मामला खत्म हो चुका है। उसे कुछ राहत महसूस हुई। साथ ही अपनी उस मूल्यवान "भूल जाने की क्षमता" के कारण, जो उसे अपने पूर्वजों से विरासत के रूप में प्राप्त हुई थी, उसे बड़ा फायदा हुआ। वह धीरे-धीरे आगे बढ़ गया और मदिरालय के दरवाजे तक पहुंचते-पहुंचते काफी खुश नजर आने लगा।

तभी एक छोटी-सी भिक्षुणी "शान्त आत्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार" से उसकी तरफ आती दिखाई दी। भिक्षुणी को देखते ही आ Q के मुंह से गाली निकल जाती थी। आज इतना अपमानित होने के बाद वह भला उसे गाली दिए बगैर कैसे रह सकता था? जब उसे अपने अपमान की बात याद आई तो उसका पारा फिर से चढ़ने लगा।

"अच्छा, तो आज मुझे बदकिस्मती का सामना इसलिए करना पड़ा क्योंकि इसकी शकल देखनी थी!" उसने मन ही मन कहा।

भिक्षुणी के निकट पहुंचकर उसने जोर से खखारकर थूका: "आख थू! ... आख थू!"

छोटी-सी भिक्षुणी उसकी ओर जरा भी ध्यान दिए बिना सिर नीचा

करके चलती रही। ग्रा Q उसके पास जा पहुंचा ग्रौर हाल ही में मूंडे हुए उसके सिर पर हाथ फेरता हुग्रा पागल की तरह ग्रट्टहास करके बोला : "ग्ररे ग्रो गंजी, जल्दी जा। तेरा भिक्षु तेरी वाट जोह रहा होगा। . . ."

"कौन हो जी तुम मुझे छूने वाले ? . . ." भिक्षुणी ने कहा। उसका चेहरा लज्जा से लाल हो उठा ग्रौर कदम तेजी से उठने लगे।

मदिरालय में उपस्थित लोग खिलखिलाकर हंस पड़े। यह देखकर कि उसका कारनामा लोगों ने पसंद किया है, ग्रा Q को बड़ी खुशी हुई।

"ग्रगर तुझे तेरा भिक्षु छू सकता है तो भला मैं क्यों नहीं छू सकता ?" यह कहते हुए उसने भिक्षुणी का गाल मसल डाला।

एक बार फिर मदिरालय में उपस्थित लोग खिलखिलाकर हंस पड़े। ग्रा Q ग्रौर ज्यादा खुशी महसूस करने लगा ग्रौर जो लोग दाद दे रहे थे उन्हें ग्रौर ग्रच्छी तरह सन्तुष्ट करने के लिए उसने फिर एक बार भिक्षुणी का गाल जोर से मसल डाला। तब कहीं उसे जाने दिया।

इस घटना के दौरान वह मुछन्दर वाङ ग्रौर नकली विदेशी दरिन्दे को बिलकुल भूल चुका था। उसे लगा मानो सारे दिन की दुर्भाग्यपूर्ण घटनाग्रों का बदला ले चुका हो। ग्रौर ताज्जुब की बात यह थी कि मार खाने के बाद के मुकाबले ग्रब वह कहीं ज्यादा तनावशून्य, कहीं ज्यादा हल्का ग्रौर कहीं ज्यादा प्रफुल्लित ग्रनुभव कर रहा था, मानो हवा में तैरने को तैयार हो।

"ग्रा Q, तू निपूता ही मर जाए!" छोटी-सी भिक्षुणी ने दूर जाकर रुग्रांसी ग्रावाज में कोसा।

ग्रा Q एक बार फिर खिलखिलाकर हंस पड़ा।

मदिरालय में उपस्थित लोग भी खिलखिलाकर हंस पड़े, हालांकि उन्हें ग्रा Q से कम ही तसल्ली हुई।

अध्याय चार

प्रेम की दुखान्त कहानी

कुछ विजेता ऐसे होते हैं जो अपनी विजय से तब तक खुश नहीं होते जब तक उनके प्रतिद्वन्द्वी बाघ या बाज की तरह खूंखार न हों; अगर उनके प्रतिद्वन्द्वी भेड़-बकरी या मुर्गी की तरह डरपोक हों, तो उन्हें अपनी विजय बिलकुल खोखली जान पड़ती है। कुछ दूसरे विजेता ऐसे होते हैं जो अपने सभी प्रतिद्वन्द्वियों को पछाड़कर, सभी दुश्मनों को मौत के घाट उतारकर अथवा उनसे आत्मसमर्पण करवाकर और बिलकुल नाक रगड़वाकर, यह महसूस करने लगते हैं कि अब उनका कोई दुश्मन, प्रतिद्वन्द्वी या दोस्त नहीं रहा – केवल स्वयं ही रह गए हैं, सर्वोच्च, एकाकी, निराश और परित्यक्त। तब वे अपनी विजय को एक दुखान्त घटना समझने लगते हैं। लेकिन हमारा नायक इतना बलहीन नहीं था। वह सदैव विजयोल्लास से परिपूर्ण रहता था। यह शायद इस बात का प्रमाण था कि चीन नैतिक दृष्टि से बाकी दुनिया के मुकाबले श्रेष्ठ है।

जरा आ Q को तो देखिए! वह कितना हल्का और प्रफुल्लित अनुभव कर रहा है, मानो उड़ने को तैयार हो!

यह विजय वास्तव में विचित्र परिणामों से रहित न थी। काफी समय तक उसे ऐसा महसूस होता रहा मानो उड़ने को तैयार हो, और जल्दी ही वह उड़ता हुआ संरक्षक-देवता के मन्दिर में जा पहुंचा, जहां वह अक्सर लेटते ही खर्राटे मारने लगता था। लेकिन आज रात उसकी आंखों से नींद गायब हो चुकी थी, कारण उसे अनुभव हो रहा था कि उसके अंगूठे और तर्जनी को न मालूम क्या हो गया है। उनमें आम दिनों के मुकाबले अधिक कोमलता आ गई थी। यह कहना मुश्किल था कि उस छोटी-सी भिक्षुणी के चेहरे की कोई मुलायम व कोमल वस्तु उसकी उंगलियों से चिपक गई थी अथवा भिक्षुणी के गालों की रगड़ से उसकी उंगलियां मुलायम हो गई थीं।

"ग्रा Q, तू निपूता ही मर जाए!"

ये शब्द ग्रा Q के कानों में बार-बार गूंज रहे थे। वह सोचने लगा, "ठीक है, मेरी भी पत्नी होनी चाहिए; कारण, ग्रगर कोई ग्रादमी निपूता ही मर जाए तो मृतात्मा को पिण्डदान कौन करेगा? ... मेरी पत्नी ग्रवश्य होनी चाहिए।" जैसी कि कहावत है, "ग्रपुत्रोचित ग्राचरण के तीन रूप होते हैं, जिनमें सबसे निकृष्ट रूप है सन्तानहीन होना"।* यह बड़े दुर्भाग्य की बात है कि "सन्तानहीन मृतात्मा भूखी ही रह जाती है।"** स्पष्ट है कि उसके विचार ऋषि-मुनियों की शिक्षा के बिलकुल ग्रनुकूल थे। लेकिन बड़े दुख की बात है कि बाद में उसके सिर पर पागलपन सवार हो बैठा।

"ग्रौरत, ग्रौरत! ..." उसने सोचा।

"... वह भिक्षु उसका स्पर्श करता है... ग्रौरत, ग्रौरत! ... ग्रौरत!" उसने फिर सोचा।

हम यह कभी नहीं जान पाएंगे कि उस रात ग्रा Q कब सो सका। मगर इसके बाद शायद हमेशा ही उसे ग्रपनी उंगलियां जरा कोमल ग्रौर मुलायम ग्रनुभव होने लगीं, उसके मस्तिष्क में एक उन्माद-सा छाने लगा। "ग्रौरत..." वह लगातार सोचता गया।

इससे हम देख सकते हैं कि ग्रौरत मानव जाति के लिए एक ग्रभि-शाप है।

चीन के ग्रधिकांश पुरुषों को यदि स्त्रियां बरबाद न कर देतीं तो शायद वे ऋषि-मुनि बन गए होते। शाङ राजवंश का विनाश ता ची ने किया था ग्रौर चग्रो राजवंश का उन्मूलन पाग्रो स ने किया था; जहां तक छिन राजवंश का सवाल है, हालांकि इस बात का ऐतिहासिक प्रमाण मौजूद नहीं है, फिर भी ग्रगर हम यह मान लें कि इसका पतन भी किसी ग्रौरत के ही कारण हुग्रा तो शायद ज्यादा गलत नहीं होगा।

---

* मेनशियस (३७२-२८६ ईसापूर्व) का एक उद्धरण।

** प्राचीन ग्रंथ "ज्वो ज्वान" का एक उद्धरण।

ग्रौर यह सच है कि तुङ च्वो की मृत्यु का कारण भी त्याग्रो छान ही थी।*

ग्रा Q भी शुरू में बड़े पक्के नैतिक मूल्यों वाला ग्रादमी था। हालांकि हमें इस बात की जानकारी नहीं है कि उसका मार्गदर्शन किसी ग्रच्छे शिक्षक ने किया था ग्रथवा नहीं, वह "स्त्री-पुरुष को सख्ती के साथ एक दूसरे से पृथक रखने" के सिद्धान्त का हमेशा बड़ी ईमानदारी से पालन करता था तथा छोटी-सी भिक्षुणी ग्रौर नकली विदेशी दरिन्दे के पाखण्डीपन की ईमानदारी से भर्त्सना करने में कभी पीछे नहीं रहता था। उसकी राय थी, "सभी भिक्षुणियां गुप्त रूप से भिक्षुग्रों के साथ नाजायज ताल्लुकात रखती हैं। ग्रगर कोई ग्रौरत रास्ते में ग्रकेली चल रही हो, तो वह जरूर बुरे मर्दों को फुसलाना चाहती है। जव कोई मर्द ग्रौर ग्रौरत ग्रापस में बात कर रहे हों तो वे दोनों जरूर ग्रपनी मुलाकात का स्थान व समय निश्चित कर रहे होंगे।" इस तरह के लोगों को सुधारने के लिए वह उन्हें बड़े खूंखार ढंग से घूरता था, ऊंची ग्रावाज में तीखा व्यंग्य करता था, ग्रथवा यदि एकान्त हो तो पीछे से पत्थर तक मार देता था।

कौन कह सकता था कि लगभग तीस वर्ष की उम्र में, जबकि एक ग्रादमी को "दृढ़ता से खड़ा"** होना चाहिए, वह इस तरह एक छोटी-सी भिक्षुणी पर फिसल जाएगा ? शास्त्रों के ग्रनुसार इस प्रकार का हल्कापन ग्रत्यन्त निन्दनीय होता है ; स्त्री सचमुच ही घृणा की पात्र होती है। कारण, यदि उस छोटी-सी भिक्षुणी का चेहरा कोमल व मुलायम न होता तो ग्रा Q उस पर मोहित न होता ; यदि उसका चेहरा किसी कपड़े से ढका होता, तो भी ऐसी स्थिति न ग्राती। ग्राज

---

* ता ची ईसापूर्व बारहवीं शताब्दी में शाङ राजवंश के ग्रन्तिम राजा की रखैल थी। पाग्रो स ईसापूर्व ग्राठवीं शताब्दी में पश्चिमी चग्रो राजवंश के ग्रन्तिम राजा की रखैल थी। त्याग्रो छान ईसापूर्व तीसरी शताब्दी के एक शक्तिशाली मंत्री तुङ च्वो की रखैल थी।

** कनफ्यूशियस ने कहा था कि वह तीस वर्ष की ग्रायु में "दृढ़ता से खड़ा" है। बाद में इस वाक्यांश का प्रयोग तीस वर्ष की उम्र बताने के लिए होने लगा।

से पांच-छै साल पहले खुले मंच पर ग्रापेरा देखते समय उसने एक दर्शक स्त्री की टांग पर चुटकी काट ली थी।

लेकिन चूंकि उसकी टांगें पाजामे से ढकी थीं, इसलिए उस घटना के बाद ग्रा Q को ऐसे उन्माद की ग्रनुभूति नहीं हुई थी जैसी कि ग्राज हो रही है। छोटी-सी भिक्षुणी का चेहरा ढका हुग्रा नहीं था, जो उसके घिनौने पाखण्डीपन का एक ग्रन्य प्रमाण था।

"ग्रौरत . . ." ग्रा Q सोचता रहा।

वह उन ग्रौरतों पर कड़ी नजर रखता जिनके बारे में उसे यह ख्याल होता कि वे "बुरे मर्दों को फुसलाना चाहती हैं।" मगर वे उसकी तरफ देखकर मुस्कराती ही नहीं थी। जब कभी कोई ग्रौरत उससे बात करती तो वह बड़े गौर से सुनता था, मगर ग्रब तक उसे एक भी ग्रौरत ऐसी नहीं मिली थी जिसने उससे गुप्त रूप से मिलने-जुलने के बारे में कोई बात कही हो। ग्रोह! यह ग्रौरत के घिनौनेपन का एक ग्रन्य प्रमाण है; वे सब दरग्रसल एक झूठी शालीनता का लबादा ग्रोढ़े रहती हैं।

एक दिन जब ग्रा Q चाग्रो साहब के घर चावल पीस रहा था, तो रात का भोजन करने के बाद वह रसोइघर में बैठकर चिलम सुलगाने लगा। ग्रगर किसी ग्रौर का घर होता तो भोजन के बाद वह फौरन घर लौट गया होता। लेकिन चाग्रो परिवार के लोग रात का खाना जरा जल्दी खा लेते थे। हालांकि वहां यह नियम था कि खाना खाने के बाद कोई रोशनी नहीं कर सकता था ग्रौर सब लोग बिस्तर में पहुंच जाते थे, मगर कभी-कभी इसका ग्रपवाद भी देखने को मिलता था। चाग्रो साहब के बेटे को काउन्टी की सरकारी परीक्षा पास करने से पहले इस बात की इजाजत थी कि वह रोशनी करके परीक्षा में ग्राने वाले निबन्धों की तैयारी करे; इसी तरह जब ग्रा Q वहां काम करने जाता था तो उसे इस बात की इजाजत थी कि चावल पीसने के लिए रोशनी किए रखे। इस ग्रपवाद के कारण ग्रपना काम शुरू करने के पहले ग्रा Q ग्रब भी रसोईघर में बैठा चिलम पी रहा था।

चाम्रो परिवार की एकमात्र नौकरानी ग्रामा ऊ ने जव घर के वर्तन-भांडे मांज लिए तो वह भी लम्बे बेंच पर बैठकर ग्रा Q से बातें करने लगी :

"मालकिन ने दो दिन से कुछ नहीं खाया, क्योंकि मालिक रखैल लाना चाहते हैं। . . ."

"ग्रौरत . . . ग्रामा ऊ . . . यह छोटी-सी विधवा," ग्रा Q ने सोचा।

"हमारी नौजवान मालकिन ग्राठवें चन्द्र-मास में वच्चा जनने वाली हैं। . . ."

"ग्रौरत . . ." ग्रा Q सोचता रहा।

उसने ग्रपनी चिलम एक तरफ रख दी ग्रौर उठ खड़ा हुग्रा।

"हमारी नौजवान मालकिन . . ." ग्रामा ऊ बोलती गई।

"ग्रा, मेरे साथ सो जा !" ग्रा Q ने ग्रचानक कहा ग्रौर ग्रागे बढ़कर उसके पैरों पर गिर पड़ा।

एक क्षण के लिए वहां बिलकुल सन्नाटा छा गया।

"हाय मां !" ग्रामा ऊ ग्रवाक् रह गई। सहसा वह कांप उठी ग्रौर चीखती हुई वहां से भाग खड़ी हुई। कुछ देर बाद उसके रोने-सिसकने की ग्रावाज ग्राने लगी।

दीवाल के सामने घुटनों के बल बैठा ग्रा Q भी ग्रवाक् रह गया। खाली बेंच को दोनों हाथों से थामकर वह धीरे-धीरे उठा। उसे एक धुंधला-सा ग्राभास हो रहा था कि कुछ न कुछ घपला ग्रवश्य हो गया है। वास्तव में इस समय वह खुद भी बहुत घबराया हुग्रा था। हड़बड़ाकर उसने ग्रपनी चिलम कमरबन्द में खोंस ली ग्रौर चावल पीसने के लिए जाने लगा। लेकिन तभी किसी ने जोर से उसके सिर पर प्रहार किया। घूमकर देखा तो काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीद-वार सामने खड़ा दिखाई दिया। उसके हाथ में एक लम्बा-सा बांस था।

"तुझे हिम्मत कैसे हुई . . . इतनी हिम्मत कैसे हुई ? . . ."

लम्बा बांस ग्रा Q के कन्धों के ऊपर पहुंच गया। जब उसने ग्रपना सिर दोनों हाथों से ढक लिया तो प्रहार उसकी उंगलियों की पोरों पर

पड़ा। वह दर्द से कराह उठा। जब वह रसोईघर के दरवाजे से भाग रहा था तो उसे लगा पीठ पर भी बांस का प्रहार हुआ है।

"अबे ओ कछुए की औलाद!" सफल उम्मीदवार ने पीछे से टकसाली जबान में जोर से गाली दी।

आ Q भागकर धान कूटने के दालान में जा पहुंचा। वहां वह अकेला ही खड़ा था। उसकी उंगलियों की पोरों में अब भी दर्द हो रहा था। "कछुए की औलाद" – ये शब्द उसके कानों में अब भी गूंज रहे थे। यह गाली वेइच्वाङ के आम गांववासी कभी इस्तेमाल नहीं करते थे। इसे सिर्फ वे धनी लोग ही इस्तेमाल करते थे जो किसी न किसी रूप में सरकारी अफसर रह चुके थे। इसकी वजह से वह और अधिक डर गया था और इस घटना का उसके दिमाग पर बेहद गहरा असर पड़ा था। अब तक "औरत..." के बारे में सभी तरह के विचार उसके दिमाग से रफूचक्कर हो चुके थे। गालियां और मार खाने के बाद उसे ऐसा लगने लगा था मानो वह सारा मामला खत्म हो चुका हो। प्रफुल्लित होकर वह फिर से चावल पीसने लगा। कुछ देर चावल पीसने के बाद उसे गरमी लगने लगी और वह अपनी कमीज उतारने के लिए रुक गया।

जब आ Q अपनी कमीज उतार रहा था तो उसे बाहर कोलाहल सुनाई दिया। चूंकि आ Q को हर तरह की सरगरमी में शामिल होना पसन्द था, इसलिए कोलाहल का पता लगाता हुआ वह बाहर निकल गया। वह सीधा चाओ साहब के भीतरी आंगन में जा पहुंचा। हालांकि सन्ध्या का समय हो चुका था, फिर भी बहुत से लोग वहां जमा थे। चाओ परिवार के सभी लोग मौजूद थे जिनमें वह मालकिन भी थी जिसने दो दिन से खाना नहीं खाया था। इसके अलावा पड़ोसिन श्रीमती चओ और सम्बन्धी चाओ पाए-येन व चाओ स-छन भी उपस्थित थे।

नौजवान मालकिन आमा ऊ को नौकरों के कमरे से बाहर ले जाती हुई कह रही थीं :

"बाहर चल . . . अपने कमरे में बैठकर दुखी क्यों हो रही है ?"

"हर आदमी जानता है कि तू एक नेक औरत है", श्रीमती चओ बगल से बोलीं। "तुझे खुदकशी का विचार दिमाग से निकाल देना चाहिए।"

आमा ऊ रोती-चिल्लाती रही और मन ही मन कुछ बड़बड़ाती रही।

"यह खूब तमाशा है," आ Q ने सोचा। "यह छोटी-सी विधवा न जाने क्या-क्या गुल खिलाना चाहती है ?" कारण पता लगाने के लिए वह चाओ स-छन के पास जा ही रहा था कि अचानक उसकी नजर चाओ साहब के बड़े लड़के पर पड़ी, जो लम्बा बांस हाथ में उठाए उसकी तरफ बढ़ रहा था। लम्बे बांस को देखते ही उसे याद आ गया कि इससे उसकी पिटाई हो चुकी है और वह समझ गया कि यहां जो घपला मचा हुआ है उसका किसी न किसी रूप में उसके अपने साथ अवश्य ताल्लुक है। वह पीछे मुड़ा और भाग खड़ा हुआ, इस उम्मीद से कि धान कूटने के आंगन में जा छिपेगा, लेकिन यह नहीं सोच सका कि लम्बा बांस उसे पीछे नहीं लौटने देगा। इसके बाद वह फिर से मुड़ा और दूसरी दिशा में भागता हुआ बिना कोई बखेड़ा खड़ा किए पिछले दरवाजे से बाहर चला गया। कुछ ही समय में वह संरक्षक-देवता के मन्दिर में जा पहुंचा।

कुछ देर बैठने के बाद आ Q ठंड से ठिठुरने लगा और उसके रोंगटे खड़े हो गए। कारण, यद्यपि वसन्त आ चुका था फिर भी रातें काफी ठण्डी थीं और पीठ नंगी नहीं रखी जा सकती थी। उसे याद आया कि उसकी कमीज चाओ परिवार के घर रह गई है। डर था कि अगर उसे लेने गया तो सफल उम्मीदवार के लम्बे बांस की मार का स्वाद कहीं फिर न चखना पड़े।

और तभी बेलिफ अन्दर आ पहुंचा।

"तेरा सत्यानाश हो आ Q के बच्चे !" बेलिफ ने कहा। "अबे ओ बागी, तू चाओ परिवार की नौकरानी पर हाथ साफ करने से

बाज नहीं ग्राएगा क्या ? तूने तो मेरी नींद ही हराम कर दी है। तेरा सत्यानाश हो ! ..."

इस तरह गालियों की बौछार होने पर यह स्वाभाविक था कि ग्रा Q चुप रहता। ग्रन्त में, चूंकि रात का वक्त था इसलिए ग्रा Q को बेलिफ के हाथ में दुगुने पैसे, यानी चार सौ तांबे के सिक्के रखने थे। लेकिन चूंकि उसके पास एक दमड़ी भी नहीं थी, इसलिए उसने ग्रपनी फैल्ट-हैट जमानत के तौर पर देकर नीचे लिखी पांच शर्तें मंजूर कर लीं :

१. ग्रगले दिन सुबह ग्रा Q कोई एक पौण्ड वजन वाली दो लाल मोमबत्तियां ग्रौर एक बण्डल ग्रगरबत्तियां चाग्रो परिवार के पास भेजकर ग्रपने पाप का प्रायश्चित्त करेगा।
२. ताग्रो धर्म के उस पुजारी की दक्षिणा ग्रा Q देगा जिसे चाग्रो परिवार ने भूत-प्रेतों को भगाने के लिए बुलाया है।
३. भविष्य में ग्रा Q चाग्रो परिवार के घर में हरगिज कदम नहीं रखेगा।
४. ग्रगर ग्रामा ऊ को बदकिस्मती से कुछ हो गया, तो उसके लिए ग्रा Q को ही जिम्मेदार ठहराया जाएगा।
५. ग्रा Q ग्रपनी मजूरी ग्रौर कमीज लेने चाग्रो परिवार के घर नहीं जाएगा।

जाहिर है, ग्रा Q ने ये सारी शर्तें मान लीं, लेकिन ग्रफसोस की बात कि उसके पास नकद पैसा बिलकुल नहीं था। भाग्यवश वसन्त का मौसम ग्रा चुका था ग्रौर रूई के लिहाफ के बिना भी गुजारा हो सकता था। इसलिए उसने ग्रपना रूई का लिहाफ दो हजार तांबे के सिक्कों के बदले गिरवी रखकर उक्त तमाम शर्तें मान लीं। ग्रपनी नंगी पीठ झुकाकर नाक रगड़ने के बाद भी ग्रा Q के पास कुछ तांबे के सिक्के बाकी रह गए थे। लेकिन उन्हें देकर बेलिफ से ग्रपनी फैल्ट-हैट छुड़ाने के बदले उसने यह सारा पैसा शराब में उड़ा दिया।

चाम्रो परिवार ने वास्तव में न तो ग्रा Q की दी हुई ग्रगरबत्तियां जलाईं ग्रौर न मोमबत्तियां। चूंकि उनका इस्तेमाल मालकिन भगवान बुद्ध की पूजा के लिए कर सकती थीं, इसलिए उन्हें ग्रलग रख दिया गया। ग्रा Q की फटी-पुरानी कमीज से नौजवान मालकिन के उस बच्चे की लंगोटियां बना दी गईं जो ग्राठवें चन्द्र-मास में पैदा हुग्रा। बचे-खुचे चिथड़ों से ग्रामा ऊ ने ग्रपने जूते का सोल तैयार कर लिया।

ग्रध्याय पांच

जीविका की समस्या

चाग्रो परिवार के सामने नाक रगड़ने ग्रौर उसकी सारी शर्तें मान लेने के बाद ग्रा Q हमेशा की ही तरह संरक्षक-देवता के मन्दिर में लौट गया। सूरज डूब चुका था। उसे कुछ ग्रजीब-सा लग रहा था। काफी सोच-विचार करने के बाद वह इस नतीजे पर पहुंचा कि शायद पीठ नंगी होने के कारण ही उसे ऐसा महसूस हो रहा है। उसे याद ग्राया उसके पास एक फटी-पुरानी ग्रस्तर वाली जाकिट ग्रब भी मौजूद है। वह जाकिट पहनकर लेट गया। ग्रांख खुली तो देखा सूरज की रोशनी पश्चिमी दीवार के ऊपर तक पहुंच चुकी है। "ग्ररे, सत्यानाश हो गया . . ." कहता हुग्रा वह उठ बैठा।

उठने के बाद वह हमेशा की ही तरह गली-कूचों में ग्रावारागर्दों की तरह घूमने लगा। उसे फिर एक बार कुछ ग्रजीब-सा लगने लगा, हालांकि इसकी तुलना नंगी पीठ के कारण होने वाली शारीरिक ग्रसुविधा से नहीं की जा सकती थी। जाहिर था कि उस दिन के बाद वेइच्वाङ की सभी ग्रौरतें ग्रा Q से कतराने लगीं ; जब भी उसे ग्राता हुग्रा देखतीं घर के भीतर शरण ले लेतीं। यहां तक कि श्रीमती चग्रो भी, जो लगभग पचास की हो चुकी थीं, उसे देखते ही घबराकर बाकी ग्रौरतों के साथ घर के भीतर घुस गईं ग्रौर उन्होंने ग्रपनी ग्यारह वर्ष की लड़की को

भी भीतर बुला लिया। यह सब आ Q को बड़ा अजीब-सा लगा। "कुतिया कहीं की!" उसने सोचा। "ये औरतें अचानक नई-नवेलियों की तरह शर्म करने लगी हैं।..."

लेकिन जब कई दिन बीत गए तो उसे और भी ज्यादा अजीब-सा लगने लगा। पहले, मदिरालय वाले ने उसे उधार देना बन्द कर दिया; दूसरे, संरक्षक-देवता के मन्दिर के बूढ़े पुजारी ने उससे कुछ ऐसी कड़वी बातें कहीं जिनसे ऐसा लगा मानो वह आ Q को वहां से निकालना चाहता हो; तीसरे, कई दिनों तक – उसे ठीक-ठीक याद नहीं कितने दिनों तक – उसे मजूरी के लिए बुलाने एक भी आदमी नहीं आया। मदिरालय में उधार मिलना बन्द होने पर भी वह काम चला सकता था; बूढ़े पुजारी द्वारा बार-बार मन्दिर से निकलने के लिए कहे जाने के बावजूद आ Q उसकी शिकायतों की उपेक्षा कर सकता था; लेकिन अगर मजूरी के लिए बुलाने कोई नहीं आया तो क्या वह भूखों मरेगा? यह स्थिति सचमुच एक "अभिशाप" बनकर आ गई थी।

जब हालात आ Q के बरदाश्त के बाहर हो गए, तो वह उन घरों में गया जहां उसे नियमित रूप से काम मिलता रहता था – सिर्फ चाओ साहब के मकान को छोड़कर जिसकी दहलीज पार करने की इजाजत उसे नहीं थी – ताकि मालूम कर सके आखिर बात क्या है। लेकिन हर जगह लोग उसके साथ अजीबोगरीब ढंग से पेश आए। घर से बाहर आने वाला आम तौर पर पुरुष ही होता था, जो बेहद चिढ़ा हुआ जान पड़ता था और आ Q को इस तरह दुतकारता था मानो कोई भिखारी हो:

"यहां तुझे कुछ नहीं मिलेगा, कुछ भी नहीं! दफा हो जा यहां से!"

आ Q को यह सब देखकर और भी ज्यादा आश्चर्य होने लगा। "इन लोगों को पहले अपने काम में मदद के लिए जरूर किसी न किसी की आवश्यकता होती थी," उसने सोचा। "अचानक यह कैसे हो सकता है कि इनके पास कोई भी काम न रह गया हो। जरूर दाल में कुछ काला है।" अच्छी तरह पूछताछ करने पर पता चला कि जब भी

उनके यहां कोई छोटा-मोटा काम होता तो वे लोग नौजवान D को बुला लाते। नौजवान D एक दुबला-पतला, कमजोर कंगाल व्यक्ति था जो आ Q की नजरों में मुछंदर वाङ से भी गया-बीता था। कौन जानता था कि यह निचले दर्जे का आदमी उसकी रोजी छीन लेगा। इसलिए इस बार आ Q का रोष आम दिनों के मुकाबला कहीं ज्यादा भड़क उठा। रास्ते में चलते-चलते वह गुस्से से उबल पड़ा और अचानक हाथ उठाकर गाने लगा: "हड्डी-पसली चूर तुम्हारी लोहे की छड़ से कर दूंगा! ..."*

कुछ दिनों बाद छ्येन साहब के मकान के सामने उसकी मुलाकात नौजवान D से हो गई। "जब दो शत्रु मिलते हैं तो उनकी आंखों से अंगारे बरसने लगते हैं।" जब आ Q करीब पहुंचा तो नौजवान D निस्तब्ध खड़ा रह गया।

"अबे ओ पाजी गधे!" आ Q ने फुंफकारा। उसकी आखें आग उगल रही थीं और मुंह से झाग निकल रही थी।

"मैं एक कीड़ा हूं – बस, इससे ज्यादा और क्या चाहते हो? ..." नौजवान D ने कहा।

उसकी इस नम्रता से आ Q का पारा और ज्यादा चढ़ गया। लेकिन चूंकि उसके पास लोहे की छड़ नहीं थी, इसलिए वह हाथ फैलाकर सिर्फ नौजवान D की चुटिया पकड़ने के लिए झपटा। नौजवान D एक हाथ से अपनी चुटिया की रक्षा करता हुआ दूसरे हाथ से आ Q की चुटिया पकड़ने के लिए आगे बढ़ा। इस पर आ Q ने भी खाली हाथ से अपनी चुटिया बचाने की कोशिश की। आ Q ने नौजवान D को पहले कभी कुछ नहीं समझा था, मगर चूंकि कुछ समय से आ Q भुखमरी का सामना कर रहा था, इसलिए वह भी अपने प्रतिद्वन्द्वी की ही तरह दुबला-पतला और कमजोर हो गया था। इस तरह दोनों

---

* "नाग और बाघ की लड़ाई" नामक आपेरा की एक पंक्ति। यह आपेरा शाओशिङ में काफी लोकप्रिय है। इसमें बताया गया है कि सुङ राजवंश के प्रथम सम्राट चाओ क्वाङ-इन ने एक अन्य सेनापति से कैसे युद्ध किया था।

ही बराबर के प्रतिद्वन्द्वी लग रहे थे। चार हाथों ने दो सिर थामे हुए थे, दोनों आदमी कमर झुकाए हुए थे और कोई आधे घण्टे तक छ्येन परिवार की सफेद दीवार पर उनकी नीली इन्द्रधनुषाकार छाया पड़ती रही।

"बहुत हो चुका! बस करो!" कुछ दर्शकों ने कहा। वे शायद उनके बीच सुलह कराना चाहते थे।

"बहुत अच्छा, बहुत खूब!" कुछ अन्य दर्शकों ने कहा। लेकिन यह साफ-साफ मालूम न हो सका कि उनका उद्देश्य क्या था – सुलह कराना, लड़ाई करने वालों की प्रशंसा करना अथवा उन्हें और ज्यादा लड़ने के लिए उकसाना।

मगर दोनों ही योद्धाओं ने उन सबकी एक न सुनी। अगर आ Q तीन कदम आगे बढ़ता तो नौजवान D तीन कदम पीछे हट जाता, इसके बाद दोनों स्थिर खड़े रहते। अगर नौजवान D तीन कदम आगे बढ़ता तो आ Q तीन कदम पीछे हट जाता, इसके बाद दोनों फिर से स्थिर खड़े रहते। लगभग आधे घण्टे बाद – वेइच्वाङ में सिर्फ गिनीचुनी ही घड़ियां ऐसी थीं जो टन्न की आवाज के साथ घण्टा बजाती थीं, इसलिए ठीक समय बताना मुश्किल है; हो सकता है बीस ही मिनट हुए हों – उनके सिर से भाप उठने लगी और चेहरों पर पसीने की धार बहने लगी। आ Q ने अपने हाथ पीछे खींच लिए। उसी क्षण नौजवान D ने भी अपने हाथ पीछे खींच लिए। दोनों ने एक साथ कमर सीधी की, दोनों एक साथ पीछे हटे और भीड़ को चीरते हुए निकल गए।

"तेरी खबर फिर कभी लूंगा, कमीने! ..." आ Q ने उसे कोसते हुए कहा।

"मैं भी तेरी खबर फिर कभी लूंगा, कमीने! ..." नौजवान D ने भी वही वाक्य दोहराया।

इस महायुद्ध में न तो किसी की विजय हुई और न पराजय; यह भी मालूम न हो सका कि दर्शकों को इससे सन्तोष हुआ या नहीं, क्योंकि

उनमें से एक भी ग्रादमी ने ग्रपनी राय जाहिर नहीं की। यह सब होने के वावजूद ग्रा Q को रोजगार देने कोई नहीं ग्राया।

एक दिन जब मौसम में कुछ गरमी थी ग्रौर गुलाबी बयार से ग्रीष्म के ग्रागमन का ग्राभास हो रहा था तो ग्रा Q को कुछ ठण्ड महसूस होने लगी ; लेकिन यह ठण्ड ऐसी थी जिसे वह ग्रासानी से बरदाश्त कर सकता था – उसके सामने सबसे वड़ी चिन्ता भूखे पेट की थी। वह ग्रपना रूई का लिहाफ, फैल्ट-हैट ग्रौर कमीज काफी पहले ही गंवा चुका था। बाद में उसने ग्रपनी रूईदार जाकिट को भी बेच डाला। ग्रब उसके पास सिर्फ एक पाजामा वच गया, जिसे उतारना उसके लिए सम्भव नहीं था। यह सच है कि उसके पास एक ग्रस्तर वाली फटी-पुरानी जाकिट ग्रौर थी ; लेकिन वह बिलकुल चिथड़े-चिथड़े हो चुकी थी ग्रौर सिर्फ जूते के सोल वनाने लायक रह गई थी। वह काफी समय से उम्मीद कर रहा था कि उसे कहीं रास्ते में पड़ा पैसा मिल जाएगा, लेकिन ग्रभी तक कामयाव नहीं हो पाया था ; वह यह उम्मीद भी कर रहा था कि शायद किसी दिन उसे ग्रपने टूटे-फूटे कमरे में ग्रचानक कोई रकम मिल जाएगी ग्रौर इसे पाने के लिए उसने ग्रपने कमरे की पूरी छानबीन भी कर डाली थी ; लेकिन कमरा बिलकुल खाली था, उसमें फूटी कौड़ी भी न थी। इसके वाद उसने निश्चय कर लिया कि भोजन की खोज में गांव से वाहर चला जाएगा।

"भोजन की खोज" में जब वह सड़क पर जा रहा था तो सामने चिर-परिचित मदिरालय ग्रौर भाप से पकी रोटी पर नजर पड़ी। लेकिन वहां एक क्षण के लिए भी रुके विना, यहां तक कि उन्हें पाने के लिए लालायित हुए विना ही वह ग्रागे वढ़ गया। उसे इन चीजों की तलाश नहीं थी, हालांकि यह बात वह खुद भी नहीं जानता था कि उसे किस चीज की तलाश है।

चूंकि वेइच्वाङ कोई वड़ा गांव न था, इसलिए शीघ्र ही उसे पीछे छोड़कर ग्रा Q ग्रागे बढ़ गया। गांव के वाहर ज्यादातर इलाके में धान के खेत फैले हुए थे। दूर क्षितिज तक धान के कोमल ग्रंकुरों की

हरियाली छाई हुई थी। कहीं-कहीं गोल-गोल काली-काली ग्राकृतियां हिलती-डुलती दिखाई दे रही थीं। वे लोग खेतों में काम करने वाले किसान थे। लेकिन देहाती जीवन की इस ग्रानन्दमय ग्रनुभूति से विमुख ग्रा Q लगातार ग्रपने रास्ते चलता जा रहा था, क्योंकि वह बखूबी इस बात को जानता था कि यह उसकी "भोजन की खोज" से कोसों दूर है। ग्रन्त में वह "शान्त ग्रात्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार" की चारदीवारी के पास जा पहुंचा।

यह भिक्षुणी-विहार भी चारों तरफ से धान के खेतों से घिरा था। इसकी सफेद दीवारें हरेभरे खेतों के बीच स्पष्ट रूप से दिखाई दे रही थीं। पिछवाड़े की तरफ गारे-मिट्टी की नीची दीवार के ग्रन्दर की तरफ एक साग-सब्जी का बगीचा था। एक क्षण के लिए ग्रा Q ठिठका ग्रौर उसने ग्रपने चारों ग्रोर नजर डाली। चूंकि ग्रासपास कोई नजर नहीं ग्राया, इसलिए वह एक पेड़ के सहारे उस नीची दीवार पर चढ़ गया। गारे-मिट्टी की दीवार सहसा भरभराकर गिरने को हुई। ग्रा Q डर के मारे कांपने लगा। लेकिन शहतूत के पेड़ की शाख से लटककर दीवार फांदता हुग्रा वह ग्रन्दर चला गया। वहां साग-सब्जियों की भरमार थी, लेकिन पीली शराब, भाप से पकी रोटी ग्रथवा ग्रन्य किसी खाद्य-पदार्थ का कहीं कोई चिन्ह न था। पश्चिमी दीवार के निकट बांसों का झुरमुट खड़ा था, जहां बांस की कोमल कोंपलें फूट रही थीं। लेकिन बदकिस्मती से ये कोंपलें पकी हुई नहीं थीं। सरसों के पौधे खड़े थे, जो काफी समय पहले ही बीज के लिए चुन लिए गए थे, राई के पौधों पर फूल खिलने वाले थे ग्रौर पातगोभी की छोटी-छोटी गांठें बड़ी सख्त मालूम पड़ रही थीं।

ग्रा Q को परीक्षा में ग्रसफल किसी विद्वान के समान निराशा हुई। वह धीरे-धीरे वगीचे के फाटक की तरफ वढ़ने लगा। सहसा वह खुशी से झूम उठा। कारण, उसकी नजर सामने शलजम की क्यारी पर पड़ी। नीचे झुककर उसने शलजम खोदना शुरू कर दिया। ग्रचानक फाटक के पीछे से एक घुटा हुग्रा सिर नजर ग्राया, जो फौरन गायब हो गया।

यह वास्तव में वही छोटी-सी भिक्षुणी थी। हालांकि ग्रा Q छोटी-सी भिक्षुणी जैसे लोगों को बेहद हिकारत की नजर से देखता था, फिर भी कभी-कभी ऐसा समय ग्रा जाता है जब "सावधानी को ही सबसे बड़ी बुद्धिमानी समझा जाता है"। उसने जल्दी-जल्दी चार शलजम उखाड़े, पत्तियां तोड़कर फेंक दीं ग्रौर उन्हें ग्रपनी जाकिट में लपेट लिया। तब तक एक बूढ़ी भिक्षुणी बाहर ग्रा पहुंची।

"भगवान बुद्ध हमारी रक्षा करें! ग्ररे ग्रा Q! तू हमारे बगीचे में कूदकर शलजम चुराने क्यों ग्राया है? ... हे भगवान, यह कितना बड़ा पाप है! भगवान बुद्ध हमारी रक्षा करें! ..."

"मैं तुम्हारे बगीचे में कब कूदा, तुम्हारे शलजम मैंने कब चुराए?" ग्रा Q ने उत्तर दिया ग्रौर भिक्षुणी की तरफ देखता हुग्रा वहां से चल पड़ा।

"ग्रभी-ग्रभी चुराए हैं – देख, वह क्या है?" उसकी जाकिट की तहों की तरफ इशारा करते हुए बूढ़ी भिक्षुणी बोली।

"क्या ये तुम्हारे हैं? क्या तुम इसे साबित कर सकती हो? तुम ..."

ग्रपनी बात पूरी करने से पहले ही ग्रा Q सिर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुग्रा। उसके पीछे एक बेहद मोटा, काला कुत्ता लपका। शुरू में यह कुत्ता सामने के फाटक पर था। वह पीछे के बगीचे में कैसे पहुंचा यह बड़े ग्राश्चर्य की बात थी। काला कुत्ता गुर्राता हुग्रा ग्रा Q के पीछे दौड़ा ग्रौर उसकी टांग पर दांत मारने ही वाला था कि उसी समय उसकी जाकिट में से एक शलजम नीचे गिर गया। कुत्ता चौंक पड़ा ग्रौर एक क्षण के लिए वहीं रुक गया। मौके का फायदा उठाकर ग्रा Q शहतूत के पेड़ पर चढ़ गया ग्रौर मिट्टी-गारे की दीवार फांदकर शलजम समेत दूसरी तरफ जा गिरा। काला कुत्ता शहतूत के पेड़ के पास भौंकता रह गया ग्रौर बूढ़ी भिक्षुणी भगवान को याद करती खड़ी रह गई।

इस डर से कि कहीं भिक्षुणी काले कुत्ते को उसके पीछे फिर न छोड़ दे, ग्रा Q ने झटपट ग्रपने शलजम बटोर लिए ग्रौर दो-चार छोटे-छोटे पत्थर हाथ में उठाकर भाग निकला। काला कुत्ता फिर नहीं ग्राया।

ग्रा Q ने पत्थर नीचे फेंक दिए ग्रौर शलजम खाता हुग्रा ग्रागे वढ़ गया। उसने मन में सोचा : "यहां कुछ नहीं मिलेगा। शहर जाना ज्यादा ठीक रहेगा।..."

तीसरा शलजम खा चुकने तक उसने शहर जाने का फैसला कर लिया था।

ग्रध्याय छै

उत्थान से पतन की ग्रोर

उस वर्ष चन्द्रोत्सव से पहले ग्रा Q वेइच्वाङ में नहीं दिखाई दिया था। उसके वापस लौटने की खबर सुनकर हर ग्रादमी ताज्जुब करने लगा ग्रौर पुरानी बातों को याद करके सोचने लगा कि इस बीच ग्राखिर वह गया कहां था। इससे पहले दो-चार मौकों पर जब ग्रा Q शहर गया था तो लोगों को पहले से ही बड़ी शान से सूचित कर गया था; चूंकि इस वार उसने ऐसा नहीं किया इसलिए उसके शहर जाने का किसी को पता ही न चला। शायद उसने संरक्षक-देवता के मन्दिर के बूढ़े पुजारी को बताया हो। लेकिन वेइच्वाङ के रिवाज के मुताबिक शहर जाना सिर्फ तभी महत्वपूर्ण समझा जाता था जब चाग्रो साहब, छ्येन साहब ग्रथवा काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार शहर जाते थे। यहां तक कि नकली विदेशी दरिन्दे के शहर जाने की भी चर्चा नहीं होती थी, ग्रा Q की भला क्या विसात। इससे यह मालूम हो जाता है कि उस बूढ़े पुजारी ने ग्रा Q के शहर जाने की बात किसी से क्यों नहीं कही थी। नतीजे के तौर पर गांववासियों के पास यह बात जानने का कोई जरिया नहीं रह गया था।

ग्रा Q की इस बार की वापसी भी पहले के मुकाबले ग्रलग किस्म की थी ग्रौर लोगों को ग्राश्चर्य में डालने के लिए काफी थी। सांझ हो चुकी थी। नींद से भरी ग्रांखें लिए वह मदिरालय के दरवाजे पर

जा पहुंचा और सीधा काउन्टर पर पहुंचकर अपने कमरबन्द से मुट्ठीभर चांदी और तांबे के सिक्के निकाल उन्हें खनखनाता हुआ काउन्टर पर रखकर बोला : "नकद पैसा ! शराब लाओ !" वह एक नई अस्तर वाली जाकिट पहने था। कमर में एक बड़ा-सा बटुआ लटक रहा था, जिसके भारी वजन से कमरबन्द कुछ नीचे की तरफ झुक गया था। वेइच्वाङ में रिवाज था कि अगर किसी आदमी में कोई अनोखी बात नजर आती तो उसके साथ इज्जत का बरताव किया जाता, न कि बदतमीजी का। हालांकि उस समय लोग अच्छी तरह जान गए थे कि यह आ Q ही है, फिर भी वह फटे-पुराने कोट वाले आ Q से बिलकुल भिन्न व्यक्ति बन चुका था। प्राचीन कहावत है, "यदि कोई विद्वान तीन दिन के लिए भी बाहर गया हो, तो उसे नई दृष्टि से देखना चाहिए।" इसलिए वेटर, मदिरालय का मालिक, ग्राहक और सड़क पर आने-जाने वाले सभी लोग स्वाभाविक रूप से उसे एक आदरमिश्रित सन्देह की नजर से देख रहे थे। मदिरालय के मालिक ने सिर हिलाकर कहा :

"क्यों भाई आ Q, वापस आ गए ?"

"हां, आ गया हूं।"

"खूब पैसा कमाया है तुमने . . . आखिर गए कहां थे ?"

"शहर चला गया था।"

अगले दिन तक यह खबर पूरे वेइच्वाङ में फैल गई और चूंकि हर आदमी आ Q की सफलता, उसकी नकद पूंजी और उसकी नई अस्तर वाली जाकिट की कहानी जानना चाहता था, इसलिए गांववासियों ने मदिरालय में, चाय की दुकान में, और मन्दिर की ओलती के नीचे धीरे-धीरे इस खबर की छानबीन शुरू कर दी। नतीजा यह हुआ कि उन्होंने आ Q के साथ एक नए सम्मानपूर्ण ढंग से बरताव करना शुरू कर दिया।

आ Q ने बताया कि शहर जाकर वह प्रान्तीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का घरेलू नौकर बन गया था। उसकी कहानी

का यह हिस्सा जिसने भी सुना वह चकित रह गया। प्रान्तीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का नाम पाए था, लेकिन चूंकि वह पूरे शहर में एकमात्र सफल प्रान्तीय उम्मीदवार था, इसलिए उसका कुलनाम लेने की जरूरत नहीं समझी जाती थी : जब भी कोई प्रान्तीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार का जिक्र करता तो उसका तात्पर्य पाए साहब से ही होता था। यह बात सिर्फ वेइच्वाङ के लोग ही नहीं बल्कि तीस मील तक के पूरे क्षेत्र के लोग जानते थे, मानो हर आदमी उसका नाम "श्री प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार" ही समझता हो। इतने महत्वपूर्ण आदमी के घर में काम करने वाले की इज्जत होना स्वाभाविक था ; लेकिन आ Q ने आगे बताया कि कुछ समय बाद उसे वहां काम करने की इच्छा नहीं रही, क्योंकि वह सफल उम्मीदवार नम्बर एक "हरामजादा" था। कहानी का यह हिस्सा जिसने भी सुना उसने एक राहत की सांस ली। लेकिन इसके पीछे खुशी भी छिपी हुई थी, क्योंकि इससे जाहिर हो जाता था कि आ Q ऐसे आदमी के घर में काम करने लायक नहीं है। फिर भी काम न करना बड़े खेद की बात थी।

आ Q ने बताया, उसके लौटने का कारण यह भी था कि शहर के लोगों को देखकर उसे तसल्ली नहीं हुई थी, क्योंकि वे लोग लम्बे बेंच को सीधा बेंच कहते थे, मछली तलने के लिए हरे प्याज के बारीक टुकड़े इस्तेमाल करते थे और उनमें एक ऐसा नुक्स था जिसका उसे हाल ही में पता लगा था – उनकी औरतें चलते समय अपने कूल्हे ज्यादा आकर्षक ढंग से नहीं मटकाती थीं। लेकिन शहर में कुछ अच्छी बातें भी थीं ; मिसाल के लिए वेइच्वाङ में हर आदमी बांस के बत्तीस पांसों से खेलता था और सिर्फ नकली विदेशी दरिन्दा ही ऐसा था जो "माच्याङ" खेलना जानता था, लेकिन शहर में गली-मुहल्लों के लड़के भी "माच्याङ" के खेल में माहिर थे। अगर कहीं नकली विदेशी दरिन्दे को इन किशोर शैतानों के हाथ में सौंप दिया जाता तो वे उसे सीधे "दोजख के बादशाह के दरबार का एक छोटा शैतान" बना डालते। जिन लोगों ने कहानी का यह हिस्सा सुना उनके चेहरे शर्म से लाल हो गए।

"क्या तुम लोगों ने कभी किसी को मृत्यु-दण्ड देते देखा है?" ग्रा Q ने पूछा। "ग्रोह, कितना शानदार दृश्य होता है वह! ... जब वे लोग क्रान्तिकारियों को मृत्यु-दण्ड देते हैं... ग्रोह, कितना शानदार दृश्य होता है वह, कितना शानदार दृश्य होता है!..." बात करते-करते जब उसने सिर हिलाया तो उसके मुंह से निकले थूक के छींटे चाग्रो स-छन के चेहरे पर जा गिरे, जो उसके बिलकुल सामने खड़ा था। जिन लोगों ने कहानी का यह हिस्सा सुना वे डर के मारे कांप उठे। तभी चारों तरफ नजर डालने के बाद उसने ग्रचानक ग्रपना दायां हाथ उठाकर मुछन्दर वाङ की गरदन दबोच ली, जो सिर ग्रागे करके उसकी बात बड़े गौर से सुन रहा था।

"मार डालो!" ग्रा Q जोर से चिल्लाया।

बिजली या चकमक पत्थर की चिनगारी की सी तेजी के साथ मुछन्दर वाङ ने एक झटके से ग्रपना सिर पीछे खींच लिया ग्रौर भाग खड़ा हुग्रा। ग्रासपास खड़े लोग कौतुकपूर्ण ग्राशंका से सिहर उठे। इसके बाद मुछन्दर वाङ कई दिनों तक दहशत खाए रहा ग्रौर ग्रा Q के पास फटकने की हिम्मत न उसको हुई, न किसी ग्रौर को।

हालांकि यह नहीं कहा जा सकता कि उस समय वेइच्वाङ के निवासियों की नजरों में ग्रा Q का रुतबा चाग्रो साहब के रुतबे से बड़ा था, फिर भी बिना गलतबयानी के खतरे के यह जरूर कहा जा सकता है कि दोनों का रुतबा लगभग एक जैसा था।

कुछ ही दिनों में ग्रा Q की ख्याति ग्रचानक वेइच्वाङ के स्त्री समाज में भी फैल गई। हालांकि वेइच्वाङ में छ्येन ग्रौर चाग्रो सिर्फ ये दो परिवार ही ऐसे थे जिन्हें ठाठ-बाट से रहने वाले परिवार कहा जा सकता था ग्रौर नब्बे फीसदी बाकी परिवार बिलकुल गरीब थे, फिर भी स्त्री समाज स्त्री समाज ही होता है, ग्रौर जिस ढंग से ग्रा Q की ख्याति उसमें फैल गई थी उसे एक छोटा-मोटा चमत्कार ही समझा जाएगा। जब भी ग्रौरतें ग्रापस में मिलतीं, वे एक दूसरे से कहतीं, "श्रीमती चग्रो ने ग्रा Q से एक नीले रंग का रेशमी लहंगा खरीदा

है। हालांकि लहंगा पुराना है, फिर भी उसकी कीमत सिर्फ नब्बे सेन्ट है। श्रौर चाश्रो पाए-येन की मां (इसकी जांच करना अभी बाकी है, क्योंकि कुछ लोग कहते हैं कि वह चाश्रो स-छन की मां थी) ने गहरे लाल रंग की विदेशी छींट की बनी बच्चे की पोशाक, जो लगभग नई जैसी थी, सिर्फ तीन सौ तांबे के सिक्कों में खरीदी थी श्रौर उसे इसके दाम में श्राठ फीसदी की छूट भी मिली थी।"

इसके बाद, जिन श्रौरतों के पास रेशम का लहंगा नहीं था या जो विदेशी छींट का कपड़ा लेना चाहती थीं, वे इन चीजों को खरीदने के वास्ते श्रा Q से मिलने के लिए बेहद बेचैन हो उठीं। अगर वह कहीं नजर श्रा जाता तो उससे बचने के बजाय वे उसके पीछे-पीछे चल पड़तीं श्रौर रुकने का श्राग्रह करतीं।

"श्रा Q, क्या तुम्हारे पास कुछ रेशमी लहंगे श्रौर हैं?" वे पूछतीं। "नहीं हैं क्या? हमें विदेशी छींट का कपड़ा भी चाहिए। है तुम्हारे पास?"

बाद में यह खबर गरीब घरों से अमीर घरों में जा पहुंची। श्रीमती चश्रो अपने रेशमी लहंगे से इतनी खुश हुईं कि वे इसे दिखाने श्रीमती चाश्रो के पास ले गईं श्रौर श्रीमती चाश्रो ने चाश्रो साहब के सामने इसकी बहुत तारीफ की।

चाश्रो साहब ने उस दिन रात के भोजन के समय इस बात की चर्चा अपने लड़के से की, जो काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार था। चाश्रो साहब ने यह भी कहा कि श्रा Q का श्राचरण बड़ा सन्दिग्ध मालूम होता है श्रौर उन्हें अपने दरवाजों व खिड़कियों को सावधानी से बन्द रखना चाहिए। लेकिन साथ ही वे यह भी जानना चाहते थे कि श्रा Q के पास अब कोई सामान बाकी रह गया है या नहीं श्रौर उनका ख्याल था कि उसके पास अब भी शायद कोई अच्छी चीज बाकी रह गई है। चूंकि श्रीमती चाश्रो को एक अच्छी, सस्ती फर की जाकिट की जरूरत थी, इसलिए परिवार के अन्दर सलाह-मशविरा करने के बाद यह फैसला किया गया कि श्रीमती चश्रो से

कहा जाए कि वे ग्रा Q का पता लगाकर उसे तुरन्त यहां ले ग्राएं। इसके लिए ग्रपवाद रूप में तीसरी बार परिवार का नियम तोड़ा गया – उस रात बत्ती जलाए रखने की विशेष इजाजत दी गई।

काफी तेल जल चुका था, लेकिन ग्रा Q का कहीं कोई चिन्ह न था। पूरा चाम्रो परिवार बड़ी बेसबरी से इंतजार करता-करता उबासियां लेने लगा था। कुछ लोग ग्रा Q के ग्रनुशासनहीन तौर-तरीकों की ग्रालोचना कर रहे थे। कुछ ग्रन्य लोग श्रीमती चम्रो को दोष दे रहे थे कि उन्होंने ग्रा Q को लाने के लिए ज्यादा कोशिश नहीं की होगी। श्रीमती चाम्रो को डर था, कहीं ऐसा तो नहीं कि उस साल वसन्त में मंजूर की गई शर्तों के कारण ग्रा Q को यहां ग्राने की हिम्मत ही न हो रही हो। लेकिन चाम्रो साहब का ख्याल था कि इसके बारे में चिन्ता करने की जरूरत नहीं है, क्योंकि "इस बार उसे मैंने खुद बुलाया है"। चाम्रो साहब ने साबित कर दिया कि वे कितनी पैनी दृष्टि रखते हैं, क्योंकि ग्राखिरकार श्रीमती चम्रो के साथ ग्रा Q ग्रा ही पहुंचा।

"यह बार-बार कहता जा रहा है कि ग्रब इसके पास कोई चीज बाकी नहीं रह गई," श्रीमती चम्रो हांफती हुई बोलीं। "जब मैंने इससे कहा कि तुम यह सब खुद जाकर बता ग्राम्रो तो यह बोलता ही चला गया। मैंने इससे कहा . . . "

"जनाब!" ग्रा Q ग्रोलती के नीचे रुककर मुस्कराने की कोशिश करते हुए बोला।

"ग्रा Q, मैंने सुना है तुम वहां जाकर काफी धनवान बन गए हो", चाम्रो साहब ने उसके नजदीक जाकर एक नजर उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए कहा। "बहुत ग्रच्छी बात है। ग्रब . . . लोग कहते हैं तुम्हारे पास कुछ पुरानी चीजें भी हैं। . . . उन सबको यहां ले ग्राम्रो, ताकि हम लोग देख सकें। . . . हम उनमें से कुछ चीजें लेना चाहते हैं। . . . "

"श्रीमती चम्रो को मैं बता चुका हूं कि ग्रब मेरे पास कुछ भी बाकी नहीं रह गया।"

"कुछ भी बाकी नहीं बचा ?" चाओ साहब की बात से निराशा साफ झलक रही थी। "ये चीजें इतनी जल्दी कैसे खत्म हो गईं ?"

"ये सब चीजें मेरे एक दोस्त की थीं। और दरअसल बहुत ज्यादा तो थीं नहीं। कुछ ही थीं। लोगों ने खरीद लीं। . . ."

"कुछ न कुछ तो बचा ही होगा।"

"सिर्फ दरवाजे का एक पर्दा रह गया है।"

"दरवाजे का पर्दा ही ले आओ। हम उसे देखना चाहते हैं," श्रीमती चाओ झट बोल पड़ीं।

"अगर उसे कल ला सको तो ठीक रहेगा," बिना अधिक उत्साह दिखाए चाओ साहब ने कहा। "आ Q, भविष्य में जब भी तुम्हारे पास कोई चीज आए पहले हमें दिखा देना। . . ."

"हम लोग तुम्हें औरों से कम पैसा नहीं देंगे !" काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार बोला। उसकी पत्नी ने आ Q की प्रति-क्रिया जानने के लिए तेजी से एक नजर उसकी तरफ देखा।

"मुझे तो एक फर की जाकिट की जरूरत है", श्रीमती चाओ ने कहा।

हालांकि आ Q ने उनकी बात मान ली, लेकिन वह इतनी लापरवाही से बाहर निकला कि उन लोगों को विश्वास ही नहीं हो पाया कि उसने उनकी बात दिल से मानी है या नहीं। इसकी वजह से चाओ साहब तो इतने निराश, परेशान और चिन्तित हो उठे कि उन्हें उबासियां आनी भी बन्द हो गईं। काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार भी आ Q के बरताव से बिलकुल असन्तुष्ट था। वह बोला, "ऐसी कछुए की औलाद से बहुत सतर्क रहना चाहिए। अच्छा यह होगा कि बेलिफ को आदेश देकर इसके वेइच्वाङ में रहने पर पाबन्दी लगा दी जाए।"

लेकिन चाओ साहब नहीं माने। उन्होंने कहा, कहीं ऐसा न हो कि वह बदला लेने पर उतारू हो जाए। वैसे कभी-कभी इस तरह के मामलों में "चील अपने खुद के घोंसले में शिकार नहीं करती" वाली कहावत

लागू होती है : ग्रा Q से उसके ग्रपने गांव वालों को किसी तरह का डर नहीं होना चाहिए ; सिर्फ रात के वक्त उन्हें जरूर ज्यादा चौकन्ना रहना चाहिए। पिता के इस ग्रादेश से प्रभावित होकर काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने ग्रा Q को गांव से बाहर निकालने का ग्रपना प्रस्ताव तुरन्त वापस ले लिया ग्रौर श्रीमती चग्रो को सावधान कर दिया कि यह बात किसी के सामने हरगिज न दोहराएं।

लेकिन ग्रगले दिन जब श्रीमती चग्रो ग्रपने नीले लहंगे को काला रंग करवाने ले गईं, तो उन्होंने ग्रा Q पर लगाए गए ग्राक्षेपों की चर्चा छेड़ दी, हालांकि काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार द्वारा कही हुई उस बात का जिक्र उन्होंने नहीं किया जो उसने ग्रा Q को गांव से निकालने के बारे में कही थी। इसके बावजूद, ग्रा Q को इससे बेहद हानि हुई। सबसे पहले तो बेलिफ उसके पास जा पहुंचा ग्रौर दरवाजे का पर्दा उठा ले गया। हालांकि ग्रा Q ने विरोध किया ग्रौर कहा कि इसे श्रीमती चाग्रो देखना चाहती हैं, मगर बेलिफ ने वापस देने से इनकार कर दिया ग्रौर यहां तक कि ग्रा Q से हर महीने कुछ मुंहभराई की मांग भी की। दूसरे, गांव वालों के मन में उसके लिए जो इज्जत पैदा हो गई थी वह ग्रचानक खत्म हो गई। हालांकि वे लोग ग्रब भी उसके साथ हंसी-मजाक करने का साहस नहीं करते थे, मगर हर ग्रादमी उससे ज्यादा से ज्यादा कन्नी काटने की कोशिश करने लगा। हालांकि उसके "मार डालो!" का जो डर उनके दिमाग में पहले से बैठा हुग्रा था उससे यह भिन्न प्रकार का डर था, फिर भी प्राचीन समाज द्वारा भूत-प्रेतों के प्रति ग्रपनाएं गए रवैये से यह काफी मिलता-जुलता था ; लोग उसके ग्रौर ग्रपने बीच एक सम्मानपूर्ण ग्रन्तर बनाए रखते थे।

कुछ निठल्ले लोगों ने, जो इस व्यापार की तह में जाना चाहते थे, ग्रा Q के पास जाकर ग्रच्छी तरह पूछताछ की। बात छिपाने की जरा भी कोशिश किए बिना ग्रा Q ने बड़े गर्व के साथ उनके सामने ग्रपने कारनामों का बखान कर डाला। उसने उन्हें बताया कि शहर में वह महज एक छोटा-सा चोर था, जो न सिर्फ दीवार फांदने में बल्कि

खुले खिड़की-दरवाजों से भीतर जाने में भी असमर्थ था ; वह तो सिर्फ खुले खिड़की-दरवाजों के बाहर खड़ा होकर चोरी का माल थाम सकता था।

एक दिन रात के वक्त जब चोरी के माल की एक गठरी उसे थमाने के बाद उसके गिरोह का मुखिया फिर से अन्दर गया, तो भीतर से बड़े जोर का शोरगुल सुनाई पड़ा। आ Q ने आव देखा न ताव, सिर पर पांव रखकर भाग खड़ा हुआ। उसी रात वह शहर से भागकर वेइ-च्वाङ पहुंच गया ; इसके बाद उसने दुबारा इस व्यापार में लौटने की हिम्मत नहीं की। इस कहानी से आ Q की प्रतिष्ठा को और अधिक धक्का लगा। गांववासी उसके और अपने बीच एक सम्मानपूर्ण अन्तर इसलिए बनाए रखते थे क्योंकि वे लोग उससे दुश्मनी मोल नहीं लेना चाहते थे। भला यह कौन जानता था कि वह एक ऐसा चोर है जिसके अन्दर फिर से चोरी करने का साहस नहीं? अब कहीं उन्हें मालूम हुआ कि वह सचमुच कितना तुच्छ प्राणी था ; इसलिए उससे डरने की जरूरत नहीं थी।

अध्याय सात

क्रान्ति

सम्राट श्वान थुङ के शासन-काल के तीसरे वर्ष नवें चन्द्र-मास की चौदहवीं तिथि को* – जिस दिन आ Q ने अपना बटुआ चाओ पाए-येन को बेच दिया था – आधी रात के वक्त जब तीसरी घड़ी ने चौथा घण्टा बजाया तो एक बड़े-से काले पाल वाली विशाल नौका चाओ परिवार के घाट पर आ लगी। यह नौका अन्धकार में उस समय किनारे

---

* १९११ की क्रान्ति में इसी दिन शाओशिङ आजाद हुआ था।

ग्रा लगी जब गांव वाले गहरी नींद सो रहे थे, इसलिए उन्हें इसकी कानोंकान खबर न लगी ; लेकिन पौ फटने पर जब नौका वहां से जाने लगी तो कई लोगों ने उसे देख लिया। जांच-पड़ताल के बाद मालूम हुग्रा कि नौका प्रान्तीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की थी।

इस घटना से वेइच्वाङ में भारी खलबली मच गई ग्रौर दोपहर होने तक सभी गांववासियों के दिल तेजी से धड़कने लगे। चाम्रो परिवार इस नौका की यात्रा के उद्देश्य के बारे में बिलकुल मौन रहा, लेकिन चाय की दुकान ग्रौर मदिरालय में जोरों से चर्चा थी कि क्रान्तिकारी लोग शहर में प्रवेश करने वाले हैं ग्रौर प्रान्तीय सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार शरण लेने गांव में ग्रा गया है। सिर्फ श्रीमती चम्रो की राय इससे भिन्न थी। उनका कहना था कि प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सिर्फ कुछ टूटे-फूटे सन्दूक वेइच्वाङ में रखवाना चाहता था, मगर चाम्रो साहब ने उन्हें वापस भिजवा दिया था। वास्तव में प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार ग्रौर काउन्टी परीक्षा में सफल चाम्रो परिवार के उम्मीदवार की ग्रापस में बिलकुल नहीं बनती थी, इसलिए ग्राड़े समय में वे भला एक दूसरे के काम कैसे ग्रा सकते थे ; यही नहीं, चूंकि श्रीमती चम्रो चाम्रो परिवार के पड़ोस में रहती थीं ग्रौर बाकी लोगों के मुकाबले ज्यादा ग्रच्छी तरह जानती थीं कि क्या हो रहा है, इसलिए उनकी बात में कुछ ज्यादा वजन मालूम होता था।

फिर भी इसके बाद यह ग्रफवाह उड़ गई कि प्रान्तीय विद्वान खुद नहीं ग्राया बल्कि उसने एक लम्बा पत्र भेजा है, जिसमें उसने चाम्रो परिवार से ग्रपना दूर का रिश्ता निकाल लिया है ; चूंकि सोच-विचार करने के बाद चाम्रो साहब को यह लगा कि सन्दूक रखने से उन्हें कोई नुकसान नहीं होने जा रहा, इसलिए उन्होंने ये सन्दूक ग्रपनी पत्नी के पलंग के नीचे छिपाकर रखवा दिए हैं। जहां तक क्रान्तिकारियों का ताल्लुक है, कुछ लोगों का कहना था कि वे लोग सफेद रंग के लोहे

के टोप और कवच पहनकर – सम्राट छुङ चन की मातमपुर्सी करते हुए* – उस रात शहर में प्रवेश कर चुके हैं।

आ Q क्रान्तिकारियों के बारे में काफी पहले से जानता था और इस वर्ष उनके सिर कटते अपनी आंखों से देख चुका था। लेकिन चूंकि वह सोचता था कि क्रान्तिकारी लोग विद्रोही होते हैं और अगर विद्रोह हो गया तो हालात उसके लिए और मुश्किल हो जाएंगे, इसलिए वह उन्हें हमेशा नापसन्द करता था और उनसे दूर ही रहता था। कौन सोच सकता था कि वे लोग प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार को भी, जिसकी ख्याति चारों ओर तीस मील तक के इलाके में फैली हुई थी, इतना भयभीत कर सकते हैं? नतीजे के तौर पर आ Q "प्रफुल्लित" हुए विना नहीं रह सका, और गांववासियों में फैले आतंक से उसकी खुशी और बढ़ गई।

"क्रान्ति होना कोई बुरी बात नहीं," आ Q ने सोचा। "उन सबका खात्मा हो . . . उन सवका नाश हो ! . . . मैं खुद भी क्रान्तिकारियों के पास जाना चाहता हूं।"

कुछ समय से आ Q बहुत तंग था और शायद असंतुष्ट भी; इसके अलावा, दोपहर के वक्त उसने खाली पेट दो प्याली शराब भी पी ली थी। नतीजे के तौर पर उसे नशा आसानी से चढ़ गया था। और जव वह अपने ख्यालों में डूबा हुआ चला जा रहा था तो उसे एक बार फिर ऐसा लगा मानो हवा में उड़ रहा हो। अचानक न जाने कैसे उसे लगा कि वह खुद ही क्रान्तिकारी है और वेइच्वाङ के लोग उसकी हिरासत में हैं। अपनी खुशी को दबाने में असमर्थ होकर वह अनायास ही जोर से चिल्ला पड़ा :

"विद्रोह ! विद्रोह !"

सभी गांववासी विस्मय से उसकी ओर देखने लगे। आ Q ने

---

* मिङ राजवंश के अन्तिम सम्राट छुङ चन ने १६२८ से १६४४ तक शासन किया। जब ली च-छङ के नेतृत्व में विद्रोही किसानों की सेना ने पेकिङ में प्रवेश किया उससे पहले ही छुङ चन ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली।

इतनी अधिक करुणायुक्त आंखें पहले कभी नहीं देखी थीं। इन्हें देखकर उसे भरी गरमी में बर्फ का पानी पीकर मिलने वाली ताजगी अनुभव हुई। इसलिए वह और ज्यादा खुश होकर जोर से चिल्लाता हुआ आगे बढ़ गया :

"ठीक है... जो भी मेरे मन भाएगा आज वही मैं लूंगा!... जो भी मेरे मन भाएगा उसे मीत समझूंगा!

"त्रा ला, त्रा ला!

"है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली
चूर नशे में होकर अपने चङ भैया की,
"है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली...
या, या, या!

"त्रा ला, त्रा ला, थुम थी थुम!

"हड्डी-पसली चूर तुम्हारी, लोहे की छड़ से कर दूंगा!"

चाओ साहब और उनका लड़का अपने फाटक पर दो रिश्तेदारों के साथ क्रान्ति के बारे में चर्चा कर रहे थे। आ Q ने उन्हें नहीं देखा और वह अपना सिर पीछे की तरफ लटकाए गाता हुआ आगे बढ़ गया : "त्रा ला ला, थुम थी थुम!"

"अरे यार Q!" चाओ साहब ने भयमिश्रित स्वर में धीमे से पुकारा।

"त्रा ला!" आ Q गाता चला गया। वह कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसके नाम के साथ "यार" शब्द का इस्तेमाल किया जा सकता है। उसे पक्का यकीन था कि उसने गलत सुना है और उसे किसी ने नहीं पुकारा। इसलिए उसने अपना गाना जारी रखा : "त्रा ला ला, थुम थी थुम!"

"अरे यार Q!"

"है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली..."

"आ Q!" काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार को उसका पूरा नाम लेकर पुकारना पड़ा।

सिर्फ तभी ग्रा Q रुका। "कहिए, क्या है?" उसने ग्रपना सिर एक तरफ झुकाकर पूछा।

"Q, यार... ग्रब..." चाग्रो साहब की जबान लड़खड़ाने लगी। "क्या यह सच है कि ग्रब तुम ग्रमीर बनते जा रहे हो?"

"ग्रमीर बनता जा रहा हूं? बेशक, जो चीज मेरे मन भाती है उसे ले लेता हूं।..."

"ग्रा–Q, यार ग्रा Q, हम जैसे गरीब दोस्तों की तरफ ध्यान देने की तुम्हें फुरसत ही कहां? ..." चाग्रो पाए-येन ने जरा सशंकित होकर कहा, मानो क्रान्तिकारियों के रुख की तह लेने की कोशिश कर रहा हो।

"गरीब दोस्त? लेकिन तुम तो मुझसे ज्यादा ग्रमीर हो," ग्रा Q ने उत्तर दिया ग्रौर वहां से चला गया।

वे लोग हताश होकर मौन खड़े रहे; तब चाग्रो साहब ग्रौर उनका लड़का ग्रपने घर के भीतर चले गए ग्रौर उस दिन इस प्रश्न पर तब तक विचार-विमर्श करते रहे जब तक बत्ती जलाने का वक्त नहीं हो गया। जब चाग्रो पाए-येन घर पहुंचा तो उसने ग्रपनी कमर से बटुवा निकालकर पत्नी को दिया ग्रौर उससे कहा कि इसे ग्रपने सन्दूक की तह में छिपा ले।

कुछ समय तक ग्रा Q को ऐसा लगा मानो हवा में उड़ रहा हो। लेकिन जब संरक्षक-देवता के मन्दिर में पहुंचा तो उसका नशा उतर चुका था। उस रात मन्दिर के बूढ़े पुजारी ने भी उसके प्रति ग्रप्रत्याशित मैत्रीपूर्ण रुख ग्रपनाया ग्रौर उसे चाय पिलाई। इसके बाद ग्रा Q ने पुजारी से दो चौरस केक मांग लिए ग्रौर उन्हें खा लेने के बाद चार ग्रौंस की एक बड़ी ग्रधजली मोमबत्ती ग्रौर एक छोटा बत्तीदान मांग लिया। मोमबत्ती जलाकर वह ग्रकेला ही ग्रपने कमरे में लेट गया। जैसे-जैसे मोमबत्ती की लौ दीप-महोत्सव की रात के समान घटती-बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे वह एक ग्रप्रत्याशित ताजगी ग्रौर प्रसन्नता ग्रनुभव कर रहा था ग्रौर इसके साथ-साथ उसकी कल्पना भी नई उड़ान लेने लगी थी।

"विद्रोह ? खूब मजा आएगा . . . क्रान्तिकारियों का दल आएगा। सबके सिर पर लोहे का सफेद टोप होगा और शरीर पर सफेद कवच। वे लोग तलवारों, लोहे की छड़ों, बमों, विदेशी बन्दूकों, नुकीले दुधारी चाकुओं और हुक वाले भालों से लैस होंगे। वे लोग संरक्षक-देवता के मन्दिर में आएंगे और पुकारेंगे, 'आ Q, आ जाओ'। और तब मैं उनके साथ चला जाऊंगा। . . .

"तब ये सारे गांववासी हास्यास्पद स्थिति में होंगे, घुटने टेककर गिड़गिड़ा रहे होंगे, 'आ Q, हमें बख्श दो'। लेकिन उनकी बात कौन सुनेगा ! सबसे पहले नौजवान D और चाओ साहब को मौत के घाट उतारा जाएगा, उसके बाद काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार और नकली विदेशी दरिन्दे की बारी आएगी। . . . लेकिन सम्भवतः मैं कुछ लोगों को छोड़ दूंगा। कोई वक्त था जब मैं मुछन्दर वाङ को छोड़ देता, लेकिन अब तो मैं उसकी शकल भी नहीं देखना चाहता। . . .

"चीजों के लिए . . . मैं सीधा अन्दर चला जाऊंगा और सन्दूक खोल डालूंगा : चांदी की सिल्लियां, विदेशी सिक्के, विदेशी छींट की जाकिटें. . . सबसे पहले मैं काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का निङपो पलंग मन्दिर में उठा ले जाऊंगा और छ्येन परिवार की मेज-कुर्सियां भी – अथवा चाओ परिवार की मेज-कुर्सियां इस्तेमाल करूंगा। मैं अपने हाथ से तिनका भी नहीं तोड़ूंगा, सिर्फ नौजवान D को हुक्म दूंगा कि मेरे लिए सारा का सारा सामान उठा लाए और जरा फुर्ती दिखाए, वरना उसे मेरा थप्पड़ खाने के लिए तैयार रहना पड़ेगा। . . .

"चाओ स-छन की छोटी वहिन बड़ी बदसूरत है। कुछ ही वर्षों में श्रीमती चओ की लड़की भी जवान हो जाएगी। नकली विदेशी दरिन्दे की पत्नी सिर्फ ऐसे आदमी के साथ सोने को तैयार है जिसकी चुटिया न हो। छिः ! वह अच्छी औरत नहीं जान पड़ती ! काउन्टी की परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी की पलकों में निशान हैं। . . .

ग्रामा ऊ मुझे बहुत दिनों से नहीं दिखाई दी, न मालूम वह कहां है — ग्रफसोस की बात है कि उसके पांव बहुत बड़े हैं।"

इससे पहले कि ग्रा Q कोई सन्तोषजनक निर्णय कर पाता, उसके खर्राटों की ग्रावाज ग्राने लगी। चार ग्रौंस की मोमबत्ती सिर्फ ग्राधा इंच जली थी, उसकी टिमटिमाती लाल रोशनी में ग्रा Q का खुला मुंह चमक रहा था।

"हो, हो !" ग्रा Q ग्रचानक चिल्लाया ग्रौर सिर उठाकर फटी-फटी ग्रांखों से चारों तरफ देखने लगा। लेकिन जब उसकी नजर चार ग्रौंस की मोमबत्ती पर पड़ी तो वह फिर से लेट गया ग्रौर खर्राटे लेने लगा।

ग्रगले दिन सुबह वह बड़ी देर से उठा। बाहर गली-मोहल्ले में पहुंचा तो हर चीज पहले जैसी ही नजर ग्राई। उसे भूख लग रही थी। काफी दिमाग लड़ाने पर भी उसे कोई रास्ता न सूझा। ग्रचानक उसके मन में एक विचार ग्राया। वह धीरे-धीरे चल पड़ा ग्रौर जानबूझकर या ग्रनजाने में "शान्त ग्रात्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार" में जा पहुंचा।

भिक्षुणी-विहार उस वर्ष के वसन्त के ही समान शान्त था। उसकी सफेद दीवारें ग्रौर चमकदार काला फाटक वैसे ही दिखाई दे रहे थे। एक क्षण सोचने के बाद उसने फाटक पर दस्तक दी, जिसे सुनकर भीतर से एक कुत्ता भौंकने लगा। उसने झट टूटी-फूटी ईंटों के कई टुकड़े उठा लिए ग्रौर फाटक पर पहुंचकर ग्रौर जोर से खटखटाने लगा। काले फाटक को उसने इतनी जोर से पीटा कि उस पर कई जगह निशान पड़ गए। ग्रन्त में उसे फाटक खोलने के लिए किसी के ग्राने की ग्राहट सुनाई दी।

टूटी ईंटों के टुकड़े हाथ में उठाए ग्रा Q ग्रपनी दोनों टांगें फैलाकर काले कुत्ते से जूझने को तैयार खड़ा था। भिक्षुणी-विहार का फाटक थोड़ा-सा खुला, मगर काला कुत्ता बाहर नहीं निकला। ग्रा Q ने ग्रन्दर झांका तो उसे सिर्फ बूढ़ी भिक्षुणी दिखाई दी।

"तुम फिर यहां क्यों ग्रा गए हो?" बात शुरू करते हुए उसने पूछा।

"क्रान्ति हो गई है . . . क्या तुम्हें नहीं मालूम ?" ग्रा Q ने ग्रस्पष्ट स्वर में कहा।

"क्रान्ति . . . क्रान्ति तो यहां एक बार हो चुकी," बूढ़ी भिक्षुणी बोली। उसकी ग्रांखें रो-रो कर लाल हो रही थीं। "तुम्हारी इन क्रान्तियों से हम पर न जाने क्या बीतेगी ?"

"क्या कहा ?" ग्रा Q ने ग्राश्चर्य से पूछा।

"तुम्हें नहीं मालूम ? क्रान्तिकारी यहां पहले ही ग्रा चुके हैं !"

"कौन से क्रान्तिकारी ?" ग्रा Q ने ग्रौर ग्रधिक ग्राश्चर्य से पूछा।

"काउन्टी की सरकारी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ग्रौर नकली विदेशी दरिन्दा।"

यह सुनकर ग्रा Q के ग्राश्चर्य का ठिकाना न रहा ; वह विलकुल भौंचक्का रह गया। जव उस बूढ़ी भिक्षुणी ने देखा कि उसका लड़ाकूपन कुछ कम हो गया है तो उसने फौरन फाटक बन्द कर दिया, ताकि ग्रगर ग्रा Q फिर से धक्का दे तो वह खुल न सके। जव उसने दुवारा खटखटाया तो कोई उत्तर नहीं ग्राया।

यह उसी दिन सुवह की बात थी। काउन्टी की परीक्षा में सफल चाग्रो परिवार के उम्मीदवार को एकदम खवर मिल गई थी। ज्यों ही उसे पता चला कि क्रान्तिकारी उस रात शहर में प्रवेश कर गए हैं, उसने झटपट ग्रपनी चुटिया लपेटकर सिर पर छिपा ली ग्रौर सवसे पहले छ्येन परिवार के नकली विदेशी दरिन्दे को मिलने गया, हालांकि उन दोनों के ताल्लुकात पहले कभी ग्रच्छे नहीं रहे थे। चूंकि ग्रब समय ग्रा गया था कि "सव लोग मिलकर समाज-सुधार करें," इसलिए उन दोनों के बीच बड़ी ग्रात्मीयतापूर्ण बातचीत हुई। दोनों तुरन्त ही एक सी विचारधारा वाले साथी वन गए ग्रौर दोनों ने क्रान्तिकारी बनने की शपथ ले ली।

कुछ देर माथापच्ची करने के बाद उन्हें याद ग्राया कि "शान्त ग्रात्म-उत्कर्ष भिक्षुणी-विहार" में एक शाही शिलालेख लगा हुग्रा है जिस पर लिखा है : "सम्राट की जय हो !" इसे तुरन्त हटा दिया जाना

चाहिए। यह विचार आते ही वे अपनी क्रान्तिकारी योजना को कार्यान्वित करने तुरन्त भिक्षुणी-विहार में जा पहुंचे। चूंकि बूढ़ी भिक्षुणी ने उन्हें रोकने की कोशिश की और उनसे कुछ कहा, इसलिए उन्होंने उसे छिङ सरकार समझकर, डण्डों व मुट्ठियों से उसकी खोपड़ी पर अनेक प्रहार किए। जब दोनों चले गए तो भिक्षुणी ने विहार का निरीक्षण किया। शाही शिलालेख टुकड़े-टुकड़े करके जमीन पर फेंक दिया गया था। और मूल्यवान श्वेन त धूपदान*, जो करुणा की देवी क्वानइन की मूर्ति के सामने रखा था, वहां से गायब हो चुका था।

यह सब आ Q को बाद में मालूम हुआ। उसे इस बात का बड़ा अफसोस था कि उस समय वह सोया क्यों रह गया और वे लोग उसे बुलाने क्यों नहीं आए। उसने मन ही मन कहा : "हो सकता है उन्हें अब भी यह मालूम न हो कि मैं क्रान्तिकारियों की पांतों में शामिल हो चुका हूं।"

अध्याय आठ

क्रान्ति से बहिष्कृत

वेइच्वाङ के लोग दिन-ब-दिन आश्वस्त होते जा रहे थे। जो खबरें उनके पास पहुंच रही थीं उनके आधार पर वे यह बात समझ चुके थे कि क्रान्तिकारियों के शहर में प्रवेश करने से कोई खास तब्दीली नहीं आई। मजिस्ट्रेट अब भी सबसे बड़ा अफसर था, सिर्फ उसका ओहदा बदल गया था ; प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार को भी कोई पद—वेइच्वाङ गांव के निवासियों के लिए इन ओहदों के नाम याद रखना सम्भव नहीं था—किसी किस्म का कोई सरकारी पद

---

* कांसे के अत्यन्त कलात्मक धूपदान चीन में मिङ राजवंश के श्वेन त काल (१४२६-१४३५) में बनाए जाते थे।

सौंप दिया गया था। फौज का मुखिया अब भी वही पुराना कप्तान था। खटके की बात सिर्फ यह थी कि कुछ बुरे क्रान्तिकारियों ने शहर में पहुंचने के बाद लोगों की चुटिया काटकर उन्हें परेशान करना शुरू कर दिया था। सुनने में आया था कि पड़ोस के गांव का "साढ़े-तिसेरा" नाम का एक मल्लाह उनके चंगुल में फंस गया था और अब उसकी शकल देखने लायक नहीं रही थी। फिर भी यह खतरा इतना बड़ा नहीं था, क्योंकि पहले तो वेइच्वाङ गांव के लोग वैसे ही शहर बहुत कम जाते थे, फिर जो लोग शहर जाने की बात सोच भी रहे थे उन्होंने इस खतरे से बचने के लिए अपना प्रोग्राम फौरन रद्द कर दिया था। आ Q भी अपने पुराने दोस्तों से मिलने शहर जाने की योजना बना रहा था। लेकिन ज्यों ही चुटिया काटने की खबर सुनी, उसने अपना विचार बदल दिया।

यह कहना गलत होगा कि वेइच्वाङ में कोई सुधार हुआ ही नहीं। आने वाले कुछ दिनों में ऐसे लोगों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ती गई जिन्होंने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांध ली थी, और जैसा कि पहले कहा जा चुका है, इसकी शुरुआत सबसे पहले काउन्टी की परीक्षा में सफल उम्मीदवार से हुई; इसके बाद चाओ स-छन और चाओ पाए-येन आगे आए और उनके बाद आ Q। अगर वह गरमी का मौसम होता और ये सब लोग अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांध लेते अथवा गांठ लगा लेते तो किसी को अचम्भा न होता; लेकिन उन दिनों शरद ऋतु खत्म होने ही वाली थी, इसलिए गरमियों के रिवाज को शरद में अपनाकर जिन लोगों ने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांध ली थी उनका यह फैसला कोई कम बहादुरी का काम नहीं था। और जहां तक वेइच्वाङ का ताल्लुक है, यह नहीं कहा जा सकता था कि इस बात का सुधारों से कोई सम्बन्ध ही न था।

जब चाओ स-छन अपनी केशविहीन गरदन लिए लोगों के सामने पहुंचा तो वे बोल पड़े, "वाह! यह है क्रान्तिकारी!"

जब यह बात आ Q ने सुनी तो वह बड़ा प्रभावित हुआ। हालांकि

वह काफी पहले ही सुन चुका था कि काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांध ली है, फिर भी उसके मन में यह विचार कभी नहीं आया कि वह खुद भी ऐसा कर ले। मगर जब उसने चाओ स-छन को भी उसके पदचिन्हों पर चलते देखा, सिर्फ तभी उसे ख्याल आया कि वह भी ऐसा ही करेगा। उसने इन लोगों का अनुकरण करने की ठान ली। बांस की चापस्टिक की सहायता से उसने अपनी चुटिया सिर पर लपेट ली और कुछ संकोच होने के बावजूद अन्त में साहस करके बाहर चला गया।

जब वह गांव की गलियों से गुजर रहा था तो लोगों ने उसकी तरफ देखा। मगर किसी ने कुछ नहीं कहा। आ Q पहले तो कुछ खीज गया और बाद में बहुत गुस्सा हो गया। कुछ समय से उसका पारा एकदम चढ़ जाता था। वास्तव में उसकी जिन्दगी की मुश्किलें क्रान्ति के पहले की तुलना में बढ़ी नहीं थीं और लोग उससे नम्रता से बरताव करते थे तथा दुकानदार नकद पैसे देने का आग्रह नहीं करते थे। फिर भी आ Q असन्तोष अनुभव करता था। वह सोचता, चूंकि क्रान्ति हो चुकी है, उसका असर और ज्यादा व्यापक होना चाहिए। तभी उसकी नजर नौजवान D पर पड़ी और उसका पारा सातवें आसमान पर पहुंच गया।

नौजवान D ने भी अपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांधी हुई थी और मजेदार बात यह थी कि उसने भी चुटिया लपेटने में बांस की चापस्टिक की ही सहायता ली थी। आ Q सोच भी नहीं सकता था कि नौवजान D भी यह सब करने की हिम्मत कर सकता है ; वह इसे हरगिज बरदाश्त नहीं कर सकता था ! नौजवान D आखिर है किस खेत की मूली ? उसके मन में यह विचार जोरों से मचलने लगा कि उसे वहीं पकड़ ले और उसके सिर पर लगी बांस की चापस्टिक तोड़ डाले, चुटिया खोल दे और चेहरे पर कई तमाचे जड़ दे, जिससे उसे अपनी औकात भूलने और अपने को क्रान्तिकारी समझने की सजा मिल जाए। लेकिन अन्त में उसने नौजवान D की तरफ सिर्फ क्रोधित

ग्रांखों से देखा, तिरस्कार से थूका ग्रौर "छि: !" कहकर उसे जाने दिया।

पिछले कुछ दिनों में सिर्फ नकली विदेशी दरिन्दा ही शहर गया था। चाग्रो परिवार के काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार ने सोचा था कि प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार द्वारा रखे गए सन्दूकों के वहाने उससे मुलाकात करने शहर जाएगा, मगर चुटिया कटवा बैठने के डर से उसने ग्रपना विचार वदल दिया था। उसने बेहद तकल्लुफ के साथ एक चिट्ठी लिखी थी ग्रौर नकली विदेशी दरिन्दे के हाथ शहर भेज दी थी। नकली विदेशी दरिन्दे से उसने यह ग्रनुरोध भी किया था कि वह "स्वाधीनता पार्टी" से उसका परिचय करा दे। जव नकली विदेशी दरिन्दा वापस लौटा तो उसने काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार से चार डालर लेकर उसकी छाती पर चांदी के ग्राड़ू वाला एक बैज टांक दिया। वेइच्वाङ गांव के सभी निवासियों पर धाक जम गई। उन्होंने वताया कि यह "परसिमन-तेल पार्टी"* का बैज है, जिसका दर्जा हान लिन** के वरावर है। इसके परिणाम-स्वरूप चाग्रो साहव का सम्मान ग्रचानक उस जमाने के मुकावले कहीं ज्यादा वढ़ गया जव उनके लड़के ने पहली वार सरकारी परीक्षा पास की थी। नतीजा यह हुग्रा कि उन्होंने वाकी सव लोगों को हिकारत की नजर से देखना शुरू कर दिया ग्रौर जव कभी उनकी नजर ग्रा Q पर पड़ती तो जरा उपेक्षा का रुख ग्रपना लेते।

ग्रा Q भी इस निरंतर उपेक्षा के कारण बेहद ग्रसन्तुष्ट था, लेकिन ज्यों ही उसने चांदी के ग्राड़ू वाले बैज की वात सुनी तो फौरन समझ गया कि उसे उपेक्षित क्यों किया जा रहा है। किसी के यह कहने मात्र से कि वह क्रान्ति के पक्ष में चला गया है, वह क्रान्तिकारी नहीं वन जाता ;

---

* "स्वाधीनता पार्टी" का चीनी नाम "च यग्रो ताङ" है। लेकिन गांव वालों को "स्वाधीनता" शब्द की जानकारी न होने के कारण उन्होंने "च यग्रो" को "श यग्रो" में बदल दिया, जिसका मतलब परसिमन-तेल होता है।

** छिङ राजवंश (१६४४-१९११) की सर्वोच्च साहित्यिक उपाधि।

ग्रौर न ग्रपनी चुटिया लपेटकर सिर पर बांध लेना मात्र ही क्रान्तिकारी वनने के लिए काफी है। सबसे महत्वपूर्ण बात है क्रान्तिकारी पार्टी से सम्पर्क कायम करना। ग्रपनी पूरी जिन्दगी में उसका सिर्फ दो ही क्रान्तिकारियों से साक्षात्कार हुग्रा था। उनमें से एक शहर में ग्रपना सिर कटवा चुका था। सिर्फ दूसरा, यानी नकली विदेशी दरिन्दा, ही वाकी रह गया था। जब तक ग्रा Q तुरन्त नकली विदेशी दरिन्दे से बात नहीं कर लेता तब तक उसके लिए कोई रास्ता नहीं खुल सकेगा।

छ्येन परिवार के मकान का फाटक खुला था। ग्रा Q डरता-डरता ग्रन्दर जा पहुंचा। ग्रन्दर घुसते ही वह चौंक पड़ा, क्योंकि उसने देखा नकली विदेशी दरिन्दा ग्रांगन के बीचोंबीच ऊपर से नीचे तक काले कपड़े पहने, जो निस्संदेह विदेशी कपड़े थे, ग्रौर चांदी के ग्राड़ू वाला बैज लगाए खड़ा है। वह ग्रपने हाथ में छड़ी थामे हुए था, जिसका मजा ग्रा Q पहले ही चख चुका था। लगभग एक फुट लम्बे बाल, जो उसने फिर से बढ़ा लिए थे, कन्धों पर सन्त ल्यू* के बालों की तरह लटक रहे थे। उसके सामने चाग्रो पाए-येन ग्रौर ग्रन्य तीन व्यक्ति सीधे तन कर खड़े थे। सभी लोग नकली विदेशी दरिन्दे की बात बड़े ग्रादर-भाव के साथ सुन रहे थे।

ग्रा Q पंजे के बल चलता हुग्रा ग्रन्दर पहुंच गया ग्रौर चाग्रो पाए-येन के पीछे जा खड़ा हुग्रा। वह नकली विदेशी दरिन्दे का ग्रभिवादन करना चाहता था, किन्तु समझ में नहीं ग्रा रहा था कि उसे किस नाम से पुकारे। जाहिर था कि वह उसे "नकली विदेशी दरिन्दा" कहकर नहीं पुकार सकता था, ग्रौर न "विदेशी" ग्रथवा "क्रान्तिकारी" शब्द ही उपयुक्त जान पड़ता था। शायद इसलिए उसे लगा सम्बोधन का सबसे ग्रच्छा तरीका यह होगा कि उसे "मिस्टर विदेशी" कहा जाए।

---

* चीन की लोककथाग्रों का एक ग्रमर चरित्र, जिसका वर्णन हमेशा लम्बे बालों वाले व्यक्ति के रूप में किया जाता है।

लेकिन मिस्टर विदेशी की नजर अभी उस पर नहीं पड़ी थी। अपनी आंखें चढ़ाकर वह बड़े आवेश के साथ कह रहा था

"मैं इतना ज्यादा भावुक हूं कि जब हमारी मुलाकात हुई तो मैंने उनसे बार-बार कहा, 'हुङ साहब, इससे हमारा काम चल जाना चाहिए!' लेकिन उन्होंने हर बार जवाब दिया 'No!' – यह एक विदेशी शब्द है जिसका अर्थ तुम लोग नहीं समझ सकते। वरना हमें काफी पहले ही सफलता मिल चुकी होती। यह इस बात की मिसाल है कि वे कितना फूंक-फूंक कर कदम रखते हैं। उन्होंने मुझसे बार-बार हुपे प्रान्त में जाने को कहा, लेकिन मैं नहीं माना। जिले के छोटे से कस्बे में कौन काम करना चाहता है? ..."

"अ र् र् र् –" आ Q ने कुछ देर तक उसके रुकने का इन्तजार किया और तब बोलने के लिए साहस बटोरने की कोशिश की। लेकिन किसी वजह से वह अब भी उसे मिस्टर विदेशी के नाम से नहीं पुकार सका।

जो चार आदमी उसकी बात सुन रहे थे वे चौंक पड़े और आ Q की तरफ घूरने लगे। मिस्टर विदेशी ने भी पहली बार उसकी तरफ देखा।

"क्या है?"

"मैं..."

"निकल जाओ यहां से!"

"मैं शामिल होना चाहता हूं..."

"निकल जाओ यहां से।" मिस्टर विदेशी ने "मातमपुर्सी करने वाले की छड़ी" उठाते हुए कहा।

तब चाओ पाए-येन और दूसरे लोग भी चिल्लाकर बोल पड़े, "छ्येन साहब तुम्हें बाहर निकलने को कह रहे हैं। तुमने सुना नहीं?"

आ Q ने अपना सिर बचाने के लिए दोनों हाथ उठाकर उस पर रख लिए और बिना यह जाने कि वह क्या कर रहा है फाटक से बाहर निकल गया। इस बार मिस्टर विदेशी ने उसका पीछा नहीं किया। कोई पचास-साठ कदम दौड़ने के बाद आ Q धीरे-धीरे चलने लगा।

वह बेहद परेशान था, क्योंकि अगर मिस्टर विदेशी ने उसे क्रान्तिकारी न बनने दिया तो उसके सामने और कोई रास्ता नहीं रह जाएगा। भविष्य में वह हरगिज उम्मीद नहीं कर सकता था कि लोहे का सफेद टोप और सफेद कवच पहने सैनिक उसे बुलाने आएंगे। उसकी सारी आकांक्षा, उद्देश्य, आशा और भविष्य एक झटके मात्र से तहस-नहस हो गए थे। इस बात से कि यह खबर कहीं लोगों में न फैल जाए और वह नौजवान D और मुछन्दर वाङ जैसे लोगों के लिए उपहास का विषय न बन जाय, उसके मन में जो डर पैदा हो गया था वह उसकी परेशानी का केवल गौण कारण था।

इतना अधिक हतोत्साह वह पहले कभी नहीं हुआ था। यहां तक कि चुटिया लपेटकर सिर पर बांधना भी अब उसे व्यर्थ और हास्यास्पद मालूम हो रहा था। बदला लेने के लिए उसके मन में तेजी से विचार आया कि वह अपनी चुटिया तुरन्त खोल दे, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। शाम तक वह इधर-उधर घूमता रहा और जब उधारखाते में दो प्याली शराब पी तब कहीं उसका मन कुछ हल्का हुआ और वह एक बार फिर लोहे के सफेद टोपों और सफेद कवचों की झलक अपने कल्पना-चक्षु से देखने लगा।

एक दिन वह काफी रात गए तक घूमता रहा। जब मदिरालय बन्द होने का समय हो गया सिर्फ तभी संरक्षक-देवता के मन्दिर की तरफ लौटने लगा।

"धांय! धांय!"

अचानक उसने एक अजीब-सी आवाज सुनी, जो निश्चित रूप से पटाखों की आवाज नहीं थी। आ Q, जो हमेशा हलचल पसन्द करता था और जिसे दूसरों के मामलों में दखल देने में मजा आता था, अंधकार में उस आवाज को खोजने निकल पड़ा। उसे लगा उसके सामने किसी के पैरों की आहट आ रही है। वह सावधानी से कान लगाकर सुन रहा था कि एक आदमी उसके सामने से तेजी से भाग निकला। ज्यों ही आ Q ने उसे देखा, उसके पीछे भरपूर तेजी से दौड़ पड़ा। जब वह

ग्रादमी मुड़ा तो ग्रा Q भी मुड़ गया ग्रौर जब वह मुड़ने के वाद रुका तो ग्रा Q भी रुक गया। उसने देखा पीछे कोई नहीं है ग्रौर उस ग्रादमी को पहचान लिया। वह नौजवान D था।

"क्या बात है ?" ग्रा Q ने गुस्से से पूछा।

"चाग्रो . . . चाग्रो परिवार के घर चोरी हो गई है," नौजवान D ने हांफते हुए कहा।

ग्रा Q का दिल तेजी से धड़कने लगा। नौजवान D इतना कहकर चला गया। ग्रा Q दौड़ पड़ा। रास्ते में वह दो या तीन वार रुका, फिर ग्रागे बढ़ गया। लेकिन चूंकि वह किसी समय इस धन्धे में रह चुका था, इसलिए उसमें एक ग्रद्‌भुत साहस पैदा हो गया था। एक गली के नुक्कड़ से गुजरते हुए उसने कान लगाकर सुनने की कोशिश की। कल्पना में उसे जोर-जोर से चिल्लाने की ग्रावाज सुनाई दी। ध्यान से देखा तो उसे लगा कि वहुत से सैनिक लोहे का सफेद टोप ग्रौर सफेद कवच पहने सन्दूक ले जा रहे हैं, फरनीचर ले जा रहे हैं, यहां तक कि काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार की पत्नी का निङ्‌पो पलंग ले जा रहे हैं; लेकिन वे लोग उसे ज्यादा साफ-साफ नजर नहीं ग्रा रहे थे। वह नजदीक जाना चाहता था, लेकिन उसे लगा जैसे उसके पांव धरती में गड़ गए हों।

उस रात ग्राकाश में चन्द्रमा नहीं उगा था। वेइच्वाङ में गहन ग्रन्धकार था; चारों ग्रोर निस्तब्धता थी। सम्राट फ़ू शी* के शान्तिपूर्ण शासन-काल की तरह सारा वातावरण शान्त था। ग्रा Q वहां तब तक खड़ा रहा जब तक वह उकता नहीं गया। फिर भी उसे हर चीज पहले की ही तरह मालूम हो रही थी। दूर कहीं लोग तरह-तरह का सामान ले जाते हुए, सन्दूक ले जाते हुए, फरनीचर ले जाते हुए, काउन्टी परीक्षा के सफल उम्मीदवार की पत्नी का निङ्‌पो पलंग ले जाते हुए . . . ऐसा-ऐसा सामान ले जाते हुए जिसे देखकर उसे खुद ग्रपनी

---

* चीन की प्राचीनतम दन्तकथाग्रों में वर्णित एक सम्राट।

ग्रांखों पर यकीन नहीं हो रहा था, इधर-उधर ग्रा-जा रहे थे। लेकिन ग्रा Q ने उनके नजदीक न जाने का फैसला कर लिया ग्रौर मन्दिर में लौट गया।

संरक्षक-देवता के मन्दिर में ग्रौर भी ज्यादा ग्रंधेरा था। बड़ा फाटक बन्द करने के बाद वह टटोलता हुग्रा ग्रपने कमरे में जा पहुंचा। कुछ देर लेटने के बाद ही उसका मन शान्त हुग्रा ग्रौर वह सोच सका कि इस घटना का उस पर क्या ग्रसर पड़ सकता है। लोहे का सफेद टोप ग्रौर सफेद कवच धारण किए सैनिक ग्रा चुके थे, लेकिन वे लोग उससे मिलने नहीं ग्राए थे। वे लोग बहुत सी चीजें ले गए थे, लेकिन उसे ग्रपना हिस्सा नहीं मिल सका था – यह सब उस नकली विदेशी दरिन्दे का ही कसूर था, जिसने उसे विद्रोह में शामिल नहीं होने दिया था। ग्रन्यथा यह कैसे हो सकता था कि इस बार उसे ग्रपना हिस्सा न मिलता ?

ग्रा Q इसके बारे में जितना ज्यादा सोचता जाता, उसका गुस्सा भी उतना ही ज्यादा बढ़ता जाता। सोचते-सोचते उसका पारा सातवें ग्रासमान पर पहुंच गया। "तो यह विद्रोह मेरे लिए नहीं, सिर्फ तुम लोगों के लिए है ?" बड़ी कुढ़न के साथ सिर हिलाते हुए वह बुदबुदाया। "सत्यानाश हो तेरा ग्रो नकली विदेशी दरिन्दे के बच्चे – ग्रच्छा, तो तू बना रह विद्रोही ! जानता है विद्रोह की कीमत सिर कटाकर चुकानी पड़ती है ! मैं मुखबिर बन जाऊंगा ग्रौर तेरा सिर कटवाने के लिए – तेरा ग्रौर तेरे पूरे कुनबे का सिर कटवाने के लिए – तुझे शहर भिजवा कर रहूंगा ! . . . मार डालो ! मार डालो !"

ग्रध्याय नौ

शानदार पटाक्षेप

चाग्रो परिवार के घर चोरी होने पर वेइच्वाङ के ज्यादातर लोग बड़े खुश हुए, मगर वे सहम भी गए। ग्रा Q इसका ग्रपवाद न था।

लेकिन चार दिन वाद अचानक आधी रात के वक्त आ Q को घसीटकर शहर ले जाया गया। वह एक अंधेरी रात थी। एक सैनिक दस्ता, एक मिलिशिया दस्ता, एक पुलिस दस्ता और गुप्तचर विभाग के पांच आदमी चुपचाप वेइच्वाङ पहुंचे और संरक्षक-देवता के मन्दिर के फाटक के सामने मशीनगन लगाकर, उन्होंने अंधेरे में मन्दिर को घेर लिया। आ Q वाहर नहीं भागा। काफी समय तक मन्दिर में तिनका भी नहीं हिला। कप्तान बेचैन हो उठा और उसने बीस हजार तांबे के सिक्कों के इनाम का ऐलान कर दिया। सिर्फ तभी दो मिलिशियामैनों ने साहस वटोरकर दीवार फांदी और अन्दर घुस गए। उनके सहयोग से वाकी लोग भी तेजी से अन्दर घुस गए और आ Q को वाहर घसीट लाए। लेकिन जव तक उसे मन्दिर के वाहर मशीनगन के नजदीक नहीं लाया गया तव तक वह होश में नहीं आया।

शहर पहुंचने तक दोपहर हो चुकी थी। वे लोग आ Q को एक टूटे-फूटे सरकारी दफ्तर में ले गए जहां पांच-छै मोड़ पार करने के बाद उसे एक छोटे से कमरे में धकेल दिया गया। जैसे ही वह गिरता-पड़ता कमरे में पहुंचा, काठ के सींखचों का दरवाजा, जो कठघरे के दरवाजे जैसा प्रतीत हो रहा था, पीछे से फौरन वन्द हो गया। कमरे में वाकी तीन तरफ तीन नंगी दीवारें थीं और जब उसने सावधानी से देखा तो कमरे के एक कोने में उसे दो अन्य व्यक्ति नजर आए।

हालांकि आ Q को जरा बेचैनी महसूस हो रही थी, फिर भी वह निराश विलकुल नहीं हुआ, क्योंकि संरक्षक-देवता के मन्दिर वाला उसका कमरा, जहां वह सोता था, इस कमरे के मुकाबले किसी भी मायने में बेहतर नहीं था। अन्य दो व्यक्ति भी देहाती जान पड़ते थे। धीरे-धीरे उन्होंने आ Q से वातचीत शुरू कर दी। उनमें से एक ने वताया कि प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार उसके दादा के जमाने का लगान वसूल करने के लिए उसे परेशान कर रहा है। दूसरा व्यक्ति यह नहीं जानता था कि उसे यहां क्यों लाया गया है। जब उन्होंने आ Q

से उसके बारे में पूछा तो उसने दोटूक कह डाला, "क्योंकि मैं विद्रोह करना चाहता था।"

उस दिन तीसरे पहर उसे काठ के सींखचों वाले दरवाजे से बाहर घसीटकर एक बड़े कमरे में ले जाया गया। कमरे के दूसरे किनारे पर एक बूढ़ा ग्रादमी बैठा था जिसकी चांद घुटी हुई थी। ग्रा Q ने पहले तो उसे कोई भिक्षु समझा, लेकिन जब देखा कि सैनिक उसकी रक्षा कर रहे हैं ग्रौर लम्बे कोट वाले कोई एक दर्जन व्यक्ति उसके दोनों तरफ खड़े हैं, जिनमें से कुछ लोगों की चांद इसी बूढ़े ग्रादमी की तरह घुटी हुई है, ग्रौर कुछ लोग नकली विदेशी दरिन्दे की ही तरह ग्रपने बाल लगभग एक फुट लम्बे बढ़ाकर उन्हें ग्रपने कन्धों तक लटकाए हुए हैं, ग्रौर सबके सब गुस्से से लाल-पीले होकर ग्रत्यन्त गम्भीर मुद्रा में उसकी ग्रोर घूर रहे हैं, तो वह समझ गया कि ग्रवश्य ही यह कोई महत्वपूर्ण व्यक्ति है। उसके घुटने खुद-ब-खुद मुड़ते गए ग्रौर वह सिकुड़कर जमीन पर घुटनों के बल बैठ गया।

"खड़े होकर बोलो! घुटने टेकने की जरूरत नहीं!" लम्बे कोट वाले सभी व्यक्ति जोर से बोल पड़े।

हालांकि ग्रा Q उनकी बात समझ गया था, फिर भी वह खड़े होने में ग्रपने को ग्रसमर्थ ग्रनुभव कर रहा था : उसका शरीर ग्रनायास ही सिकुड़ गया ग्रौर ग्रन्त में वह ग्रच्छी तरह घुटनों के बल बैठ गया।

"गुलाम कहीं का! ..." लम्बे कोट वाले व्यक्तियों ने तिरस्कार के साथ कहा। लेकिन उन्होंने ग्रा Q से उठने का ग्राग्रह नहीं किया।

"ग्रगर सच-सच बता दोगे तो हल्की सजा मिलेगी," घुटे सिर वाले बूढ़े ग्रादमी ने ग्रा Q की ग्रांखों में ग्रांखें डालकर धीमे किन्तु स्पष्ट स्वर में कहा। "मुझे सब कुछ मालूम हो चुका है। ग्रगर कबूल कर लोगे तो छोड़ दिए जाग्रोगे।"

"कबूल कर लो!" लम्बे कोट वाले व्यक्तियों ने जोर से कहा।

"बात यह है कि मैं... खुद ही ग्राना... चाहता था..." ग्रा Q

ने एक क्षण के लिए ग्रवाक् रहने के बाद लड़खड़ाती जबान से उत्तर दिया।

"ग्रगर ऐसी बात थी तो तुम ग्रा क्यों नहीं गए?" बूढ़े ग्रादमी ने बड़ी नरमी से कहा।

"नकली विदेशी दरिन्दे ने ग्राने ही नहीं दिया!"

"बकवास बन्द करो! यह सब चर्चा ग्रब फिज़ूल है। तुम्हारे साथी कहां हैं?"

"क्या कहा? . . ."

"जिन ग्रादमियों ने उस रात चाग्रो परिवार के घर चोरी की वे लोग कहां हैं?"

"वे लोग मुझे ग्रपने साथ नहीं ले गए थे। उन्होंने चोरी खुद ही की थी।" यह कहते-कहते ग्रा Q कुछ क्रोधित हो उठा।

"वे लोग कहां हैं? ग्रगर बता दोगे तो तुम्हें छोड़ दिया जाएगा", बूढ़े ग्रादमी ने ग्रौर ग्रधिक नरमी से दोहराया।

"मुझे नहीं मालूम . . . वे लोग मुझे ग्रपने साथ नहीं ले गए थे। . . ."

इसके बाद बूढ़े ग्रादमी के इशारे पर ग्रा Q को घसीटकर काठ के सींखचों वाले दरवाजे के भीतर धकेल दिया गया। ग्रगले दिन सुबह उसे एक बार फिर घसीटकर बाहर निकाला गया।

बड़े कमरे में हर चीज पहले जैसी ही थी। घुटे सिर वाला बूढ़ा ग्रादमी ग्रब भी वहीं बैठा था ग्रौर ग्रा Q एक वार फिर पहले की ही तरह घुटनों के बल बैठ गया।

"तुम्हें कुछ ग्रौर कहना है?" बूढ़े ग्रादमी ने बड़ी नरमी से पूछा।

ग्रा Q ने सोचा ग्रौर फैसला कर लिया कि उसे कुछ नहीं कहना। इसलिए उसने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।"

इसके बाद लम्बे कोट वाला एक ग्रादमी कागज ग्रौर कूंची लेकर ग्रा Q के पास जा पहुंचा। उसने कूंची ग्रा Q के हाथ में थमाने की कोशिश की। ग्रा Q डर के मारे लगभग कांपने लगा, क्योंकि उसकी जिन्दगी में यह पहला मौका था जबकि उसे लिखने के काम ग्राने

वाली कूंची हाथ में उठानी पड़ रही थी। अभी वह सोच ही रहा था कि कूंची कैसे थामी जाए, उस आदमी ने कागज पर एक जगह उंगली रखते हुए उससे दस्तखत करने को कहा।

"मैं – मैं – लिखना नहीं जानता," आ Q ने कहा। वह शर्म से गड़ा जा रहा था। कूंची थामे उसका हाथ कांप रहा था।

"अगर ऐसी बात है तो एक गोल दायरा बना दो। यह तो तुम्हारे लिए आसान है!"

आ Q ने एक गोल दायरा बनाने की कोशिश की। लेकिन जिस हाथ से उसने कूंची थामी हुई थी वह कांप रहा था। इसलिए उस आदमी ने आ Q के लिए कागज जमीन पर फैला दिया। आ Q झुका और उसने बड़े जतन से, मानो इस पर उसके जीवन का अस्तित्व ही निर्भर हो, एक दायरा बना दिया। इस डर से कि कहीं लोग उसकी हंसी न उड़ाएं, उसने दायरे को गोल बनाने की कोशिश की। लेकिन वह जालिम कूंची न सिर्फ बहुत भारी थी बल्कि उसके आदेश का पालन भी नहीं कर रही थी। इसके विपरीत वह इधर-उधर डगमगाती हुई चल रही थी। और जब दायरा पूरा होने ही जा रहा था तो वह फिर एक बार डगमगा गई, जिससे तरबूज के बीज जैसा आकार बन गया।

चूंकि आ Q एक गोल दायरा नहीं बना पाया, इसलिए वह शर्म के मारे गड़ा जा रहा था। उस आदमी ने बिना कुछ कहे कागज और कूंची को उसके हाथ से ले लिया। इसके बाद कई लोगों ने उसे तीसरी बार घसीटकर काठ के सींखचों वाले दरवाजे के भीतर धकेल दिया।

इस बार उसे ज्यादा परेशानी नहीं हुई। उसने सोचा कि इस दुनिया में हर आदमी को किसी न किसी समय कैदखाने के अन्दर या बाहर अवश्य जाना पड़ता है और कागज पर दायरे अवश्य बनाने पड़ते हैं, चूंकि उसका बनाया हुआ दायरा गोल नहीं था इसलिए आ Q को ऐसा लग रहा था मानो उसकी प्रतिष्ठा पर धब्बा लग गया हो। लेकिन तभी उसने यह सोचकर अपने मन को तसल्ली दी कि, "केवल मूर्ख लोग

ही मुकम्मिल दायरा वना सकते हैं।" मन में यही विचार लिए वह सो गया।

मगर उस रात प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सो नहीं सका, क्योंकि कप्तान से उसका झगड़ा हो गया था। सफल उम्मीदवार इस वात पर जोर दे रहा था कि सवसे ज्यादा महत्व की वात है चुराए गए माल को वरामद करना, जवकि कप्तान कह रहा था कि सवसे ज्यादा महत्व की वात है लोगों के सामने मिसाल पेश करना। कुछ समय से कप्तान प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार के साथ वड़ा तिरस्कारपूर्ण वरताव कर रहा था। इसलिए मेज पर जोर से मुक्का मारते हुए उसने कहा था, "एक को सजा दो ग्रौर सौ को डराग्रो! मालूम है तुम्हें, मुझे क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य बने ग्रभी बीस दिन भी नहीं हुए कि लूटमार की एक दर्जन से ज्यादा वारदातें हो चुकी हैं ग्रौर इनमें से एक भी मामले का सुराग नहीं लग पाया। जरा सोचो तो, इसका मेरी प्रतिष्ठा पर कितना बुरा ग्रसर पड़ रहा है। वड़ी मुश्किल से यह मामला सुलझ सका है, लेकिन तुम सिद्धान्त वघारने चले ग्राए हो। इससे काम नहीं चलेगा। यह मेरा मामला है।"

प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार बेहद क्षुब्ध हो उठा। लेकिन ग्रपनी बात पर ग्रडिग रहते हुए उसने कहा कि ग्रगर चोरी का माल बरामद नहीं हुग्रा तो वह सहायक नागरिक प्रशासक के पद से तुरन्त इस्तीफा दे देगा। "जो जी में ग्राए करो!" कप्तान ने उत्तर दिया।

इस घटना के परिणामस्वरूप प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार उस रात सो नहीं सका। लेकिन मजे की वात यह है कि ग्रगले दिन सुवह उसने इस्तीफा नहीं दिया।

जिस रात प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार सो नहीं सका था उसके ग्रगले दिन सुवह ग्रा Q को घसीटकर काठ के सींखचों वाले दरवाजे के वाहर फिर लाया गया। जव उसे वड़े कमरे में ले जाया गया तो घुटे हुए सिर वाला बूढ़ा ग्रादमी पहले की ही तरह वहां बैठा था। ग्रा Q भी पहले की ही तरह घुटनों के वल बैठ गया।

बूढ़े ग्रादमी ने बड़ी नरमी के साथ उससे पूछा, "तुम्हें कुछ ग्रौर कहना है?"

ग्रा Q ने सोचा ग्रौर फैसला कर लिया कि उसे कुछ नहीं कहना। इसलिए उसने उत्तर दिया, "कुछ नहीं।"

लम्बे कोट ग्रौर छोटी जाकिट वाले कई लोगों ने विदेशी कपड़े की बनी एक सफेद बनियान उसे पहना दी। इस पर काले रंग के ग्रक्षर ग्रंकित थे। ग्रा Q को कुछ घबराहट महसूस हुई, क्योंकि यह पोशाक बहुत कुछ शोक मनाने वालों की सी जान पड़ती थी, ग्रौर शोक मनाने वालों की पोशाक पहनना ग्रपशकुन माना जाता है। साथ ही उसके दोनों हाथ पीठ पर बंधे हुए थे। वे लोग उसे सरकारी दफ्तर से बाहर घसीट ले गए।

ग्रा Q को एक खुले छकड़े में बैठा दिया गया ग्रौर छोटी जाकिट वाले कई लोग उसके साथ बैठ गए। छकड़ा तुरन्त चल पड़ा। छकड़े के सामने बहुत से सैनिक व मिलिशियामैन चल रहे थे, जिनके कन्धों पर विदेशी राइफलें लटक रही थीं ; दोनों तरफ स्तब्ध तमाशबीनों की भीड़ चल रही थी। पीछे की तरफ क्या था, यह ग्रा Q को नजर नहीं ग्रा रहा था। ग्रचानक उसे ख्याल ग्राया, "क्या ये लोग मेरी गर्दन उड़ाने तो नहीं ले जा रहे?" उसका दिल दहल उठा, ग्रांखों के सामने ग्रंधेरा छा गया, कानों में घूं-घूं की ग्रावाज गूंजने लगी ग्रौर उसे लगा मानो बेहोश हो जाएगा। मगर वह बेहोश नहीं हुग्रा। हालांकि वह कुछ देर तक भयभीत रहा, लेकिन बाद में शान्त हो गया। उसने सोचा कि इस दुनिया में शायद हर ग्रादमी को किसी न किसी समय ग्रपना सिर ग्रवश्य कटवाना पड़ता है।

इस सड़क से वह ग्रच्छी तरह परिचित था। मगर उसे बड़ा ताज्जुब हो रहा था : ये लोग उसे कत्लगाह की तरफ क्यों नहीं ले जा रहे? यह बात वह नहीं जानता था कि लोगों के सामने मिसाल पेश करने के लिए उसे पूरे शहर में घुमाया जा रहा है। ग्रगर उसे मालूम भी हो जाता तो भी स्थिति में कोई परिवर्तन नहीं होने वाला था ; सिर्फ वह सोचने

लगता कि इस दुनिया में शायद हर आदमी को किसी न किसी दिन लोगों के सामने अवश्य मिसाल बनकर पेश होना पड़ता है।

और जब वे लोग कत्लगाह की तरफ मुड़े, तब कहीं उसे मालूम हुआ कि उसका सिर कटने वाला है। जो लोग चींटियों की तरह उसके इर्दगिर्द जमा हो गए थे उनकी तरफ आ Q ने बड़ी दुखभरी नजरों से देखा। सड़क के किनारे जमा लोगों की भीड़ में सहसा उसकी नजर आमा ऊ पर पड़ी। अच्छा, तो इसीलिए इतने दिनों तक वह नहीं दिखाई दी : वह शहर में काम करने लगी थी।

अचानक आ Q को अपने बुझे हुए उत्साह पर लज्जा अनुभव होने लगी, क्योंकि उसने आपेरा की एक भी पंक्ति नहीं गाई थी। उसके मन में अनेक विचार घूम गए : "नौजवान विधवा अपने पति की कब्र पर" ज्यादा वीररसपूर्ण नहीं है। "नाग और बाघ की लड़ाई" के ये शब्द कि "है अफसोस मुझे मैंने हत्या कर डाली" बिलकुल निम्न स्तर के हैं। "हड्डी-पसली चूर तुम्हारी, लोहे की छड़ से कर दूंगा" सबसे अच्छा रहेगा। लेकिन जब उसने अपने हाथ ऊपर उठाने की कोशिश की तो याद आया कि उसके दोनों हाथ तो बंधे हुए हैं। इसलिए उसने "हड्डी-पसली चूर तुम्हारी, . . ." भी नहीं गाया।

"बीस वर्ष बाद में एक अन्य . . ."* क्षुब्ध आ Q के मुंह से इस कथन की आधी ही पंक्ति निकली, जिसे उसने पहले कभी याद कर लिया था किन्तु इस्तेमाल कभी नहीं किया था। "बहुत अच्छे ! ! !" भीड़ की आवाज भेड़िए की गुर्राहट के समान गूंज उठी।

छकड़ा लगातार आगे बढ़ता जा रहा था। इस शोरगुल के बीच आ Q की आंखें आमा ऊ को खोज रही थीं, लेकिन मालूम होता था कि उसने आ Q को नहीं देखा, क्योंकि वह सैनिकों के कन्धों पर लटको विदेशी राइफलों पर नजर गड़ाए हुए थी।

---

* "बीस वर्ष बाद मैं एक अन्य हट्टा-कट्टा नौजवान बन जाऊंगा" – ये पंक्तियां अक्सर अपराधी मौत की सजा पाने के पहले मृत्यु को तुच्छ समझने के लिए कहा करते थे।

ग्रा Q ने शोरगुल मचाते जन-समूह पर फिर एक बार नजर डाली।

उस समय उसके मन में फिर एक बार ग्रनेक विचार घूम गए। ग्राज से चार वर्ष पहले, पहाड़ की तलहटी में उसका सामना एक भूखे भेड़िये से हो गया था। भेड़िया उसके पीछे लग गया था ग्रौर उसे खा जाना चाहता था। ग्रा Q को लगा कि डर के मारे उसके प्राण ही निकल जाएंगे। लेकिन भाग्यवश उसके हाथ में एक कुल्हाड़ी थी, जिससे उसके ग्रन्दर वेइच्वाङ लौटने की हिम्मत ग्रा गई थी। मगर उस भेड़िये की ग्रांखों को वह कभी नहीं भूल सका था। खूंखार होते हुए भी वे डरी-सहमी हुई, दो प्रकाश-पुंजों की तरह चमक रही थीं, मानो दूर से ही उसे बेध डालेंगी। ग्राज उसे उस भेड़िये से भी ज्यादा खूंखार ग्रांखें नजर ग्रा रही हैं: बुझी हुई किन्तु मर्मभेदी ग्रांखें, जो उसके शब्दों को निगल जाने के बाद उसके हाड़-मांस से भी कुछ ग्रधिक चीजें निगल जाने को तत्पर थीं। ग्रौर ये ग्रांखें एक निश्चित फासले पर बराबर उसका पीछा कर रही थीं।

लगता था कि ये ग्रांखें एक ही बिन्दु पर केन्द्रित होकर उसकी ग्रात्मा को बेध रही हैं।

"बचाग्रो! बचाग्रो!"

लेकिन ये शब्द ग्रा Q के मुंह से हरगिज नहीं निकले। उसकी ग्रांखों के सामने ग्रंधेरा छा गया, कानों में घूं-घूं की ग्रावाज गूंजने लगी ग्रौर उसे लगा मानो उसका सारा शरीर खाक की तरह बिखर गया हो।

उस चोरी के बाद सबसे ज्यादा ग्रसर प्रान्तीय परीक्षा में सफल उम्मीदवार पर पड़ा, क्योंकि चोरी का माल बरामद नहीं हो पाया। उसका पूरा परिवार दुख के सागर में डूब गया। दूसरे नम्बर पर सबसे ज्यादा ग्रसर चाग्रो परिवार पर पड़ा; कारण, जब काउन्टी परीक्षा में सफल उम्मीदवार चोरी की रपट लिखाने शहर गया तो कुछ बुरे क्रान्तिकारियों ने न सिर्फ उसकी चुटिया ही काट डाली बल्कि उससे बीस हजार तांबे के सिक्के भी वसूल कर लिए। परिणामस्वरूप पूरा चाग्रो परिवार भी दुख के सागर में डूब गया। उस दिन के बाद से

उन लोगों में महज एक सत्ताच्युत राजवंश के उत्तराधिकारियों की सी शान वाकी रह गई।

इस घटना की चर्चा करते समय वेइच्वाङ में किसी ने कोई सवाल नहीं उठाया। कुदरती तौर पर सभी लोग इस वात के बारे में एकराय थे कि ग्रा Q एक बुरा ग्रादमी था ; इसका सबूत यह था कि उसे गोली मार दी गई थी। कारण, ग्रगर वह एक बुरा ग्रादमी न होता तो भला उसे गोली क्यों मार दी जाती? लेकिन शहर के लोगों की राय इसके पक्ष में नहीं थी। ज्यादातर लोग इसलिए ग्रसंतुष्ट थे क्योंकि गोली मारने का दृश्य उतना शानदार नहीं होता जितना कि सिर काटने का ; ग्रौर वह कितना हास्यास्पद ग्रपराधी था जो ग्रापेरा की एक भी पंक्ति गाए विना ही इतने गली-कूचों से गुजर गया था। वे लोग व्यर्थ ही उसके पीछे-पीछे गए थे।

दिसम्बर १९२१